लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–37

तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियाँ

भाग 2

इगनाज़ कुनौज़

1913

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2023

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-37
Book Title: Turki Ki Pariyaon Ki Chauvalis Kahaniyan-2 (Fourty-four Turkish Fairy Tales-2)

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2022
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Turkey

विंडसर, कैनेडा

2023

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियॉ–2 7

22 पेशैन्स पत्थर और पेशैन्स चाकू 9

23 ड्रैगन राजकुमार और सौतेली मॉ 19

24 जादुई शीशा 34

25 कुँए का भूत 45

26 ज्योतिषी 54

27 कंधार के बादशाह के बेटी 60

28 शाह मेराम और सुलतान सादे 77

29 जादूगर और उसका शिष्य 91

30 तीस परियों का बादशाह 98

31 धोखा देने वाला और चोर 110

32 सॉप परी और जादुई शीशा 122

33 छोटी हायसिन्थ का घर 136

34 राजकुमार अहमद 147

35 जिगर 167

36 ज्योतिषी 172

37 बहन और भाई 182

38 शाह जूसुफ़ 193

39 काला ड्रैगन और लाल ड्रैगन 205

40 मजून 222

41 अनाथ राजकुमारी 229

42 सुन्दर हलवा लड़की 241

43 ज्योतिष विद्या 252

44 रंग रंगीले 264

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में अब तक 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। अब तक इस सीरीज़ में **35** पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। यह एक मज़ेदार संग्रह है। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2023

तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियॉ–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। सब महाद्वीपों में अपने अपने देश हैं पर इस तुर्की देश की स्थिति बड़ी अजीब सी है। यह दो महाद्वीपों में आता है। इसका बहुत थोड़ा सा हिस्सा पूर्वी यूरोप में है और काफी बड़ा हिस्सा पश्चिमी एशिया में है। क्योंकि इसका अधिक हिस्सा एशिया में है तो इसे हम एशिया में ही गिनते हैं।

इसमें पूरी पुस्तक की कहानियॉ दी हुई हैं। इसके लेखक का कहना है कि ये कहानियॉ उसने अपने आप ही इकट्ठी की हैं किसी पुस्तक से नहीं ली हैं क्योंकि तुर्की कोई बहुत ही साहित्यिक देश नहीं है और ऐसी कोई पुस्तक भी यहॉ नहीं है जहॉ से इन्हें लिया जा सके। इससे ऐसा लगता है कि यह वहॉ की परियों की कथाओं पर यह पहली पुस्तक है। ये कहानियॉ वहॉ इस्तानबूल में रोज ही कही सुनी जाती हैं। स्त्रियॉ इन्हें तन्दूर के पास बैठ कर अपने मित्रों और बच्चों को सुनाती हैं।

लेखक का दावा है कि ये कहानियॉ किसी भी कहानी जैसी तो बिल्कुल भी नहीं हैं पर मिलती जुलती भी नहीं हैं। कुछ इनमें से यूरोप के स्रोतों भारतीय स्रोतों और "अरेबियन नाइट्स" से ली गयी हैं। ये मुस्लिम धर्म की हैं और इनके चरित्र मुसलमान हैं। इनके शरीर से लिपटे हुए काफ्तान सिरों की पगड़ी और पॉवों के स्लिपर सब पूर्वीय लगते हैं।

शाहज़ादे उनके बेटे सुलताना या तो अकेले हैं या फिर तीन और सात की संख्या में बहिन और भाई हैं। देवों के अलावा परियॉ फाख्ता की शक्ल में आखिरी पल में आ कर सहायता कर जाती हैं। जब कोई बाहर यात्रा पर जाता है तो वह अच्छी आत्माओं द्वारा सहायता प्राप्त करता है और बुरी आत्माऐं उसको नुकसान पहुॅचाती हैं। ये जानवर फूल पेड़ आदि के रूप में प्रगट होती हैं।

तुर्की के लोग परियों की दुनियॉ में तीन रास्तों द्वारा पहुॅच सकते हैं – या तो पैगैसस की पीठ पर बैठ कर या फिर परियों के द्वारा। स्वर्ग जाना हो तो अंका चिड़िया की सहायता से जा सकते हैं और नीचे जाना हो तो देव की सहायता से जा सकते हैं। रास्ते में बहुत सारी सराय और दूकानें हैं फूलों के बागीचे हैं।

सब लोक कथाओं की तरह से ये कहानियॉ भी बच्चों के लिये नहीं हैं हालॉकि बच्चे ही इनकी ओर सबसे अधिक आकर्षित होते हैं और बच्चों के बाद स्त्रियॉ। ये कहानियॉ एक हजार एक रातों की कहानियॉ नहीं बल्कि एक हजार एक दिनों की कहानियॉ हैं। ये सब कहानियॉ एक पुस्तक से ली गयी हैं जो **1913** में प्रकाशित की गयी थी।[2]

1913 की भूमिका से

यह पुस्तक तुर्की की लोक कथाओं से ली गयी है। "तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियॉ" बहुत दिनों से प्रकाशन में नहीं है। इसका एक कारण यह है कि इसके प्रकाशन का स्तर बहुत ऊॅचा था। इसका साइज़ साधारण साइज़ से बड़ा

---

[22] Forty-four Turkey Fairy Tales. By Ignacz Kunos.
Taken from the site : https://www.sacred-texts.com/asia/ftft/index.htm
These are availabale on the following site also :
https://ia800702.us.archive.org/3/items/fortyfourturkish001862/fortyfourturkish001862.pdf

था। इसके कागज का माप एकसा रखने के लिये इसका सोने का ढॉचा था – लगभग 10 इंच ऊॅचा। इसका हर पृष्ठ दो रंग में छापा गया था और इसमें चार रंग के 16 चित्र थे जो हाथ से चिपकाये गये थे। इसकी छोटी कापी का मूल्य तीन अंकों की संख्या तक जाता था।

22 पेशैन्स पत्थर और पेशैन्स चाकू[3]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब स्त्री थी जिसके एक बेटी थी। जब मॉ कपड़े धोने के लिये बाहर जाती तो बेटी घर में रहती और कसीदाकारी करती।

एक दिन जब वह लड़की खिड़की के पास बैठी काम कर रही थी तो एक चिड़िया उसके पास आयी और बोली — "ओह मेरी प्यारी बेटी। तुम्हारी किस्मत तो एक मरे हुए आदमी के साथ लिखी हुई है।" और यह कह कर तुरन्त ही वहॉ से उड़ गयी।

यह सुन कर लड़की बेचारी बहुत परेशान हुई। जब शाम को उसकी मॉ घर लौटी तो उसने जो कुछ भी चिड़िया ने उससे कहा था वह बताया। मॉ ने उसे सलाह दी कि जब वह काम किया करे तो घर के खिड़की दरवाजा बन्द कर के रखा करे।

अगले दिन जब उसकी मॉ चली गयी तो उसने अपने घर के खिड़की दरवाजा सब बन्द कर लिये और अपना काम करने बैठ गयी। कि तभी वही चिड़िया न जाने कहॉ से आयी और उसकी कसीदाकारी करने की मेज पर बैठ गयी।

---

[3] The Patience Stone and the Patience Knife. Tale No 22
In Persian folklore, Syngue Sabour is the name of a magical black stone, a patience stone, which absorbs the plight of those who confide in it. It is believed that the day it explodes, after having received too much hardship and pain, will be the day of the Apocalypse.

उसने फिर कहा — "ओह मेरी प्यारी बेटी। तुम्हारी किस्मत तो एक मरे हुए आदमी के साथ लिखी हुई है।" और यह कह कर तुरन्त ही वहॉ से उड़ गयी।

अबकी बार तो लड़की पहले से भी ज़्यादा डर गयी। जब उसकी मॉ आयी तब उसने उसे बताया। मॉ ने कहा कि कल तुम मेरे जाने के बाद खिड़की दरवाजा बन्द कर लेना और आलमारी के अन्दर वहॉ मोमबत्ती की रोशनी में बैठ कर अपना काम करना।

अगले दिन जैसे ही लड़की की मॉ गयी उसने खिड़की दरवाजा बन्द किया और आलमारी के अन्दर मोमबत्ती की रोशनी में बैठ कर अपना काम करने लगी। उसने अभी कुछ ही टॉके लगाये होंगे कि लो वह चिड़िया तो वहॉ भी आ गयी और बोली — "ओह मेरी प्यारी बेटी। तुम्हारी किस्मत तो एक मरे हुए आदमी के साथ लिखी हुई है।" और यह कह कर तुरन्त ही वहॉ से उड़ गयी।

बेचारी लड़की उस दिन इतनी परेशान हुई कि वह उस दिन सारा दिन कोई काम नहीं कर सकी। बस वह सारा दिन उस चिड़िया के भेद भरे शब्दों पर ही सोचती रह गयी। यहॉ तक कि जब उसकी मॉ शाम को घर वापस आयी और उसने उस दिन का हाल सुना तो वह खुद भी बहुत परेशान रही।

अगले दिन मॉ ने खुद ही घर पर रहने का निश्चय किया ताकि वह उस अभागी चिड़िया को खुद ही देख सके। पर वह चिड़िया फिर कभी नहीं आयी।

उसके बाद मॉ और बेटी किसी ने भी इस आशा में घर नहीं छोड़ा कि वह चिड़िया पता नहीं फिर कब आ जाये। एक दिन वहॉ कुछ पड़ोस की लड़कियॉ आ गयीं और उन्होंने लड़की की मॉ से जिद की कि वह अपनी बेटी को उनके साथ आनन्द करने के लिये भेज दे ताकि वह अपना दुख भूल जाये।

मॉ अपनी बेटी को बाहर भेजने से डरती थी और एक पल के लिये भी अपनी ऑखों से ओझल नहीं होने देना चाहती थी सो उसने मना कर दिया पर उन्होंने उससे वायदा किया कि वे खुद भी उसे अपनी ऑखों से ओझल नहीं होने देंगी तो वह राजी हो गयी।

सब लड़कियॉ घास के मैदान में चली गयीं। वहॉ वे गाती रही नाचती रहीं। गाते नाचते उन्हें शाम हो गयी। लौटते समय वे अपनी प्यास बुझाने के लिये एक नाले पर रुकीं। वह लड़की भी उसी नाले पर पानी पीने गयी।

जब वह पानी पी रही थी तो जादू के ज़ोर से उसके और दूसरी लड़कियों के बीच में एक दीवार खड़ी हो गयी। अब उसकी सहेलियॉ उसे नहीं देख सकती थीं।

ऐसी दीवार तो कभी किसी ने देखी नहीं होगी। वह इतनी ऊॅची थी कि उसका ऊपर का सिरा ही दिखायी नहीं दे रहा था। और वह इतनी मोटी थी कि उसे कोई पार भी नहीं कर सकता था। सारी लड़कियॉ बहुत डर गयीं। वे सुबकने लगीं रोने लगीं और चारों

तरफ भागने लगीं कि अब उस लड़की का और उसकी मॉ का क्या होगा।

एक बोली — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि हमें उसे अपने साथ नहीं लाना चाहिये।"

दूसरी बोली — "अब हम उसकी मॉ से जा कर क्या कहेंगे। हम उन्हें क्या मुँह दिखायेंगे।"

तीसरी बोली — "यह सब तेरी गलती है तूने ही तो कहा था उसे अपने साथ ले चलने के लिये।"

इस तरह से वे आपस में लड़ती रहीं और मजबूर सी उस बड़ी दीवार को देखती रहीं।

उधर उस लड़की की मॉ अपने दरवाजे पर खड़ी बेचैनी से अपनी बेटी का इन्तजार कर रही थी। तभी उसने देखा कि लड़कियॉ ज़ोर ज़ोर से रोती हुई चली आ रही हैं। उनकी हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी कि वे उस लड़की की मॉ से उसकी बेटी के बारे में कुछ कह सकें।

उनके कुछ न कहने से वह कुछ कुछ समझ गयी और दीवार की तरफ दौड़ी और फिर तो वहॉ का सारा वातावरण रोने की आवाज से गूँज उठा। एक तरफ से मॉ की आवाज से और दूसरी तरफ बेटी की आवाज से।

रोते रोते लड़की थक गयी सो वह सो गयी। जब अगले दिन वह सो कर उठी तो उसने दीवार में एक दरवाजा देखा। दरवाजे में घुसी तो वहॉ तो एक बहुत बड़ा महल था।

ऐसे महल की तो उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वह उसके पहले कमरे में चली गयी तो वहॉ उसे एक दीवार पर **40** चाभियॉ लटकी हुई दिखायी दीं। उसने वे सब चाभियॉ उतार लीं और एक एक कर के ताला खोलती चली गयी।

उसके एक कमरे में चॉदी थी दूसरे में सोना था तीसरे में हीरे थे चौथे में पन्ने थे। उसके हर कमरे अलग अलग तरह के कीमती पत्थर भरे हुए थे। उनकी रोशनी देखते देखते उसकी ऑखें थक गयीं।

जब वह **40**वें कमरे में आयी तो वहॉ एक अरथी पर बहुत सुन्दर बे[4] लेटा हुआ था। उसके पास ही मोती का एक पंखा रखा हुआ था। उसकी छाती पर एक कागज रखा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था "जो कोई भी मुझे **40** दिन तक मुझे पंखा करेगा और मेरे लिये प्रार्थना करेगा तो उसे मुझमें अपनी किस्मत मिलेगी।"

अब लड़की को याद आयी उस चिड़िया की जो यह कहा करती थी — "ओह मेरी प्यारी बेटी। तुम्हारी किस्मत तो एक मरे हुए आदमी के साथ लिखी हुई है।"

[4] Bey or Bay is a respectable word as "Sir" in Turkish. Its feminine is "Beygam" or "Begam"

यह पढ़ कर वह उसके पास बैठ गयी। उसने वह मोती का पंखा उठाया और उससे बे के शरीर को दिन रात पंखा झलने लगी।

आखिरी दिन यानी चालीसवें दिन उसने खिड़की के बाहर झॉका तो उस खिड़की के बाहर एक अरब लड़की दिखायी दी। उसने उसे बुलाया और उससे पंखा झलना जारी रखने के लिये कहा और वह खुद नहाने धोने और कमरा ठीक करने के लिये चली गयी।

अरब लड़की ने बे की छाती पर रखा कागज देखा तो उसे पढ़ा। जब वह गोरी लड़की वहॉ नहीं थी बे ने अपनी ऑखें खोल दीं। उसने एक अरब लड़की को अपने सामने देखा तो उसे गले से लगा लिया और उसे अपनी पत्नी कह कर पुकारा।

बेचारी गोरी लड़की तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। जब वह कमरे में लौटी और अरब लड़की ने उससे कहा — "मैं सुलतान की बेटी इस नग्न अवस्था में जाने में शर्माती नहीं हूॅ हालॉकि यह मेरे सामने इतने सुन्दर कपड़े और गहने पहन कर खड़ी हुई है।"

कह कर उसने गोरी लड़की को उस कमरे से बाहर निकाल दिया और रसोईघर में जा कर अपना काम देखने के लिये कहा।

बे को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ उसकी समझ में नहीं आया कि इसका क्या मतलब था पर अभी वह कुछ नहीं कह सकता था। अभी तो अरब लड़की उसकी पत्नी थी और दूसरी रसोइया।

बेराम[5] का उत्सव आ रहा था तो रीति रिवाज के अनुसार बे अपने नौकरों को भेंट देना चाहता था। उसने अरब लड़की से पूछा कि उसे क्या भेंट चाहिये। उसने कहा कि उसे एक ऐसी पोशाक चाहिये जो न कैंची से कटी हो और न सुई से सिली हुई हो।

उसके बाद बे रसोईघर में गया और गोरी लड़की से पूछा कि उसे क्या भेंट चाहिये। उसने कहा मुझे पीला पेशैन्स पत्थर और कत्थई पेशैन्स चाकू चाहिये। मेहरबानी कर के मुझे दोनों ला दीजिये।

बे वहॉ से चला गया। उसे ऐसी पोशाक तो मिल गयी जैसी कि अरब लड़की को चाहिये थी पर उसे पीला पेशैन्स पत्थर और कत्थई पेशैन्स चाकू कहीं नहीं मिला। अगर वह उनको नहीं लाना चाहता तो वह उनके बिना लौट नहीं सकता था सो वह एक जहाज़ में चढ़ गया।

पर जहाज़ कुछ ही दूर चला था कि रुक गया। वह न तो पीछे ही जा रहा था और न आगे ही बढ़ रहा था। यह देख कर जहाज़ का कप्तान डर गया। उसने सारे यात्रियों को बुलाया और उनसे कहा — "आप लोगों में से कोई है जिसने अपना वायदा पूरा नहीं किया है इसलिये वे लोग आगे नहीं बढ़ पा रहे थे।"

तब बे आगे बढ़ा और बोला कि वह वह आदमी था जिसने अपना वायदा पूरा नहीं किया था। उसे किनारे पर उतार दिया गया

[5] Beyram – a Turkish national and religious festival

ताकि वह अपना वायदा पूरा कर सके और फिर जहाज़ पर चढ़ सके ताकि बेराम का त्यौहार मनाने के लिये समय से पहुॅच सके।

बे जहाज़ से उतर कर पत्थर और चाकू की तलाश में इधर उधर घूमता रहा कि उसे एक मोटे होठ वाला अरब दिखायी दिया। अरब ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये।

तो उसने जवाब दिया "पीला पेशैन्स पत्थर और कत्थई पेशैन्स चाकू।" दूसरे ही पल उसने वे दोनों चीज़ें बे के हाथ में रख दीं। बे खुशी खुशी जहाज़ पर वापस चला गया। अब वह समय से बेराम के त्यौहार के कार्यक्रमों में शामिल हो सकता था।

उसने अपनी पत्नी को पोशाक दी और "पीला पेशैन्स पत्थर और कत्थई पेशैन्स चाकू" ले कर रसोईघर में गया। वह यह जानने के लिये इच्छुक था कि वह लड़की उन दोनों का क्या करेगी।

सो एक रात वह चुपके से रसोईघर में गया और वहॉ क्या होगा यह देखने के लिये एक जगह छिप कर बैठ गया। तभी वह वह गोरी लड़की आयी उसने चाकू उठाया और पत्थर अपने सामने रखा और फिर अपने जीवन की कहानी सुनाने लगी।

उसने उससे वह कहा जो छोटी चिड़िया ने उससे कहा था। फिर उस चिन्ता के बारे में कहा जो उसको और उसकी मॉ को सहनी पड़ी। जैसे जैसे वह अपनी कहानी सुनाती जा रही थी वह पत्थर फूलता जा रहा था। वह सॉस लेता जाता था और फूलता जाता था जैसे वह कोई ज़िन्दा चीज़ हो।

उसके बाद लड़की ने उससे कहा कि वह वहॉ बे के महल में कैसे आयी। फिर कैसे बे के शरीर के पास बैठी पंखा झलती रही और प्रार्थना करती रही। फिर कैसे उसने अरब लड़की से उसे कुछ देर के लिये नहाने और कमरा ठीक करने के लिये छुट्टी देने के लिये कहा।

पत्थर अब बहुत फूल चुका था। उसने एक सॉस ली और वह झाग निकालने लगा जैसे कि अब मानो फट ही जायेगा। कहानी आगे बढ़ाते हुए लड़की ने उसे बताया कि फिर कैसे अरब लड़की ने उसे धोखा दिया। फिर कैसे बे ने उस अरब लड़की को अपनी पत्नी बना लिया और उसे छोड़ दिया।

ऐसा लग रहा था जैसे उस पत्थर के दिल हो। उसने एक सॉस ली और और फूल गया। फिर जैसे ही लड़की ने अपनी कहानी खत्म की तो वह एक और सॉस ले कर टूट गया।

अब लड़की ने चाकू उठाया और बोली — "ओ पीले पेशैन्स पत्थर। हालॉकि तू तो एक पत्थर है जब तू इसे नहीं सह सकता तो क्या मैं कमजोर लड़की इसे सह सकती हूँ?"

कह कर वह चाकू खुद को मारने ही वाली थी कि बे ने अपनी छिपी हुई जगह से निकल कर उसका हाथ पकड़ लिया और बोला — "तुम ही मेरी असली किस्मत हो।" कह कर वह उस लड़की को अरब लड़की के पास ले गया।

फिर उसने अरब लड़की को मरवा दिया और गोरी लड़की की मॉ को महल बुलवा लिया जहॉ फिर वे सब आराम से रहे। अब कभी कभी वह चिड़िया वहॉ आती है और गाती है — "तुमने अपनी किस्मत पा ली है मेरी बेटी।"

23 ड्रैगन राजकुमार और सौतेली मॉ[6]

एक बार एक बादशाह था जिसके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन वह अपने लाला या वज़ीर के साथ बाहर घूम रहा था कि उसे एक ड्रैगन मिला जो अपने पॉच छह बच्चों के साथ घूम रहा था।

उसको देख कर उसके मुॅह से निकला — "ओ अल्लाह। तूने इस प्राणी के ऊपर कितनी दया कर रखी है। अगर इस ड्रैगन के एक बच्चा कम होता और वह तूने मुझे दे दिया होता।"

वे दोनों घूमते रहे जब तक कि अॅधेरा नहीं हो गया फिर अपने महल को लौट आये।

समय बीतता गया कि एक दिन सुलतान की पत्नी बहुत बीमार हो गयी। होशियार नर्स की खोज में चारों तरफ दूत भेजे गये। उसको ढूॅढने में तो कोई परेशानी नहीं थी पर जैसे ही वह आयी तभी उसके प्राण निकल गये। दूसरी नर्स आयी तो उसके भी सुलताना के बिस्तर के पास आते ही प्राण निकल गये।

इस प्रकार जितनी भी नर्सें आयीं सभी के साथ ऐसा हुआ। लगता था जैसे कि सुलताना के पास कोई ऐसी बीमारी थी जो उसके पास आते ही उनकी जान ले लेती थी।

शाही महल में एक नौकरानी थी जिसके एक सौतेली बेटी थी जिससे वह बहुत घृणा करती थी। उसने सोचा कि यह मौका अच्छा

[6] The Dragon Prince and the Stepmother. Tale No 23

है कि वह अपनी सौतेली बेटी से छुटकारा पा सकती थी। यह सुन कर कि जितनी भी नर्सें सुलताना के पास आयी गयीं वे सब मर गयीं वह बादशाह के पास गयी।

उसने बादशाह से कहा — "मेरे मालिक और शाह। मेरे एक बेटी है जो सेवा करने में बहुत होशियार है। अगर आप उसे सुलताना की सेवा का मौका दें तो हो सकता है सुलताना उसकी सेवा से ठीक हो जायें।"

अब इससे अच्छी तो कोई बात हो ही नहीं सकती थी। बादशाह ने तुरन्त ही गाड़ी भेज कर उस लड़की को अपने महल में बुलवा लिया।

पर सच तो यह था कि वह लड़की तो नर्सिंग बिल्कुल ही नहीं जानती थी सो उसने अपने पिता से पूछा कि वहॉ जा कर उसको क्या करना होगा।

उसके पिता ने जवाब दिया — "बेटी डरो मत। जब तुम महल जाओ तो अपनी मॉ की कब्र पर रुकती जाना। वहॉ तुम अल्लाह की प्रार्थना करना। अल्लाह उन सबकी सहायता करते हैं जिनको उनकी सहायता की जरूरत होती है। उसके बाद तुम विश्वास के साथ महल चली जाना।"

लड़की गाड़ी में बैठ गयी और पहले अपनी मॉ की कब्र पर गयी। वह इस दुख से वहॉ बहुत रोयी। अल्लाह को पुकारते समय उसने कब्र में से एक आवाज आती सुनायी दी "जैसे ही तुम बादशाह

के सामने पहुॅचो तो उनसे एक बर्तन दूध मॉगना और उस बर्तन को ले कर सुलताना के पास जाना तभी तुम उनके पास पहुॅच सकती हो।"

लड़की वापस आ कर गाड़ी में बैठ गयी और फिर महल आ गयी। महल आ कर उसने एक बर्तन दूध मॉगा और उसको ले कर वह सुलताना के कमरे में गयी। वह कुछ ही देर में उसके कमरे से बाहर निकली और बादशाह को यह शुभ समाचार दिया कि सुलताना के बेटा हुआ है। पर उसकी शक्ल एक ड्रैगन जैसी थी।

अब बादशाह इस खबर से कोई बहुत ज़्यादा खुश तो था नहीं पर वह इस बात से सन्तुष्ट था कि अब कम से कम उसका कोई वारिस तो था। इस शुभ अवसर को मनाने के लिये एक बकरा कटवाया गया और दासों को मुक्त कर दिया गया।

जल्दी ही वह समय भी आ गया जब ड्रैगन की पढ़ाई लिखाई शुरू होनी थी। कई होजा[7] बुलाये गये पर उन सबको ड्रैगन राजकुमार ने अपना पाठ शुरू होने से पहले ही एक एक कर के मार दिया। इस तरह से अब राज्य में शायद ही कोई होजा ज़िन्दा रह गया हो।

यह सुन कर सौतेली मॉ फिर एक बार बादशाह के पास गयी और बोली — "मेरे सरकार और शाह। मेरी जिस बेटी ने सुलताना

[7] Hoja – a teacher and sometimes an astrologer too

की उनके ड्रैगन बच्चा होने में सहायता की थी वह राजकुमार को कम से कम उतना पढ़ा भी सकती है जितना आप चाहते हैं।"

सो बादशाह ने उसे फिर से बुलवा भेजा अबकी बार पढ़ाने के लिये। बादशाह से मिलने से पहले वह फिर से अपनी मॉ की कब्र पर अल्लाह की प्रार्थना करने गयी। जब वह वहॉ अल्लाह से प्रार्थना कर रही थी तो उसकी मॉ का हाथ कब्र से बाहर निकला और उसे एक डंडा दिया

डंडा दे कर उसने उससे कहा — "ले बेटी यह डंडा ले और अगर वह ड्रैगन तुझ पर हमला करे तब बस तू उसे यह डंडा केवल दिखा देना वह पीछे हट जायेगा।"

लड़की ने मॉ के हाथ से डंडा लिया और महल चली गयी। जब वह पढ़ायी शुरू करने के लिये शाहज़ादे के पास पहुॅची तो उसने उसे काटना चाहा पर डंडा देखते ही वह अपने इरादे से पीछे हट गया।

कुछ समय बाद उसके पढ़ाने ने शाहज़ादे पर इतने अच्छे परिणाम दिखाये कि बादशाह ने लड़की को बहुत सारा सोना इनाम में दिया और उसे घर जाने की अनुमति भी दे दी।

समय बीतता गया। अब ड्रैगन इतना बड़ा हो गया था कि उसकी शादी की जरूरत पड़ने लगी। बादशाह इस मामले पर विचार करने लगे तो अन्त में वह इसी परिणाम पर पहुॅचे कि उनके वारिस के लिये तो कोई पत्नी हो ही नहीं सकती थी।

किसी तरह से एक लड़की मिली तो उससे उसकी शादी कर दी गयी पर शादी की रात को ही ड्रैगन अपनी पत्नी को खा गया। यही हाल उसकी दूसरी पत्नी का भी हुआ। और फिर उसकी हर पत्नी का हुआ जिसकी उससे शादी कर दी गयी थी।

जब लड़की की सौतेली मॉ ने यह सुना तो वह फिर बादशाह के पास गयी और बोली — "मेरी वह बेटी जिसने ड्रैगन शाहज़ादे के जन्म में सहायता की थी उनको पढ़ाने में सहायता की थी उनकी एक अच्छी पत्नी भी बन सकती है।"

बादशाह उसकी यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने तुरन्त ही लड़की को बुलवा भेजा। लड़की ने पिछली दोनों बार की तरह से इस बार भी बादशाह से मिलने से पहले अपनी मॉ की कब्र पर जा कर अल्लाह की प्रार्थना करना उचित समझा।

उसकी मॉ कब्र में से बोली — "बेटी उससे शादी करने में कोई हर्जा नहीं है। तू साही की खाल ले और उसका चेहरे का एक मुखौटा बना ले। उसको पहन कर जब तू ड्रैगन के पास जायेगी तब वह तुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचा पायेगा बल्कि उसके कॉटे उसी को घायल कर देंगे।

वह तुमसे कहेगा "तुम अपना यह मुखौटा हटाओ।" तब तू उससे कहना "मैं यह मुखौटा तब तक नहीं हटाऊॅगी जब तक तुम अपने कपड़े नहीं उतारोगे।"

जब वह अपने कपड़े उतार दे तब तू उन्हें उसके हाथ से ले कर उन्हें आग में डाल देना इस पर वह अपनी ड्रैगन की शक्ल छोड़ कर आदमी की शक्ल में आ जायेगा।"

ठीक समय पर लड़की महल आयी। फिर उसे ड्रैगन के कमरे में ले जाया गया जहॉ उसकी शादी हुई। जब वे लोग अकेले रह गये तो ड्रैगन ने उस पर हमला करने की कोशिश की पर उसका कॉटों वाला मुखौटा ड्रैगन को उसके पास आने से रोकता रहा तो ड्रैगन बोला "अपना मुखौटा हटाओ।"

लड़की ने कुछ इस तरह की हिम्मत और हुक्म से यह कहा कि "मैं अपना मुखौटा तभी उतारूॅगी जब पहले तुम अपने कपड़े उतारोगे।" कि ड्रैगन ने तुरन्त ही अपने कपड़े उतार दिये।

जब उसने अपना आखिरी कपड़ा उतारा तो लड़की ने उसके सारे कपड़े ले कर आग में डाल दिये। और लो वहॉ तो ड्रैगन की बजाय एक सुन्दर नौजवान खड़ा हुआ था। वे दोनों एक दूसरे से लिपट गयै और बहुत देर तक एक दूसरे को चूमते रहे।

अगले दिन जब दास दासियॉ कमरे में आये तो यह देख कर बहुत खुश हुए कि दोनों बिल्कुल स्वस्थ और खुश थे और ड्रैगन भी अब ड्रैगन न रह कर एक सुन्दर नौजवान बन गया था। वे इस अच्छी खबर को देने के लिये बादशाह के पास दौड़ गये। बादशाह ने तुरन्त ही एक शानदार दावत का इन्तजाम करने का हुक्म दिया।

लड़की जिसने ड्रैगन को उसके जादू से आजाद कराया अब सारे महल में उसकी प्रशंसा होने लगी। कुछ दिन बादशाह के देश और पड़ोसी देश के बीच लड़ाई छिड़ गयी। बादशाह खुद उस लड़ाई में जाने वाले थे पर शाहज़ादे ने जिद की कि वही उस लड़ाई में जायेगा। काफी रोकने के बाद भी शाहज़ादा नहीं माना और लड़ाई में चला गया।

अब जबकि शाहज़ादा महल में नहीं था तो सौतेली मॉ सोचने लगी कि किस तरह से उसकी पत्नी को मारा जाये। मॉ ने शाहज़ादे के नाम एक पत्र लिखा और उसे बादशाह के पास भिजवाया। इत्तफाक से जब बादशाह को यह पत्र मिला तो लड़की भी वहीं खड़ी थी।

जैसे ही उसे पता चला कि उस पत्र में क्या लिखा है वह बोली "यह जान कर कि शाहज़ादा मुझे प्यार नहीं करता मेरा इस महल में रहना बेकार है।"

बादशाह ने उसे शान्त करने की बहुत कोशिश की कि जरूर ही यह पत्र किसी दुश्मन की चालबाजी है पर इसका उस पर कोई असर नहीं पड़ा। उसे उसके इरादे से डिगाया नहीं जा सका।

उसने कहा कि वह अब वहॉ नहीं रुक सकती क्योंकि उसको विश्वास है कि उसके पति ने उससे ज़्यादा सुन्दर किसी लड़की को देख लिया होगा नहीं तो उसने ऐसा पत्र न लिखा होता। यह कह कर वह महल छोड़ कर चली गयी।

जंगलों में और मैदानों में पहाड़ों में और घाटियों में जमीन पर और समुद्र पार कर घूमती हुई वह एक नाले के पास आ पहुॅची जहॉ एक ताबूत रखा हुआ था जिसमें एक बहुत सुन्दर नौजवान लेटा हुआ था।

उसने अपने मन में सोचा कि "इसका क्या मतलब हो सकता है।" जब वह यह सोच रही थी तो एक डर उसके ऊपर छाने लगा और अॅधेरा घिर आया।

उसने नाले के पास ही उसने कोई सुरक्षा की जगह ढूॅढी जो उसे मिल भी गयी। आधी रात के समय वहॉ **40** फाख्ता उड़ते हुए आये। देखते ही देखते वे पानी की सतह पर उतर गये। फिर उन्होंने अपने पंख हिलाये तो वे सब सुन्दर लड़कियॉ बन गये और फिर ताबूत की ओर बढ़े।

उनमें से एक ने जादू की एक छड़ी ली और उससे उस नौजवान का सिर तीन बार छुआ तो वह तो ज़िन्दा हो गया। सारी रात वे उसके साथ खेलती रहीं। सुबह होते ही वह नौजवान फिर से अपने ताबूत में जा कर लेट गया। उसी लड़की ने फिर से उसे तीन बार अपनी जादुई छड़ी से छुआ तो वह उस ताबूत में मरे हुए की तरह से पड़ गया।

तब सारी लड़कियॉ नाले पर गयीं कुछ हिलीं और फिर से फाख्ता बन कर उड़ गयीं।

राजकुमार की पत्नी ने यह सब अपने छिपने की जगह से देखा। क्योंकि वहॉ कोई भी नहीं था सो वह फिर से ताबूत के पास चली गयी और वह जादू की छड़ी उठा ली जो वे परियॉ वहॉ छोड़ गयी थीं और उसे तीन बार नौजवान के सिर से छुआया तो वह तुरन्त ही जाग गया।

एक लड़की को सामने देख कर उसने पूछा "तुम कौन हो?"

बदले में लड़की ने पूछा "और तुम कौन हो। और वे कौन लड़कियॉ थीं जो तुमसे रात को मिलने आयी थीं।"

नौजवान बोला — "वे **40** परियॉ थीं जिन्होंने मुझे मेरे बचपन में ही चुरा लिया था।"

तब ज़िन्दा हुए नौजवान और लड़की ने आजीवन दोस्ती की कसम खायी और आपस में शादी करने का फैसला कर लिया। नौजवान उसे उसकी वफादारी की वजह से बहुत प्यार करता था। सो वे लोग कुछ दिन सुख से रहे।

पर कुछ दिन बाद ही नौजवान कुछ पीला सा और चिन्तित सा दिखायी देने लगा। एक दिन उसने लड़की से कहा — "अब तक तो उन **40** परियों ने तुम्हारे ऊपर कुछ ध्यान नहीं दिया है पर जब उन्हें यह पता चलेगा कि हमने शादी कर ली है तो वे हम दोनों को मार डालेंगी।

इसलिये तुम्हारे लिये यही सबसे अच्छा होगा कि तुम मेरी मॉ के पास चली जाओ। वहॉ तुम सुरक्षित रह सकोगी और फिर हम देखते हैं कि अल्लाह हम पर क्या दया करता है।"

सो भारी दिल से लड़की नौजवान की मॉ के घर चली गयी। वहॉ पहुँच कर उसने दरवाजा खटखटाया और अल्लाह के नाम पर अन्दर आने की इजाज़त और रहने की जगह मॉगी।

उसने उसको अपनी कहानी सुनायी कि वह घर से निकाल दी गयी है और उसका इस दुनियॉ में कोई नहीं है। नौजवान की मॉ को जो तबसे ही अपने बेटे के दुख में रह रही थी जबसे उसका बेटा चोरी हुआ था लड़की पर दया आ गयी और उसने उसे घर में रख लिया। उसी रात उसके एक बेटा हुआ।

कुछ दिन बाद वह नौजवान एक चिड़िया के रूप में अपनी पत्नी के कमरे में आया और अपनी पत्नी से पूछा कि वह कैसी थी और उसका बच्चा कैसा था। पत्नी बोली "हम दोनों ठीक हैं।

इत्तफाक से लड़के की मॉ ने उन लोगों की बातचीत सुन ली तो लड़की से पूछा कि वह वह चिड़िया कौन थी। लड़की ने उसके बारे में जो कुछ भी जानती थी और उसके साथ क्या हुआ था उसे बता दिया।

मॉ खुशी से बोली — "तब तो यही मेरा चुराया हुआ बेटा है।"

उस पल के बाद तो वह उस लड़की को जितना भी प्यार करती वह काफी नहीं था। उसने उसके लिये बहुत अच्छे कपड़े बनवाये। उसकी जितने अच्छे तरीके से देखभाल कर सकती थी करनी शुरू कर दी।

एक दिन उसने लड़की से कहा — "बेटी। अगर वह चिड़िया दोबारा फिर से आये कि बच्चा कैसा है तो उससे कहना कि वह अपने पिता से गुस्सा है क्योंकि वह उससे मिलने नहीं आता। और फिर अगर वह कमरे में आता है तो उससे यह जरूर पूछना कि उसे परियों से मुक्त कैसे कराया जा सकता है।"

अगले दिन वह चिड़िया फिर आयी तो औपचारिक बातों के बाद लड़की ने कहा कि तुम्हारा बेटा तुमसे गुस्सा है। उसने पूछा क्यों तो उसने जवाब दिया कि तुम उसे कभी देखते नहीं।

चिड़िया बोली — "ठीक है तुम यह खिड़की खोलो और मुझे अन्दर आने दो।"

लड़की ने खिड़की खोल दी तो चिड़िया ने अपना चिड़िया का रूप तो बाहर ही छोड़ दिया और अन्दर आ गया। जब वह बच्चे के साथ खेल रहा था तो उसकी मॉ ने उससे कहा — "बेटे। तुम्हें उन **40** परियों से मुक्त कराने का भी कोई रास्ता है क्या।"

नौजवान बोला — "हॉ है और वह आसान भी है और मुश्किल भी। फिर उसने उन्हें वह तरीका बताया। उसने कहा कि उसका चिड़िया का रूप ओवन में फेंक देना चाहिये।

परियों को इस बात का पता चल जायेगा तो वे रोयेंगी कि "हमारा शाह जल रहा है।" और रोते रोते वे भी उसको बचाने के लिये उस ओवन में कूद जायेंगी। अब अगर ऐसा हो जाने के बाद तुरन्त ही ओवन को कस कर बन्द कर दिया जाये तो वे परियॉ उसी में जल जायेंगी और वह उनके जाल से मुक्त हो जायेगा।

सो लड़की ने तुरन्त ही एक ओवन गर्म करवाया और उसके गर्म होते ही उसने नौजवान की चिड़िया की खाल उस ओवन में फेंक दी। जैसे उसकी खाल ओवन में फेंकी गयी तो चालीसों परियॉ वहॉ रोती हुई आयीं कि "हमारा शाह जल रहा है।" और ओवन में घुस गयीं।

उनके ओवन में घुसते ही लड़की ने उस ओवन का दरवाजा कस कर बन्द कर दिया। वे सब परियॉ उसी में जल कर भस्म हो गयीं और नौजवान उनके जादू से आजाद हो गया। सब लोगों ने एक दूसरे को गले लगा कर चूम कर रोते हुए हॅसते हुए खुशियॉ मनायीं। सब लोग अब खुशी खुशी रहने लगे।

उधर जब शाहज़ादा लड़ाई से लौट कर घर आया तो आ कर सबसे पहले उसने यही पूछा कि "मेरी पत्नी कहॉ है?"

बादशाह ने उससे कहा कि वह तो तुमने उसे जो पत्र लिखा था उसकी वजह से महल छोड़ कर चली गयी। दुखी हो कर वह उसे ढूँढने के लिये निकल पड़ा।

उसने एक थैला लिया जो मूल्य में तो बहुत था पर बोझे में बहुत हल्का था और छह महीने तक सारी जगह घूमता फिरा – पहाड़ के ऊपर घाटियों में खेतों में कौफ़ी पीते हुए चिलम पीते हुए फूल चुनते हुए वह उसी नाले के पास आ पहुँचा जहॉ उसकी पत्नी आयी थी।

उसने देखा कि वहॉ चारों तरफ जला हुआ पड़ा था। ऐसा लग रहा था जैसे कि अभी हाल ही में वहॉ आग लगी हो। वहॉ से वह चला तो उसी शहर में आ गया जिस शहर में उसकी पत्नी रहती थी। वहॉ पहुँच कर वह एक कौफ़ी की दूकान में घुस गया। जब वह वहॉ सुस्ता रहा था तो कौफ़ी की दूकान के मालिक ने उससे पूछा कि वह कहॉ से आ रहा था और कहॉ जा रहा था।

शाहज़ादा बोला कि वह अपनी पत्नी को ढूँढ रहा है जो उसके पास से भाग गयी है। यह सुन कर कौफ़ी की दूकान का मालिक बोला कि उसके शहर में एक नौजवान रहता था जो परियों के जादू में था तो अभी हाल ही में एक बहुत सुन्दर लड़की ने उसे परियों के जादू से मुक्त कराया है। फिर उसने कहा कि हो सकता है कि वही तुम्हारी पत्नी हो।

अभी उसने अपना यह वाक्य खत्म ही किया था कि जिस नौजवान की वह बात कर रहा था वह कौफ़ी की दूकान में घुसा। शाहज़ादा उसकी तरफ मुड़ा और उससे अपनी पत्नी के बारे में पूछा

तो नौजवान ने जो कुछ उसके साथ घटा था वह सब उसे बता दिया।

नौजवान का बताया हाल उसकी पत्नी के हाल से बिल्कुल मेल खाता था सो शाहज़ादे ने नौजवान से कहा कि वह घर जाये और अपनी पत्नी से कहे कि वह यहॉ है। और उससे यह भी पूछे कि वह उन दोनों में से किसको चाहती है – तुमको या मुझे। तुम उससे यह भी कह सकते हो कि मैं उसका पहला पति हूँ – "काली ऑख वाला सॉप"। क्योंकि जब वह ड्रैगन था तब यही उसका नाम था।

नौजवान घर गया और अपनी पत्नी को पूरा हाल बता कर उससे यह पूछा कि अब वह किसके साथ रहना चाहती है – अपने पहले पति के साथ या उसके साथ।

पत्नी ने जवाब दिया — "तुमसे मुझे दो गुलाब मिले पर उस काली ऑख वाले सॉप के पास मेरा दिल है।" ऐसा कह कर वह तो जैसे पंख लगा कर अपने पहले पति के पास उड़ गयी। वे दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए और अपनी वापसी यात्रा पर चल पड़े।

जैसे ही वे महल पहुँचे तो शाहज़ादे ने मालूम किया कि वह कौन था जिसने उनको इतनी मुश्किल में डाला। उन्हें पता चल गया कि यह काम लड़की की सौतेली मॉ का था। शाहज़ादे ने उसे तुरन्त बुलाया और उससे पूछा कि उसे **40** खच्चर चाहिये या **40** डंडे।

स्त्री बोली — "चालीस डंडे तो मेरे दुश्मनों के लिये हैं मेरे लिये 40 खच्चर ही ठीक हैं।"

सो उसकी इच्छा के अनुसार उसे 40 खच्चरों की पूँछ में बॉध कर उसे घसीटवा दिया जिससे उसके चिथड़े चिथड़े हो गये।

दोनों ने अपनी शादी फिर से मनायी और फिर हमेशा खुश खुश रहे।

24 जादुई शीशा[8]

एक बार एक बादशाह था जिसके तीन बेटे थे। उसके पास एक शीशा भी था जिसको वह सुबह सुबह उठते ही देखा करता था। उसमें उसको वह सब दिखायी देता था जो उस दिन होना होता था।

एक सुबह जब वह उठा तो वह उस दिन बिना शीशा देखे ही अपने काम पर चला गया। जब उसने अपना काम खत्म कर लिया तब उसको याद आया कि उस दिन वह शीशा देखना तो भूल ही गया था।

वह तुरन्त ही अपनी इस गलती को ठीक करने गया तो उसे तो शीशा ही नहीं मिला। उसने उसे चारों तरफ ढूँढा पर सब बेकार। अपने इस नुकसान की चिन्ता में वह बीमार पड़ गया।

बच्चों ने जब पिता को इस तरह बीमार देखा तो उन्होंने उसका कारण पूछा तो वह बोला — "मैं अपने उस बढ़िया शीशे के खो जाने पर दुखी हूँ।"

बच्चों ने कहा — "पिता जी आप इतने दुखी मत होइये। आप हमें उसे खोजने की आज्ञा दीजिये।"

बच्चों के इस कहने से बादशाह को बहुत खुशी हुई क्योंकि जितनी जल्दी उसका शीशा मिल जाता उतनी जल्दी ही उसकी खुशियॉ लौट आतीं।

---

[8] The Magic Mirror. Tale No 24

सो उसने खुशी खुशी उनको यह इजाज़त दे दी और तीनों भाई अपनी यात्रा पर निकल पड़े। बहुत लम्बी यात्रा करने के बाद वे एक चौराहे पर आये जहॉ से तीन ओर सड़कें जाती थीं।

चौराहे के बीच में एक पत्थर लगा हुआ था जिस पर उन तीनों सड़कों के बारे में कुछ कुछ लिखा हुआ था। पहली सड़क घूमने वालों के लिये थी। दूसरी सड़क एक सराय को जाती थी। और तीसरी सड़क पर जो जाता था वह कभी वापस नहीं लौटता था।

सबसे बड़े लड़के ने पहली सड़क चुनी और वह उधर चल दिया। दूसरे ने दूसरी सड़क चुनी और वह उधर चल दिया और तीसरा सबसे छोटा वाला कभी न वापस लौट कर आने वाली सड़क पर चल दिया।

जाने से पहले तीनों ने निश्चय किया कि वे अपनी अपनी ॲगूठियॉ एक पत्थर के नीचे रख जाते हैं। जब जब जो जो आता जायेगा वह वह अपनी ॲगूठी उसमें से उठाता जायेगा।

अब हम पहले दोनों भाइयों को उनके रास्ते जाने देते हैं पर सबसे छोटे भाई के साथ साथ चलते हैं। चलते चलते वह एक पहाड़ की चोटी पर पहुॅच गया जहॉ उसे एक देव की मॉ दिखायी दी। वह हलवा बना रही थी।

वह उसके पास जल्दी जल्दी पहुॅचा और उसके गले लग कर बोला "मॉ।"

देव की मॉ भी उससे प्यार से बोली "क्या है बेटे। अगर तूने मुझे मॉ न कहा होता तो मैंने तुझे यहीं मार दिया होता।"

लड़का भी तुरन्त ही बोला — "अगर तुमने मुझे बेटा न कहा होता तो मैंने भी तुम्हें अपनी तलवार से काट डाला होता।"

तब देव की मॉ ने उससे पूछा कि वह कहॉ से आया था किधर गया था और वहॉ क्यों था। उसने देव की मॉ से कहा कि वह एक बादशाह का बेटा है। उसके पिता का एक शीशा खो गया है वह उसी की खोज में निकला है।

वह स्त्री बोली कि अफसोस वह शीशा तो देव लोग ले गये हैं। वे उसे अपने बागीचे में ले गये हैं जहॉ वह उनकी कड़ी सुरक्षा में है। जब तू वहॉ पहुँचेगा तो वहॉ सारे देव होंगे। अगर उनकी ऑखें खुली हों तो समझना कि वे सोये हुए हैं।

पर तू डरना नहीं। हिम्मत कर के आगे बढ़ना और शीशा उठा लेना। वहॉ का हर पेड़ हीरों और कीमती पत्थरों से ढका हुआ है सो ध्यान रखना कि उनमें से किसी को छूना नहीं नहीं तो तू गया।"

लड़का उस स्त्री का बहुत कृतज्ञ हुआ और उसे धन्यवाद दे कर अपने रास्ते चला गया।

जब वह बागीचे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि सारे देव सोये हुए हैं क्योंकि उनकी ऑखें खुली हुई थीं। देवों की मॉ की बात याद कर के वह बड़ी हिम्मत से उस बागीचे में घुस गया शीशा उठाया और वापस चलने लगा।

पर जब वह वहॉ से वापस आ रहा था तो उसने सोचा कि ये सब तो सोये हुए हैं तो इनमें से किसी को पता नहीं चलेगा अगर मैं इनमें एक जवाहरात की टहनी तोड़ लूँ तो।

जैसे ही उसने एक टहनी तोड़ने के लिये हाथ बढ़ाया कि सारे देव जाग गये और उनमें से एक ने पूछा — "तुम यहॉ किस अधिकार से आये हो?"

लड़का उनको जागा हुआ देख कर डर गया और उनसे विनती करने लगा कि वे उस पर दया करें। उन्होंने उसे आजाद करने का वायदा किया और शीशा भी रखने का वायदा किया अगर वह उन्हें अरब उज़ैंगी[9] की तलवार ला दे तो।

लड़के ने इस बात की कसम खायी कि वह उन्हें अरब उज़ैंगी की तलवार ला कर देगा और इस कसम पर उसे आजाद कर दिया गया। वह लौट कर देवों की मॉ के पास आया और उससे अपनी परेशानी कही।

तो मॉ ने उसे डॉट लगायी कि "मैंने तुझसे यह पहले ही नहीं कहा था कि वहॉ किसी चीज़ को छूना नहीं।"

लड़के ने रोते हुए अपनी गलती की क्षमा मॉगते हुए उससे विनती की — "अब मैं क्या करूँ। मेरी सहायता करो।"

उसे फिर से लड़के पर दया आ गयी तो उसने उसे यह सलाह दी — "अगर तू फलॉ फलॉ रास्ते पर चला जायेगा तो तू एक महल

[9] Arab-Uzengi

के पास पहुॅच जायेगा। उसके दो दरवाजे होंगे एक बन्द होगा दूसरा खुला होगा। तू खुले हुए दरवाजे को तो बन्द कर देना और बन्द दरवाजे को खोल लेना।

तुझे अपने दॉये हाथ को एक शेर मिलेगा जिसके पास एक मॉस का टुकड़ा रखा होगा और तेरे बॉये हाथ को एक कुत्ता होगा जिसके पास घास रखी होगी। तू घास शेर को दे देना और मॉस कुत्ते को दे देना और सीढ़ियॉ चढ़ जाना। इस कमरे में तुझे अरब उज़ैंगी सोता हुआ मिल जायेगा। उसकी तलवार दीवार पर टॅगी होगी।

उस तलवार को जल्दी से उठाना और फिर तुरन्त ही मेरे पास लौट कर आना। पर ध्यान रहे तू उस तलवार को उसकी म्यान में से बाहर मत निकालना।"

लड़का फिर से अपने रास्ते पर चल दिया। महल पहुॅच कर खुला दरवाजा बन्द कर के और बन्द दरवाजा खोल कर वह अन्दर घुस गया। शेर के पास में रखा मॉस उसने कुत्ते के सामने रखा और कुत्ते के पास रखी घास उसने शेर के सामने रखी और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया।

अब वह अरब उज़ैंगी के कमरे में था। वह सो रहा था। उसकी तलवार दीवार पर टॅग रही थी। उसने जल्दी से उसकी तलवार उतारी और वहॉ से चलता बना। यह तो उसके लिये एक पल का काम था। जैसे ही वह देवों की मॉ के घर के पास पहुॅचा तो उसे लगा कि अब वह खतरे से बाहर था।

उसने म्यान में से तलवार निकाल ली। लो जैसे ही उसने म्यान में से तलवार निकाली अरब उज़ैंगी ने उसे पकड़ लिया। वह राक्षस ज़ोर से बोला — "अब मैं तुझे अपनी ताकत दिखाता हूँ।" कह कर वह उसे घसीटता हुआ अपने महल की ओर ले चला।

देवों की मॉ ने उसे इस परेशानी के लिये पहले से ही तैयार कर दिया था कि अगर वह अरब उज़ैंगी के हाथ पकड़ा जाये तो उसे क्या करना है। अरब उज़ैंगी **40** दिन तक रोज उसे रूप बदलने के ऊपर भाषण देगा।

जब उन भाषणों के अन्त में वह उससे पूछे कि "दोस्त समझ में आया क्या।" तो उसे हर हाल में यही जवाब देना है कि "नहीं। मेरी समझ में कुछ नहीं आया।" जब **40** दिन खत्म हो जायेंगे तब वह उसे इस शर्त पर छोड़ देगा कि वह उसे परी बादशाह की बेटी ला कर देगा।"

सो जब लड़का वापस देवों की मॉ के पास पहुँचा तो उसने फिर उसे पहले की अपेक्षा बहुत अधिक ज़ोर से डॉटा — "तू सुनता नहीं है कि मैंने तुझसे क्या कहा था।"

खैर उसने उसकी विनती एक बार और सुनी। उसने उसे बताया कि परी राजकुमारी एक शहर में रहती थी जिसमें कोई आदमी नहीं रहता था औ उसके पास किसी का पहुँचना भी कठिन था। इसके अलावा राजकुमारी के पास एक तलिस्मान भी था। अगर किसी वजह से कोई आदमी उस शहर में घुसने में सफल हो

भी गया तो उस तलिस्मान का असर खत्म हो जायेगा और फिर वह वहॉ उसके साथ जो चाहे कर सकता था।

केवल अरब उज़ैंगी ही नहीं बल्कि सारे देव भी उसके प्यार में पागल हैं। कई साल पहले वे उसे उठा कर भी ले जाने वाले थे पर उसके तलिस्मान के आगे कुछ नहीं कर सके।"

लड़का एक लम्बी सॉस भर कर बोला — "तो फिर मैं कैसे उसके शहर में घुस पाऊॅगा।"

"क्या तूने अरब उज़ैंगी से इस बारे में कुछ नहीं सीखा?"

"हॉ सीखा है न। मैं अपने आपको एक चिड़िया में बदल सकता हूॅ।"

"यह तो बहुत अच्छा है मेरे बेटे। अब तू एक चिड़िया में बदल जा और राजकुमारी के महल में उड़ कर पहुॅच जा। उसके बागीचे में एक पत्थर का पिंजरा है उसमें घुस कर तू राजकुमारी के तलिस्मान के असर को बेकार कर सकता है और राजकुमारी तेरी दया पर होगी। बस उसे वहॉ से ले जाना और अरब उज़ैंगी को दे देना।"

सो वह लड़का एक चिड़िया में बदला और सीधा राजकुमारी के शहर में पहुॅच गया। फिर वहॉ से उसके महल के बागीचे में पहुॅच गया। उसने वहॉ एक पत्थर का पिंजरा रखा देखा तो उसमें घुस गया। बस राजकुमारी के तलिस्मान का असर खत्म हो गया। इसी निशानी से राजकुमारी जान गयी कि उसके पत्थर के पिंजरे में कोई चिड़िया नहीं बल्कि कोई आदमी है।

परी राजकुमारी ने लड़के से कहा — "ओ धरती के प्राणी। अब मैं तुम्हारी तरह से ही धरती की एक प्राणी हो गयी हूॅ। अब तुम्हें मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है इसलिये अब मैं पूरे तौर से तुम्हारी हूॅ।"

यह सुन कर चिड़िया हिली और अपने आदमी के रूप में आ गयी। राजकुमारी ने उसे यह भी बताया कि अब उसके लिये उसके चारों तरफ कोई रोकटोक नहीं है। आदमी स्त्री कोई भी अब उसके शहर में घुस सकता है। उसने अपने पिता को भी बताया कि उसके साथ क्या हुआ है और वह धरती के एक आदमी की पत्नी बन गयी है।

लड़के ने उसे बताया कि वह भी एक बादशाह का बेटा है और उनकी शादी उसके पिता के महल में धूमधाम से होगी। उसके बाद वह राजकुमारी को ले कर लौटने लगा।

जब वे अरब उज़ैंगी के महल के पास आये तो राजकुमारी ने भॉप लिया कि लड़का उसे कहॉ ले जा रहा है सो वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

लड़के ने उसे शान्त किया कि अपनी जिन्दगी बचाने के लिये अभी तो उसे राजकुमारी को वहॉ ले कर जाना ही पड़ेगा। पर साथ में यह वायदा भी किया कि वह उसे वहॉ छोड़ेगा नहीं। इससे पहले वह अपनी जान दे देगा।

सो जब वे अरब उज़ैंगी के महल पहुँचे तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "दूर जाओ। दूर जाओ। क्योंकि तुम राजकुमारी को पा सके तो तुम कुछ भी कर सकते हो। तुम्हारे लिये तो कुछ भी करना सम्भव है। तुम इस लड़की को भी रखो और यह तलवार भी रखो बस तुम मेरे पास नहीं आना।"

सो वह लड़का तलवार और राजकुमारी को ले कर देवों के बागीचे गया। देवों ने जैसे ही उसे तलवार लाते देखा तो वे भी चिल्लाये — "दूर रहो। दूर रहो। यहॉ मत आना। हम तुमसे डरते हैं।

जब तुम अरब उज़ैंगी की यह तलवार ले सकते हो यह परी राजकुमारी ला सकते हो और यह शीशा तुम्हारे पास है तब तो तुम कुछ भी कर सकते हो। तुम वह अनार की शाख भी अपने पास ही रखो जो तुमने हमारे बागीचे से तोड़ी है।"

जो कुछ भी उसे करना था उसे करने के बाद वह लड़का राजकुमारी को देवों की मॉ के पास ले गया। कुछ देर वहॉ सुस्ता कर वह फिर अपने घर की ओर चल दिया।

लम्बी यात्रा के बाद वे उस जगह आये जहॉ तीनों भाइयों ने अपनी अपनी अँगूठियॉ दबायी थीं। उसने पत्थर ऊपर उठा कर देखा तो तीनों अँगूठियॉ अभी भी वहीं रखी थीं।

उसने सोचा कि मेरे भाइयों को क्या हुआ वे अभी तक क्यों नहीं आये। तभी उसे वे आते हुए दिखायी दे गये। हालॉकि दोनों

की शक्लें ऐसी हो रही थीं कि वे इन्सान भी कम लग रहे थे। पर वह उन्हें देख कर खुश था कि कम से कम वे सुरक्षित तो थे। तब उन्होंने बताया कि उनके साथ क्या हुआ था।

यह देख कर कि उनके सबसे छोटे भाई के पास एक सुन्दर लड़की भी थी और शीशा भी उन दोनों बड़े भाइयों के दिल द्वेश से भर गये।

वे सब एक साथ चले तो रास्ते में उनको प्यास लग आयी। वे प्यास बुझाने का कोई रास्ता ढूँढने लगे। काफी देर बाद वे एक कुँए के पास पहुँचे जो एक लोहे के ढक्कन से ढका हुआ था। दोनों बड़े भाइयों ने सुझाया कि छोटे भाई को एक जग ले कर रस्सी के सहारे कुँए में उतार दिया जाये।

जब उसने यह कर लिया तो उसने देखा कि उसके भाई तो उसको उसकी किस्मत के सहारे वहीं कुँए में ही छोड़ कर चले गये हैं। वे अपना घोड़ा तो वहीं छोड़ गये हैं पर राजकुमारी को अपने साथ ले गये हैं। उन्होंने राजकुमारी से कहा कि उनका छोटा भाई बाद में आ जायेगा। लड़के को जब यह निश्चय हो गया कि उसके भाई उसे वहॉ छोड़ कर चले गये हैं तो वह बहुत दुखी हुआ।

दोनों बड़े भाई राजकुमारी के साथ घर लौट आये। उन्होंने अपने पिता को वह जादुई शीशा भी दे दिया जिसको लेने वे गये थे और जो उन्होंने अपने भाई से ले लिया था।

अपने छोटे भाई के बारे में उन्होंने साफ मना कर दिया कि उन्होंने उसे तबसे नहीं देखा जबसे उनके रास्ते अलग हुए थे। बादशाह अपना खोया हुआ शीशा पा कर इतना खुश हुआ कि जल्दी ही वह अपने छोटे बेटे के बारे में भूल गया और परी राजकुमारी की शादी अपने बड़े बेटे से करने की तैयारियों में जुट गया।

अब हम वापस छोटे बेटे के पास चलते हैं। उसके घोड़े को बहुत ज़ोर से भूख और प्यास लगी थी सो वह रह रह कर अपना खुर कुँए के ढक्कन पर मारे जा रहा था। उसके मारते मारते कुँए का ढक्कन टूट गया।

अपने घोड़े की हिनहिनाहट सुन कर लड़के ने फिर एक बार अपनी पूरी ताकत से ज़ोर लगाया तो बहुत मुश्किल से ही सही पर वह ऊपर आ गया। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो कर अपने महल की ओर चल दिया। बादशाह तो अपने खोये हुए बेटे को देख कर बहुत ही खुश हो गया।

अपने छोटे बेटे के लिये दोनों बड़े बेटों की निर्दयी लापरवाही देख कर बादशााह को बहुत गुस्सा आया उसने दोनों को मरवा दिया। परी राजकुमारी को उसके सच्चे प्रेमी को दे दिया गया जिसने इतना खतरा मोल ले कर उसे बचाया था। उनकी शादी की दावत **40** दिन और **40** रात चली। फिर वे जीवन भर खुश रहे।

25 कुॅए का भूत[10]

यह घटना जो हम अब आपको सुनाने जा रहे हैं यह बहुत दिन पहले घटी थी। हम लोग कहीं जा रहे थे तो पहाड़ियों और घाटियों से हो कर हम बिना रुके हुए छह महीने तक चले। पर जब हमने पीछे मुड़ कर देखा तो हमने देखा कि हम तो केवल एक जौ के पेड़ की लम्बाई के बराबर ही चले हैं।

हम फिर आगे बढ़े तो फिर हम चिनिमाचीन[11] के बादशाह के बागीचे तक आ पहुॅचे। हम उस बागीचे में घुसे तो वहॉ एक चक्की वाला खड़ा हुआ था जो आटा पीस रहा था।

एक बिल्ला उसके पास बैठा हुआ था। ओह उस बिल्ले की ऑखें उसकी नाक उसका मुॅह उसकी आगे की टॉगें उसकी पीछे की टॉगें उसका गला उसके कान उसकी मूॅछ उसकी लम्बी पूॅछ।

उसके पास ही एक बढ़ई रहता था जिसके पास अपनी गरीबी के अलावा केवल एक खब्ती पत्नी थी। जितना भी पैसा उसका पति कमाता वह वह सब उससे ले लेती इससे उससके पास एक भी पैसा नहीं रहता था।

जब खाने में नमक ज़्यादा होता, जो कि अक्सर होता, और अगर वह आदमी उससे यह कहने की हिम्मत करता "मॉ तुमने खाने

[10] The Imp of the Well. Tale No 25
[11] Chinimatchin

में बहुत नमक डाल दिया है।" तो यह बात निश्चय थी कि अगले दिन खाने में एक चुटकी नमक भी नहीं पड़ा होता।

और अगर वह यह कहता कि "मॉ आज तुम नमक डालना भूल गयी हो।" तो खाने में इतना ज़्यादा नमक होता कि वह उसे खा ही नहीं सकता था।

अब एक दिन इस बेचारे आदमी के साथ कुछ ऐसा हुआ कि इसने अपनी कमाई में से **10** पैसे बचा कर रख लिये वह उससे एक रस्सी खरीद सके। उसकी पत्नी को पता चल गया तो उसने पति को गुस्से में भर कर बहुत डॉटा।

पर लकड़हारे ने उससे बहुत ही मुलायमियत से कहा — "प्रिये। मैं तो इससे केवल एक रस्सी खरीदने वाला था। तुम इतनी नाराज क्यों होती हो।"

पत्नी बोली — "जो अभी मैंने तुम्हारे साथ किया वह तो उसके अनुपात में कुछ भी नहीं था जो मैं तुम्हारे साथ करना चाहती थी।" और उसके ऊपर कूद पड़ी। इससे बहुत शोर मच गया। फिर किसने कैसे अपनी जान बचायी यह तो सोचना भी बहुत मुश्किल है।

अगली सुबह पति ने तय किया कि अब वह यह सब और नहीं सहेगा। उसने अपना गधा तैयार किया और पहाड़ पर चला गया। उसने अपनी पत्नी से बस केवल इतना ही कहा कि वह उसके पीछे पीछे न आये।

अभी पति को घर से गये हुए बहुत देर नहीं हुई थी कि पत्नी ने भी अपना एक गधा तैयार किया और उस पर बैठ कर पति के पीछे पीछे चल दी। वह अपने आप ही बड़बड़ाई "जब मैं उसके साथ नहीं होऊॅगी तब पता नहीं वह क्या करेगा।"

पति को पता चल गया कि उसकी पत्नी उसके पीछे पीछे आ रही है पर उसने यह बहाना बनाया जैसे उसने उसे देखा ही न हो। जब वह पहाड़ पर पहुॅच गया तो बस वह अपने काम में लग गया।

उसकी पत्नी बेचैनी से आगे पीछे चक्कर काट रही थी। वह हर जगह पर ठीक से निगाह रखे थी पर एक कुॅआ उसकी नजर से बच गया। इससे पहले कि कोई उसे उस पर जाने से रोके वह कुॅए पर थी। उसका पति चिल्लाया "ध्यान से। ज़रा कुॅए का ध्यान रखना। वापस आ जाओ।"

हालॉकि पत्नी ने पति की चेताावनी सुन ली थी पर उसने पति की चेतावनी पर ध्यान ही नहीं दिया। बस एक कदम और। फिर वह संभल नहीं पायी और लो अगले ही पल वह तो कुॅए की तली में थी। उसके पति ने सोचा कि वह वहॉ से बचाने लायक नहीं है सो उसने अपनी लकड़ियॉ काटीं गधे पर लादीं और घर चला गया।

अगले दिन फिर वह अपने काम पर पहाड़ पर गया तो अपनी पत्नी के बारे में सोचते हुए उसने सोचा "मुझे देखना तो चाहिये कि उस स्त्री का क्या हुआ।" सो वह कुॅए की ओर चल दिया।

जब वह कुँए के ऊपर पहुँचा तो उसने कुँए में झॉक कर देखा तो वहॉ तो उसे कोई भी दिखायी नहीं दिया। अब वह अपने पिछले दिन के बुरे व्यवहार पर पछताने लगा। उसने सोचा कि चाहे वह जिद्दी ही सही पर थी तो उसकी पत्नी ही। क्या हुआ होगा उसका।

उसने एक रस्सी ली और उसे कुँए में डाल कर ज़ोर से चिल्लाया — "मॉ यह रस्सी पकड़ लो मैं तुम्हें ऊपर खींच लूँगा।"

पति को लगा कि उसकी रस्सी थोड़ी कस गयी है तो उसने समझा कि किसी ने उसकी रस्सी पकड़ ली है सो उसने अपना पूरा ज़ोर लगा कर उसे ऊपर खींचना शुरू कर दिया।

वह उसे ऊपर खींचता रहा जब तक वह थक कर चूर नहीं हो गया। आखिर वह उसे ऊपर ले ही आया। पर वह क्या था। वह थी एक भयानक छोटा भूत। बेचारा लकड़हारा तो उसे देख कर ही डर गया।

भूत बोला — "ओ आदमी मुझसे डरो नहीं। अल्लाह तुम्हारे इस काम के लिये तुम्हारा भला करे। तुमने मुझे एक बहुत बड़े खतरे से बचा लिया। तुम्हारी इस मेहरबानी के लिये मैं तुम्हें हमेशा याद रखूँगा।"

लकड़हारा यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा कि उसने उसे कैसे खतरे से बचाया। वह बोला — "बहुत सालों से मैं यहॉ शान्ति से रह रहा था। कल रात तक मुझे यहॉ परेशान करने के लिये कोई नहीं था।

पर फिर एक बुढ़िया मेरे ऊपर गिर पड़ी। उसने मुझे मेरे कानों से पकड़ा और इतनी कस कर पकड़ा कि मैं उसकी पकड़ से छूट ही नहीं सका। मेरी अच्छी किस्मत से जब तुमने रस्सी नीचे फेंकी तो पहले मैंने उसे पकड़ा और फिर अल्लाह की जय हो मैं इस कुँए से बाहर आ गया। तुम्हारी मेहरबानी के लिये मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

यह कह कर छोटा भूत तीन पत्ते ले कर आया और उन्हें लकड़हारे को देते हुए कहा — "अब मैं सुलतान की बेटी के शरीर में घुस जाऊँगा तो वह बहुत बीमार हो जायेगी। वे लोग डाक्टरों और होजाओं को बुलवायेंगे पर वे सब बेकार रहेंगे। उनमें से कोई भी उसे ठीक नहीं कर पायेगा।

जब तुम इस बारे में सुनो तो तुम बादशाह के पास आना और उसे ये तीन पत्ते दिखाना। जैसे ही इन पत्तों से तुम उसका चेहरा छुओगे तैसे ही मैं उसके शरीर से बाहर निकल जाऊँगा और वह ठीक हो जायेगी। तुम्हें बहुत सारा इनाम मिलेगा।"

लकड़हारे को लगा कि यह तो बड़ी अच्छी योजना है सो उसने छोटे भूत से विदा ली और अपनी पत्नी को बारे में सोचना छोड़ दिया। लकड़हारे के जाने के बाद छोटा भूत बादशाह के महल की ओर चल पड़ा और जा कर राजकुमारी के शरीर में घुस गया।

उसके अन्दर घुसते ही राजकुमारी बेचारी बहुत ज़ोर से चिल्लायी "ओह मेरा सिर। ओह मेरा सिर।" जब बादशाह को राजकुमारी के बारे में बताया गया तो वह बेचारा अपनी बेटी को

देखने के लिये दौड़ा। उसको इतने अधिक दर्द में देख कर वह बहुत परेशान हो गया। राज्य के सारे डाक्टरों और होजाओं को बुलाया गया पर उनका कोई ज्ञान काम नहीं आया। लड़की बेचारी बराबर कराहती रही "ओह मेरा सिर। ओह मेरा सिर।"

बादशाह बोला — "बेटी। तुम्हारी दर्द भरी चीखें सुन कर तो मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे यह दर्द मेरे ही सिर में हो रहा हो। मैं तुम्हारे इस दर्द के लिये क्या करूँ। मैं ज्योतिषियों को बुलाता हूँ शायद वे इस बारे में कुछ बता सकें।"

सो राज्य के सारे ज्योतिषी बुलाये गये। सबने सितारों का अध्ययन कर के भिन्न भिन्न इलाज बताये पर राजकुमारी की हालत तो बिगड़ती ही जा रही थी।

अब लकड़हारे के पास चलते हैं। लकड़हारा अब अपनी पत्नी को भूल कर आनन्द से रह रहा था। वह छोटे भूत और उसकी तीन पत्तियों को बिल्कुल ही भूल गया था।

एक दिन उसे बादशाह की करवायी गयी मुनादी सुनायी पड़ी कि "मेरी बेटी बहुत बीमार है और बिल्कुल मरने जैसी हो रही है। डाक्टर होजा ज्योतिषी सभी उसको ठीक करने में असफल रहे हैं।

जो कोई भी उसकी सहायता कर सकता है मेहरबानी कर के आये और उसे ठीक करे। अगर वह मुसलमान होगा तो मैं उसे अपनी बेटी दे दूँगा और मरने के बाद राज्य दे दूँगा। और अगर वह कोई और होगा तो मेरा सारा खजाना उसका।"

यह सुन कर लकड़हारे को उसे छोटे भूत की बात याद आयी और उसकी दी हुई पत्तियों का ध्यान आया तो वह बादशाह के महल की तरफ चल पड़ा। महल जा कर उसने अल्लाह के नाम पर राजकुमारी को ठीक करने का फैसला किया।

बिना किसी बहस के बादशाह उसे राजकुमारी के कमरे तक ले गया जहॉ वह अभी भी चिल्ला रही थी "ओह मेरा सिर। ओह मेरा सिर।"

लकड़हारे ने तीनों पत्तियॉ निकालीं उन्हें धोया और रोगी के माथे से छुआ दिया। ऐसा करते ही राजकुमारी का दर्द ऐसे ठीक हो गया जैसे पहले कभी था ही नहीं। सारे महल में खुशियॉ छा गयीं। सुलतान की बेटी की शादी लकड़हारे से कर दी गयी और वह अब बादशाह का दामाद बन गया था।

पड़ोसी बादशाह इस बादशाह का बहुत अच्छा दोस्त था। उस पड़ोसी बादशाह की बेटी भी कुॅए के छोटे भूत के कब्जे में थी। उसकी भी वही शिकायत थी। उसके मामले में भी डाक्टर जेजा और ज्योतिषी कुछ नहीं कर पा रहे थे।

इस बादशाह ने अपनी अच्छी किस्मत के बारे में अपने दोस्त को बताया और कहा कि वह अपने दामाद को उसकी बेटी को ठीक करने के लिये भेज देगा। जो बिना किसी शक के उसके दोस्त की बेटी को भी ठीक कर देगा जैसे उसने उसकी अपनी बेटी को ठीक किया था।

सो बादशाह ने अपने दामाद को बताया कि वह उससे क्या चाहता था। हालॉकि दामाद वहॉ जाना नहीं चाहता था पर वह ठीक से मना भी नहीं कर सका। सो वह पड़ोसी देश के राज दरबार चल दिया।

जैसे ही वह वहॉ पहुॅचा तो उसको राजकुमारी के कमरे में ले जाया गया। उसे जल्दी ही पता चल गया कि अभी भी उसे कुॅए के छोटे भूत से ही निबटना पड़ेगा।

छोटा भूत बोला — "तुमने एक बार मेरे ऊपर दया की थी मैंने उसका बदला चुका दिया। अब तुम यह नहीं कह सकते कि मैं तुम्हारा ऋणी हूॅ। मैंने सुलतान की बेटी को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है और एक दूसरी को खुद ले लिया है। क्या तुम इसको भी मुझसे ले लोगे। अगर तुम इसको मुझसे लोगे तो फिर तुम्हारी वाली राजकुमारी मैं ले लूॅगा।"

यह सुन कर बेचारा लकड़हारा बहुत परेशान हुआ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे पर फिर उसने एक चाल खेलने का निश्चय किया।

वह बोला — "मैं यहॉ लड़की के लिये नहीं आया। वह तो अब कानूनन तुम्हारी ही जायदाद है। बल्कि अगर तुम चाहो तो तुम मेरी वाली को भी ले लो।"

"तो फिर तुम यहॉ क्यों आये हो?"

लकड़हारा हकलाते हुए बोला — "वह कुॅए वाली स्त्री, वह कुॅए वाली... वह मेरी पत्नी थी। मैंने उसे कुॅए में इसलिये छोड़ा था ताकि मैं उससे छुटकारा पा सकूॅ।"

यह सुन कर छोटा भूत कुछ बेचैन सा हो गया।

उसने पूछा — "क्या वह बाहर निकल आयी?"

लकड़हारा बोला — "हॉ वह बाहर निकल आयी है और उससे भी बुरी बात यह है कि मैं जहॉ भी जाता हूॅ वह मेरे पीछे पीछे आती है। और अब वह मेरे पीछे वाले दरवाजे के पीछे खड़ी है।"

छोटे भूत को डराने के लिये बस इतना काफी था। उसे सुलतान की बेटी को छोड़ने में एक पल की भी देर नहीं लगी। उसने तो जल्दी में वह शहर ही छोड़ दिया इस बात को पता करने का भी कष्ट नहीं किया कि लकड़हारा सच बोल रहा था या झूठ।

इसके बाद वह छोटा भूत फिर कभी नहीं सुना गया। इस तरह यह राजकुमारी भी भूत के शिकंजे से आजाद हो गयी।

26 ज्योतिषी[12]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसकी उम्र **50** और **60** के बीच की थी। उसके सफेद बाल थे और लम्बी सफेद दाढ़ी थी जिनसे ऐसा लगता था जैसे वह **60** और **70** साल के बीच की उम्र का हो। वह कई कामों में होशियार था तो अपना और अपनी पत्नी का पेट आराम से भर लेता था।

एक बार उसकी पत्नी नहाने के लिये नहानघर जा रही थी तो उसने सड़क पर बहुत बड़ी भीड़ देखी। दूसरी स्त्रियॉ जो उसी की तरह नहाने के लिये नहानघर जा रही थीं उनसे पूछने पर उसे पता चला कि उस दिन बड़े ज्यातिषी जी की पत्नी वहॉ आ रही थी इसी लिये वहॉ इतनी भीड़ लगी हुई थी।

जबकि स्त्रियॉ बड़े ज्यातिषी जी की पत्नी के आने के विषय में गीत गा रही थीं और क्योंकि वह बादशाह के प्रिय ज्योतिषी जी की पत्नी थी इसलिये उनके साथ और भी कई लोग आ रहे थे।

नहानघर की स्त्री ने इस आशा में कि उसे आज कोई बहुत बड़ा इनाम मिलेगा उसको विशेष आदर दिया और उससे उसकी पसन्द की जगह चुनने की विनती की।

हमारी गरीब पत्नी इस सबको ध्यान से देख रही थी। वह नहायी धोयी और वापस अपने घर चली गयी।

---

[12] The Soothsayer. Tale No 26

दूसरी सामान्य स्त्रियों के साथ आज उसने जो कुछ देखा उसको ले कर उसने अपने पति से कहा — "या तो तुम एक ज्योतिषी बन जाओ या फिर मैं तुम्हें छोड़ कर चली जाऊॅगी।"

पति बोला — "प्रिये अपनी रोज की रोटी कमाने के लिये मैं बस इतना ही कर सकता हूॅ। मेरे पास ज्योतिष की कला सीखने के लिये समय नहीं है। मैं तुम्हारी इच्छा कैसे पूरी करूॅ।"

पर उसकी पत्नी अपनी बात पर अड़ी रही "या तो तुम ज्यातिषी बन जाओ या फिर मैं तुम्हें छोड़ कर चली जाऊॅगी।"

उसकी पत्नी बहुत सुन्दर थी। वह उसे खोना नहीं चाहता था सो उसने यह सोचना शुरू कर दिया कि वह इस दिशा में क्या कर सकता था।

वह एक कौफ़ी की दूकान पर गया और वहॉ बैठ कर अपनी मुश्किल पर विचार कर रहा था कि उसका एक दोस्त वहॉ आ पहुॅचा। दोनों एक दूसरे को देख कर खुश हुए पर दोस्त को पता चल गया कि पति उदास है।

उसने पति से पूछा कि वह क्या सोच रहा है। पति ने उसे सब बताया। दोस्त नहानघर वाली स्त्री को जानता था। वह पति से बोला — "तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा।"

यहॉ से वह सीधे नहानघर वाली स्त्री के पास गया और सारी परिस्थिति साफ तरीके से उसके सामने रखी तो स्त्री बोली कि "कल उस आदमी को यहॉ नहानघर के दरवाजे पर बिठा देना और उससे

कहना कि वह कागज कलम और दावात ले कर आये और एक ज्योतिषी की तरह से लिखना सीख कर आये। बाकी मैं सॅभाल लूॅगी।"

अब यह पति बेचारा न तो लिखना जानता था और न पढ़ना। वह एक कागज स्याही आदि बेचने वाले की दूकान पर गया और सब जरूरी सामान खरीद कर नहानघर के दरवाजे पर जा कर बैठ गया जहॉ से हर आदमी गुजरता था। वहॉ से हर आते जाते आदमी ने इसे होजा ही समझा।

बड़े ज्योतिषी जी की पत्नी रोज की तरह उस दिन भी वहॉ नहाने आयी। जब नौकर उनके साथ व्यस्त थे तो नहानघर की स्त्री ने ज्योतिषी जी की पत्नी के हाथ से उनकी एक बहुत कीमती अॅगूठी निकाल ली और वहॉ का पानी बाहर निकालने वाला पाइप जहॉ पानी गिराता था वहॉ की कीचड़ में दबा दी। और यह सब खबर पति को दे दी।

जल्दी ही बड़े ज्योतिषी जी की पत्नी को पता चल गया कि उनकी अॅगूठी गायब है। नहानघर में काम करने वाले सब उनकी अॅगूठी खोजने में लग गये। जब शोर अपनी चरम सीमा पर पहुॅच गया तब नहानघर की स्त्री बोली — "एक होजा बाहर दरवाजे पर बैठा हुआ है वह खोयी हुई चीज़ों को बताने में बहुत होशियार है।"

तुरन्त ही उस होजा को बुलाया गया। होजा ने बड़ी होशियारी से अपनी भौंहें सिकोड़ी और कुछ सोचते हुए बोला — "जहॉ पाइप

गन्दा पानी फेंकता है वहाँ की कीचड़ में आपकी अँगूठी दबी हुई है।" वहाँ जा कर देखा गया तो उनकी अँगूठी वहाँ गड़ी मिल गयी।

बड़े ज्योतिषी जी की पत्नी अपनी इतनी कीमती अँगूठी मिल जाने से बहुत खुश थी। उन्होंने होजा को बहुत सारा इनाम दिया। होजा भी ज्योतिषी की हैसियत से अपनी पहली आमदनी से बहुत अच्छी तरह से सन्तुष्ट हो कर घर गया।

कुछ दिन बाद सुलताना की अँगूठी महल में ही खो गयी। ऐसा विश्वास किया जा रहा था कि किसी नौकर ने चुरा ली है। हर आदमी ने हर जगह ढूँढ ली पर किसी को कहीं नहीं मिली। जब यह बात बड़े ज्योतिषी जी की पत्नी ने सुनी तो उसने ऐसे काम के लिये होजा का नाम सुझाया।

उसे तुरन्त ही सुलताना के सामने बुलवाया गया। जब वह आ गया तब सुलताना ने उससे कहा — "होजा। तुमको मेरी अँगूठी ढूँढनी है चाहे वह कहीं भी क्यों न हो। मैं तुम्हें कल सुबह तक का समय देती हूँ। अगर कल सुबह तक वह न मिली तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगी।"

सुलतान के नौकर उसे एक कमरे में ले गये और वहाँ उसे अकेले ही बन्द कर दिया। वहाँ पहुँच कर वह निराश हो कर फर्श पर गिर कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा — "ओ अल्लाह तू सब कुछ जानता है। कल मेरी जान तेरे हाथ में है।"

अब ऐसा हुआ कि जिस दासी ने उस अॅगूठी को चुराया था वह अपने अपराध की चोरी खुल जाने की वजह से बहुत दुखी और परेशान थी। उसे रात भर नींद नहीं आयी। आखिर उससे वह खतरा और नहीं झेला गया। उसने तय कर लिया कि वह सुबह होने से पहले पहले होजा को सब कुछ बता देगी।

आधी रात को वह उठ कर उस कमरे की तरफ गयी जिसमें होजा बन्द था और चाभी घुमा कर दरवाजे का ताला खोला। चाभी के घूमने की आवाज सुन कर होजा बहुत डर गया। उसने सोचा लगता है सुबह हो गयी और उसे अभी तक अॅगूठी का कोई अतापता ही नहीं चला था।

पर उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक दासी उसके पैरों पर गिर कर रो रही थी। वह उससे विनती कर रही थी — "ओ सबसे अच्छे होजा। सुलताना की अॅगूठी मेरे पास है। अगर सुलताना को पता चल गया कि उनकी अॅगूठी मैंने ली है तो मैं तो मारी जाऊॅगी। मुझे बचा लो होजा मुझे बचा लो।"

होजा तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। उसने सोचा "जैसे अल्लाह ने मुझे बचाया है मुझे भी भी इस बेचारी की जान बचानी चाहिये।"

दासी ने उसे सब कुछ बता दिया था सो उसने दासी से कहा — "जाओ मेरी बच्ची। कल तुम बिना किसी के देखे एक बतख को वह अॅगूठी निगलवा देना। और उसके बाद उसकी एक टॉग तोड़

देना। जैसा मैं कहूँ वैसा ही करना। तुम्हें डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।"

जब सुबह हुई तो होजा को बादशाह के सामने बुलवाया गया। होजा ने उससे कहा — "शाह। कल मैं सारी रात इस बात पर सोचता रहा। जानवर रेत में दिखायी देते हैं। सब मुर्गी मुर्गे बतखें टर्की आदि को अपने बागीचे में बुलवाइये।"

शाह ने अपने सब जानवरों को बागीचे में बुलवाया। सारे जानवरों को ध्यान से देखते हुए और कुछ हिसाब करते हुए होजा ने देखा कि बतख की एक टॉग टूटी हुई है।

उसने उसकी तरफ इशारा करते हुए खुश हो कर कहा — "आप इस बतख को मरवा दीजिये तो आपको इसके पेट में अँगूठी मिल जायेगी।" बतख को तुरन्त ही मरवा दिया गया और सब लोगों ने आश्चर्य से देखा कि उसके पेट में अँगूठी थी जैसा कि होजा ने बताया था। बस अब क्या था होजा को बहुत सारा इनाम दिया गया और उसे बड़ा ज्योतिषी बना दिया गया।

इस प्रकार एक मामूली सा कारीगर बड़ा ज्योतिषी बन गया।

27 कंधार के बादशाह के बेटी[13]

पुराने समय में एक बादशाह था जिसके कोई बच्चा नहीं था। इत्तफाक से उसके वज़ीर के भी कोई बच्चा नहीं था। तो एक दिन बादशाह ने अपने वज़ीर से कहा — "देखो हम दोनों के कोई बच्चा नहीं है। चलो हम लोग किसी तीर्थयात्रा पर चलते हैं हो सकता है कि अल्लाह हमारे साथ अपनी कोई करामात कर दे।"

सो इस योजना के अनुसार दोनों घर से चल दिये। कई दिनों तक चलने के बाद वे एक मैदान में एक नदी के पास आये। बादशाह बोले — "वज़ीर। हम लोग यहॉ बैठ कर थोड़ा सुस्ता लेते हैं।"

सो वे दोनों एक पेड़ के नीचे सुस्ताने के लिये बैठ गये। तभी वहॉ पर एक दरवेश प्रगट हुआ और उसने बादशाह को सलाम किया — "अस सलामे कुम बादशाह।"

वे बोले — "वालेकुम सलाम पिता।" और दरवेश को वहीं बैठ जाने के लिये कहा।

फिर बादशाह बोले — "अगर आपको यह मालूम है कि मैं बादशाह हूॅ तो आपको मेरे दुख का भी पता होगा।"

दरवेश बोला — "क्योंकि आपके कोई बच्चा नहीं है इसलिये आप इस तीर्थयात्रा पर निकले हैं।"

---

[13] The Daughter of the Padishah of Kandahar. Tale No 27

कह कर उसने अपनी छाती की जेब से दो सेब निकाले और उन्हें उन दोनों को देते हुए कहा — "जब आप लोग अपने घर अपने महल में पहुँच जायें तो इनमें से आधा सेब आप लोग खुद खा लें और दूसरा आधा अपनी अपनी पत्नियों को दे दें। अल्लाह आपको बच्चे जरूर देगा।" यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

बादशाह और उनका लाला घर लौट आये। घर आ कर उन्होंने आधा सेब खुद खाया और बचा हुआ आधा सेब अपनी अपनी पत्नियों को दे दिया। उचित समय के बाद दोनों के एक एक बेटा हुआ। राज्य भर में खुशियॉ छा गयीं।

धीरे धीरे दोनों बच्चे बड़े होने लगे। तेरह साल की उम्र तक दोनों एक साथ रहते एक साथ खेलते एक साथ खाते पीते। वे कभी अलग नहीं हुए।

एक बार वे शारशी[14] गये तो वहॉ उनको एक आदमी मिला जो एक सन्दूकची **100** लीरा[15] में बेच रहा था। राजकुमार बोला — "मैं यह सन्दूकची खरीद रहा हूँ।" सो वह सन्दूकची खरीद ली गयी। वे उसे घर ले आये और ला कर उसे अपने कमरे में रख दिया।

राजकुमार को यह देखने की उत्सुकता हुई कि उस सन्दूकची में क्या रखा है सो उसने अपने लाला की अनुपस्थिति में उसने उसे

[14] Tcharschi – market
[15] Lira – Italian currency

खोल लिया। उसने देखा कि उसमें तो एक लड़की की तस्वीर रखी हुई थी। उसको देखते ही राजकुमार के होश उड़ गये।

लाला जब वापस आया तो राजकुमार की हालत देख कर घबरा गया। उसने पानी ला कर उसके चेहरे पर छींटे मारे तो किसी तरह से वह होश में आया।

जब राजकुमार ने ऑखें खोलीं तो वज़ीर के बेटे ने उससे पूछा — "राजकुमार तुम्हें क्या हुआ।"

राजकुमार बोला — "लाला मैं इस तस्वीर वाली लड़की के प्रेम में पड़ गया हूॅ। जैसा कि उस पर लिखा हुआ है वह कंधार के बादशाह की बेटी है। अगर वह ज़िन्दा है तो मैं उसे पाने की पूरी कोशिश करूॅगा।"

लाला बोला — "नहीं राजकुमार ऐसा मत करना। इसके पीछे जाने से तुम बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस जाओगे।"

पर राजकुमार सुनने वाला कहॉ था। उसने यात्रा की तैयारी करनी शुरू कर दी। यह देख कर उसका दोस्त बोला — "अगर तुम नहीं मानते हो तो मैं तुम्हारे पीछे यहॉ अकेला नहीं रहूॅगा। हम साथ जायेंगे।"

सो दोनों ने अपने घोड़े तैयार किये और बिना किसी को अपना इरादा बताये दोनों वहॉ से चल दिये। वे हफ्तों चले महीनों चले और फिर एक शहर में आ गये जहॉ उनको एक बुढ़िया मिली। उससे उन्होंने रात को रुकने की जगह मॉगी।

बुढ़िया बोली — "मेरे पास तो एक बहुत ही छोटी सी कुटिया है जिसमें मैं खुद मुश्किल से हिल सकती हूॅ तो मैं तुम्हें वहॉ कैसे ठहरा सकती हूॅ।" दोनों ने उसके हाथ में एक मुट्ठी सोना पकड़ा दिया तो वह उन दोनों को अपने घर में ले गयी।

राजकुमार अपनी प्रिय को याद कर के बार बार आहें भर रहा था। बुढ़िया ने उसकी यह हालत देखी तो उससे इसका कारण पूछा।

इस पर राजकुमार ने उसे राजकुमारी की तस्वीर दिखा दी और बोला — "मॉ देखिये। मुझे इस लड़की से प्यार हो गया है। इसी की वजह से मैं इस अनजान देश में हूॅ। और अगर मैं अपना प्यार नहीं जीत सका तो फिर मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता।"

बुढ़िया बोली — "बेटे। तसल्ली रखो। यह हमारे बादशाह की बेटी है। इसी सप्ताह उसकी शादी तय होनी है। मैं तो बादशाह के महल में बराबर ही जाती आती रहती हूॅ। थोड़ी शान्ति रखो। कल सुबह मैं तुम्हें बादशाह की बेटी की तरफ इशारा करने की कोशिश करूॅगी।"

राजकुमार उस बुढ़िया की इस रुचि से उसका बहुत आभारी था। उसने बुढ़िया का हाथ चूम लिया और अगले दिन राजकुमारी से मिलने की तैयारी करने लगा।

अगली सुबह बुढ़िया जल्दी ही उठ कर महल चली गयी। राजकुमारी की दासियों ने उसका प्रेम से स्वागत किया उसके स्वास्थ्य

का हाल पूछा फिर अपनी बातें करने में लग गयीं। जब बुढ़िया बादशाह की बेटी के साथ अकेली रह गयी तब बुढ़िया को उसे राजकुमार के उसको प्यार करने के बारे में कहने का मौका मिल गया।

राजकुमारी बोली — "पर मॉ आपको तो मालूम है कि इस सप्ताह मेरी मॅगनी होने वाली है।"

बुढ़िया यह सुन कर सन्तुष्ट नहीं थी। उसने राजकुमार की तरफ से विनती की जिद की और उसे बताया कि वह बेचारा किस तरह उसके प्यार में आहें भर रहा था। वह बस उसे केवल एक बार देखना चाहता है।

आखिर राजकुमार के प्रति लड़की की सहानुभूति हो गयी तो उसने कहा — "ठीक है। कल सुबह मैं अपनी सहेलियों के साथ अपने पति की राजधानी जाऊॅगी। रास्ते में एक काला मकबरा पड़ता है। उससे कहना कि वह मेरा वहॉ इन्तजार करे। मैं उससे वहीं मिलूॅगी।"

बुढ़िया घर चली गयी और राजकुमार से ये सारी बातें कहीं। राजकुमार बहुत खुश हुआ। वह लाला को ले कर आधी रात को ही उस जगह के लिये निकल पड़ा।

राजकुमारी भी सुबह उठी तैयार हुई अपनी गाड़ी में बैठी और सब लोग चल दिये। जब वे मकबरे के पास पहुॅचे तो राजकुमारी ने अपनी सहेलियों से कहा कि वह इस मकबरे को कुछ समय के लिये

देखना चाहती है सो तुम लोग जब तक मैं लौट कर आती हूँ मेरा यहीं इन्तजार करो।

जैसे ही दोनों नौजवानों ने एक दूसरे को देखा तो दोनों ही एक दूसरे से प्रेम करने लगे। उनको लगा कि उनके पास तो एक दूसरे से कहने के लिये बहुत कुछ था सो समय जितनी जल्दी बीतने की वे आशा कर रहे थे उससे कहीं ज़्यादा जल्दी बीत गया।

इस बीच लाला उनका पहरा दे रहा था और जब उसे लगा कि राजकुमारी जी की सहेलियॉ अब बेचैन हो रही होंगी उसने राजकुमारी जी के कपड़े पहने और गाड़ी में जा कर बैठ गया। यह सोचते हुए कि लाला बादशाह की बेटी ही थी मेहमानों ने उससे उन्हें इन्तजार कराने के लिये शिकायत की। फिर उनका जुलूस आगे चल दिया।

इसी समय मकबरे पर मिलने वाले दोनों प्रेमियों को लगा कि उन्हें वहॉ बहुत देर हो रही है। तो राजकुमारी ने देखा कि उसके तो वहॉ से कपड़े ही गायब हैं तो वह बहुत चिन्तित हो गयी।

राजकुमार ने उसे तसल्ली देने की कोशिश की — "डरो नहीं राजकुमारी। इस मॅगनी के लिये मेरे लाला ने तुम्हारी जगह ले ली है चलो अब हम यहॉ से चलते हैं वह हमें बाद में ढूँढ लेगा।" यह कह कर वे बुढ़िया के घर चल दिये।

इस बीच लाला शादी के जुलूस के साथ उस बादशाह के महल में घूम रहा था जिसके बेटे से राजकुमारी की शादी होने वाली थी।

जैसे ही लाला को दुलहिन के कमरे में ले जाया गया तो लाला बोला — "मैं यात्रा करते करते थक गयी हूँ शादी को अगले 40 दिन के लिये टाल देना चाहिये ताकि मैं अपनी इस हालत से उभर सकूँ।"

उसकी यह बात मान ली गयी और अब बादशाह की बहन उसी सेवा में उसके साथ ही रहने लगी।

एक दिन जब वे बागीचे में थे और एक तालाब के किनारे बैठे हुए थे एक चिड़िया जो एक पेड़ पर मस्ती से गा रही थी उड़ गयी। तो लाला मुस्कुरा दिया। बादशाह की बहन ने उससे पूछा "तुम हँसी क्यों?"

लाला बोला — "कोई खास बात नहीं।"

बहन बोली — "तो फिर बताओ न।"

लाला बोला — "इस चिड़िया ने कहा कि अगर अभी इसी समय ये दोनों इस तालाब में कूद जायें तो इनमें से एक लड़की आदमी में बदल जायेगी और वह दूसरी से शादी कर लेगी।"

बहन ने पूछा — "क्या यह सम्भव है?" और लाला से जिद की कि इस बात की सच्चाई को परखने के लिये वे दोनों इस तालाब में कूद जाती हैं।

लाला दुखी आवाज में बोला — "नहीं नहीं यह सम्भव नहीं है। क्योंकि अगर मैं आदमी होती तो तुम मुझसे शादी नहीं करतीं।"

बहन बोली — "वल्लाह। मैं तुमसे जरूर शादी कर लेती।"

लाला बोला — "अगर तुम आदमी बन जाओगी तो भी क्या तुम मुझसे शादी कर लोगी?"

बहन बोली — "जरूर।"

और फिर दोनों तालाब में कूद गये। जब वे बाहर निकले तो लाला तो वास्तव में एक आदमी था इसलिये वह एक आदमी के रूप में ही बाहर निकल आया। यह देख कर बादशाह की बहन तो बहुत ही ज़्यादा खुश हो गयी। वह बोली जब अल्लाह ने उसे एक आदमी में बदल दिया है तो अब वे दोनों एक दूसरे से शादी कर सकते हैं।

पर अगर यह बात सबको पता चली तो यह शादी तो हो नहीं पायेगी सो अपनी सुरक्षा के लिये उन दोनों को कहीं भाग जाना चाहिये। उन्होंने एक घोड़ा लिया और वहाँ से भाग गये। बहुत दिनों बाद वे बुढ़िया के घर पहुँचे। वहाँ उन्होंने राजकुमारी और राजकुमार दोनों को सही सलामत पाया।

अगले दिन बुढ़िया को उन्होंने एक मुट्ठी सोना और दिया और वहाँ से अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर चले गये।

जब यह सब हो रहा था तो बादशाह अपनी बहन और बहू दोनों के गायब होने से बहुत परेशान था। वह दुलहिन के पिता के पास गया और फिर दोनों ने मिल कर उनकी खोज करनी शुरू कर दी। पर उन्हें कोई नहीं मिला।

उनकी खोज का परिणाम यह हुआ कि उन्हें एक जादूगरनी मिली जिसने राजकुमारी के पिता से कहा कि वह उनकी बेटी को

ढूँढ देगी और उसे उसके पास ले आयेगी। साथ में वह दूसरे तीनों को भी वापस ले आयेगी जो गायब हैं। बादशाह ने कहा "ठीक है। ले कर आओ। तुम सब भगोड़ों को वापस ले कर आओ तो मैं तुम्हें अच्छा इनाम दूँगा।"

बहुत घूमने घामने के बाद सब लोग एक नदी के किनारे पहुँचे जहॉ वे एक पेड़ के नीचे सुस्ताने के लिये बैठ गये। सब लोग तो वहॉ सो गये पर लाला वहॉ पहरा देता रहा। अचानक दो फाख्ताऐं वहॉ उड़ती हुई आयीं और उस पेड़ पर बैठ गयीं। उनमें से एक रो रही थी दूसरी हॅस रही थी।

रोती हुई चिड़िया ने दूसरी चिड़िया से कहा — "तुम क्यों हॅस रही हो तुमको तो इन सोते हुओं की किस्मत पर रोना चाहिये।"

इस बात पर हॅसती हुई चिड़िया और ज़ोर से हॅस पड़ी और अपने साथी से पूछा कि वह क्यों रो रही थी। रोती हुई चिड़िया बोली — "जब मैं इन सोते हुओं को देखूँ तो क्यों न रोऊँ। क्या तुम्हें पता है कि जब ये लोग पहाड़ी के दूसरी ओर पहुँचेंगे तो जंगल के बाहर इनको एक बहुत सुन्दर घोड़ा दिखायी देगा।

ये लोग उसे पकड़ने दौड़ेंगे और इसी पकड़ने में ये लोग मारे जायेंगे क्योंकि यह कोई घोड़ा नहीं बल्कि एक जादूगरनी है जो इन सबको पकड़ने के लिये आयी है और इन्हें पकड़ कर बादशाह को दे देगी। बादशाह इन्हें मार देगा मैं इसी लिये रोती हूँ।"

दूसरी फाख्ता चिड़िया फिर हॅस पड़ी और बोली — "यह कोई बड़ी बात नहीं है। इन लोगों को तो बस एक काम करना है कि उस घोड़े को एक ही वार में मार डालना है।" लेकिन रोने वाली फाख्ता फिर भी रोती ही रही।

हॅसने वाली फाख्ता ने पूछा — "अब क्या बात है।"

रोने वाली फाख्ता बोली — "चलो मान लिया कि वे लोग इस घोड़े को मार देंगे और बादशाह के पास जाने से बच जायेंगे पर उस छोटे से कुत्ते का क्या होगा जो उन्हें उससे आगे वाली पहाड़ी के उस पार मिलेगा। यह भी इनको पकड़ने के लिये और फिर बादशाह को दे देने के लिये जादूगरनी का जाल है।"

हॅसती हुई फाख्ता बोली — "यह भी कोई बड़ी बात नहीं है अगर ये लोग उसे भी एक ही वार में मार दें तो यहॉ भी ये लोग खतरे से बच जायेंगे।"

रोती हुई फाख्ता बोली — "ठीक है अगर इन्होंने इसे मार दिया तो ये खतरे से बाहर हो जायेंगे पर उस खतरे का क्या जो उनकी शादी की रात उनके ऊपर मॅडरा रहा है। एक राक्षस उनके कमरे में घुसेगा और उन्हें बिस्तर पर से खींच ले जायेगा।"

हॅसती हुई फाख्ता बोली — "तो उसको भी इन्हें मार देना चाहिये। अगर हमारी ये बातें कोई और सुन रहा हो और वह ये सब किसी और से कह देगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।"

और इसके बाद दोनों चिड़ियें वहॉ से उड़ गयीं।

लाला ने जो ये सारी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था सुबह को अपने साथियों को उठाया सब घोड़ों पर सवार हुए और आगे चल दिये। एक लम्बी यात्रा के बाद वे सब पहाड़ी के उस पार पहुँचे तो वहॉ उनको एक बहुत सुन्दर सा घोड़ा दिखायी दिया जो हिनहिनाता हुआ उन्हीं की ओर चला आ रहा था।

राजकुमार उसको देखते ही चिल्लाया — "देखो। वह कितना सुन्दर घोड़ा। चलो चल कर उसे पकड़ते हैं।"

लाला बोला — "रुको। मैं पकड़ कर लाता हूँ।" कह कर वह उसकी ओर भाग गया और अपनी तलवार उसके आर पार कर दी। घोड़ा मर कर वहीं गिर गया। हालॉकि सभी लाला के इस अजीब व्यवहार पर बहुत आश्चर्यचकित हुए पर किसी ने कुछ कहा नहीं। वे फिर आगे चल दिये।

अगली पहाड़ी पार कर के उन्हें एक कुत्ता दिखायी दिया जो बहुत ज़ोर ज़ोर से भौंक रहा था और बहुत ज़ोर ज़ोर से अपनी पूँछ हिला रहा था। राजकुमार ने उसे पकड़ लिया होता अगर लाला ने उसे उसके पकड़ने से पहले ही अपनी तलवार मार न दिया होता।

लाला बोला — "ये दोनों हमारे दुश्मन थे।"

वे फिर आगे चले। बहुत सारे खतरों का सामना करते हुए वे अपने देश की राजधानी में सुरक्षित आ पहुँचे। उन सबके आने की खुशी में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। दोनों की मॅगनी उनकी प्रेमिकाओं से कर दी गयी और फिर **40** दिन और **40** रात खुशियॉ

मनाने के बाद उन दोनों की शादी भी कर दी गयी। पर अभी एक काम बाकी था।

शादी के बाद लाला राजकुमारी के सोने के कमरे में घुस गया और छिप कर राक्षस का इन्तजार करने लगा। बाद में उसकी अपनी पत्नी राजकुमार और राजकुमारी भी आ गये और तीनों अपने अपने पलंगों पर लेट गये। लाला वहॉ अकेला ही पहरा देता रहा।

आधी रात को छत हिली और उसमें से एक राक्षस पलंग को घसीटने के लिये अन्दर आया। वह भयानक प्राणी इतना ज़्यादा बदसूरत था कि कोई भी उसकी ओर बिना घृणा के देख भी नहीं सकता था।

जब वह राक्षस पलंग के पास पहुॅचा और पलंग को अपनी बड़ी बड़ी बॉहों में उठाने ही वाला था कि लाला वहॉ अपनी नंगी तलवार ले कर पहुॅचा और उससे उसके दो टुकड़े कर दिये। यह कर के वह अपने पलंग पर लेट गया और सो गया।

जब दूसरे लोग सुबह को जागे तो उन्होंने एक मरे हुए राक्षस को वहॉ पड़े हुए देखा तो वे तो डर के मारे जम से गये। इन्होंने अपने अपने चेहरे चादर से ढक लिये और चादर के अन्दर भी वे हिल नहीं पा रहे थे।

कुछ देर बाद कमरे के दरवाजे पर खटखटाहट हुई और किसी ने कहा "उठो बहुत देर हो गयी है।"

उन सबने जवाब दिया कि उन्हें उठने में डर लग रहा है क्योंकि कमरे में कोई है। तब दरवाजा खोला गया और जो कमरे में पहले घुसे वे उसमें घुसते ही उसमें से बाहर भी निकल गये क्योंकि उन्होंने वह भयानक राक्षस फर्श पर पड़ा देख लिया था।

जब बादशाह को पता चला तो बादशाह खुद उस राक्षस को देखने के लिये आये। उन्होंने पूछा "यहॉ इसको कौन लाया?"

उनके वज़ीरों में से एक वज़ीर जो लाला से द्वेश रखता था बोला — "लगता है कि यह लाला का काम है। उसके सिवाय यह काम और कौन कर सकता है।"

वज़ीर ने बादशाह से जिद की कि लाला ने ही सुलतान की बेटी को अगवा किया है और इस तरह से उसके बेटे राजकुमार को डराया है। बादशाह ने लाला को बुलवाया और उससे इस बारे में पूछताछ की पर लाला के इस बारे में कुछ भी जानने से मना करने के बावजूद बादशाह ने उसे मौत की सजा सुना दी।

जब लोग उसे मारने के लिये ले जा रहे थे तो शाहज़ादे ने उसके लिये बहुत विनती की — "पिता जी। मेरे लाला को मत मारिये। मैं उसका अपने कई फायदों के लिये बहुत आभारी हूॅ।" पर इनका कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि बादशाह ने कुछ सुना ही नहीं।

लाला ने यह देख कर कि अब तो उसे मरना ही है यह निश्चय किया कि अब वह सबको सब कुछ साफ साफ बता देगा क्योंकि

उसने सोचा कि वह पत्थर का बनना अधिक पसन्द करेगा बजाय इसके कि उसे तलवार से मारा जाये।

उसने ले जाने वालों से विनती की वह एक बार उसे बादशाह के पास ले चलें क्योंकि मरने से पहले वह उनसे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात कहना चाहता है। उसकी यह विनती सुन ली गयी और उसे बादशाह के पास ले जाया गया।

वहॉ पहुॅच कर उसने उनको सारी कहानी सुनायी – जिस पल से उन्होंने राजमहल छोड़ा था और जब तक उसने हॅसने वाली और रोने वाली फाख्ताओं की बातचीत सुनी थी। लो अब तक उसका कमर तक का शरीर पत्थर का बन चुका था।

यह देख कर बादशाह चिल्लाया — "बस करो मेरे बच्चे बस करो। मुझे तुम्हारा विश्वास हो गया।"

लाला बोला — "अब मेरा आधा शरीर तो पत्थर का हो ही गया हूॅ तो फिर अब आगे की बात अनकही क्यों रह जाये।" कह कर उसने अपनी पूरी कहानी सुना दी। जैसे ही उसकी कहानी पूरी हुई तो वह भी पूरा पत्थर का हो गया।

न तो बादशाह का दुखी होना और न ही राजकुमार का रोना लाला को ज़िन्दा कर सका। राजकुमार तो बहुत ज़ोर ज़ोर से बहुत देर तक रोता रहा। उसने उस पत्थर की मूर्ति को अपने बागीचे में शाही शान के साथ खड़ी करवा दी। अब वह अपनी पत्नी का ध्यान रखे बिना ही बस वहीं अपने दिन रात बिताता था।

इस घटना को बीते इसी तरह से सात साल बीत गये कि एक दिन राजकुमार महल के अन्दर जाने वाले दरवाजे पर खड़ा था कि दरवाजा खुला और एक सफेद दाढ़ी वाले पीर जी वहॉ आये तो उसने आदरपूर्वक उन्हें सलाम किया और उनके हाथ चूमे।

पीर जी ने पूछा — "बेटे तुम इतने दुखी क्यों हो?"

राजकुमार ने उन्हें अपना पूरा हाल बता दिया। पीर जी बोले — "बेटे इस मामले को ठीक करने का एक उपाय है।"

राजकुमार ने बड़ी उत्सुकता से उनसे पूछा — "वह क्या।"

पीर जी बोले — "एक सात साल का बच्चा लो उसे अपने दोस्त के पत्थर के शरीर पर रखो और वहॉ उसे कत्ल कर दो ताकि उसका खून सारी मूर्ति पर फैल जाये।

वह खून इस पत्थर को पिघला देगा क्योंकि यह पत्थर तो तुम्हारे दोस्त के शरीर की केवल बाहरी पर्त है। इसके अन्दर का उसका शरीर तो अभी इसके अन्दर है और ज़िन्दा है। इस तरह से तुम्हारा दोस्त फिर से ज़िन्दा हो जायेगा।"

राजकुमार ने परेशान हो कर पूछा — "पर मैं सात साल का बच्चा लाऊॅगा कहॉ से।" क्योंकि उसका अपना बच्चा सात साल का था।

पीर जी बोले — "तुम्हारा अपना बच्चा सात साल का है।"

राजकुमार ने कुछ सोच कर यह भयानक निर्णय लिया "ठीक है। मैं यह करूॅगा।"

वह तुरन्त महल के अन्दर गया और अपने बेटे को बुलाया। राज दरबारियों ने सोचा कि लगता है कि राजकुमार आज बहुत खुश हैं तभी अपने बेटे को अपने पास बुलवा रहे हैं।

उसने अपने बेटे को लिया और उसे बागीचे में रखी अपने दोस्त की मूर्ति के पास ले गया और फिर जैसा कि पीर जी ने उससे कहा था उसने वैसा ही कर दिया।

लो मूर्ति का पत्थर तो धीरे धीरे पिघलने लगा और जल्दी ही लाला ज़िन्दा हो कर उठ खड़ा हुआ। लाला ने इधर उधर देखा तो राजकुमार से कहा — "अरे शाहज़ादे तुमने अपने बेटे को क्यों मार दिया। मैं तो अपने पत्थर के डिब्बे में आराम से था।"

राजकुमार बोला — "मेरे वफादार लाला। तुम इस एक बेटे की बात करते हो। अगर मेरे 100 बेटे भी होते तो मैं तुमको ज़िन्दा देखने के लिये उन सबको भी तुम्हारे ऊपर वार सकता था।"

जब राजकुमार ऐसा कह रहा था तभी वही पीर जी फिर वहॉ आये और बोले — "ओ मेरे बच्चों। मैं तुम लोगों के लिये प्रार्थना करूॅगा और तुम "आमीन" कहना। किसको पता है कि अल्लाह तुम्हारे बच्चे को ज़िन्दा कर दे।"

पीर जी ने प्रार्थना की और दोनों ने आमीन कहा फिर पीर जी ने बच्चे के सिर पर हाथ फेरा तो लो बच्चा तो हॅसता खेलता खड़ा हो गया जैसे कोई नींद से जागा हो। उन्होंने चारों तरफ देखा तो पीर जी तो वहॉ से गायब हो चुके थे।

राजकुमार ने अपने बेटे को गोद में उठा कर चूम लिया और फिर सब महल के अन्दर चले गये। बादशाह ने सबको चूमा। लाला अपनी वफादार पत्नी से फिर मिल गया। यह खुशी की घटना एक बहुत बड़ी दावत के साथ मनायी गयी जो **40** दिन और **40** रात तक चली। उसके बाद सब लोग फिर खुशी खुशी रहे।

28 शाह मेराम और सुलतान सादे[16]

एक बादशाह थे जिनके तीन बेटे थे। जब बादशाह की मृत्यु हो गयी तब तीनों राजगद्दी के लिये लड़ने झगड़ने लगे। आखिर सबसे छोटे लड़के ने यह सुझाव दिया कि सब अपना अपना तीर कमान लेते हैं और तीर फेंकते हैं जिसका तीर सबसे अधिक दूर जा कर पड़ेगा राजगद्दी उसी को मिलेगी।

दूसरे दोनों भाइयों ने उसकी यह बात मान ली। सो सबने अपने अपने तीर फेंके। सबसे बड़े भाई का तीर एक मैदान में जा कर पड़ा। दूसरे भाई का उससे कुछ और दूर जा कर पड़ा। सबसे छोटे भाई का तीर एक झाड़ी में जा कर गिरा।

तीनों अपना अपना तीर लाने के लिये गये तो बहुत अँधेरा छा गया। और इतना अँधेरा छाया कि उन्हें अपने तीर तो नहीं ही मिले बल्कि वे एक दूसरे को भी नहीं देख पाये।

खैर सबसे छोटे भाई को दूर एक रोशनी जलती हुई दिखायी दी। क्योंकि वह थोड़ा अनाड़ी था और उसे घर वापस जाने भी रास्ता नहीं मिल रहा था तो वह उस रोशनी की तरफ ही चल दिया। चलते चलते वह एक महल के पास पहुँच गया।

उस महल के आसपास **40** लोग जमा थे। उसने उन लोगों से पूछा कि वे वहॉ क्या कर रहे थे। वे बोले कि वे डाकू थे। कई

[16] Shah Meram and Sultan Sade. Tale No 28

साल से वे उस महल में घुसने की कोशिश कर रहे थे पर घुस नहीं पा रहे थे।

लड़के ने उसे चारों तरफ से देखा भाला तो पाया कि उसकी दीवार में एक ऐसी जगह थी जहॉ से वह उसके ऊपर जा सकता था। सो पहले वह ऊपर गया और जब वह खुद ऊपर पहुँच गया तो उसने उनको भी एक एक कर के ऊपर बुला लिया।

जैसे जैसे वे आते गये वह उनके सिर काट कर उनके शरीर महल के ऑगन में फेंकता रहा। इसके बाद जब उसने चालीसों डाकुओं को मार दिया उसके बाद वह खुद भी उस महल के ऑगन में नीचे उतर गया। अब वह उस महल के कमरों और ऑगनों में घूम रहा था।

घूमते घूमते वह तीन कमरों में आया जिनमें से हर एक कमरे एक एक लड़की सो रही थी। उनको देख कर उसने सोचा कि इनमें से एक से तो वह खुद शादी कर लेगा और दूसरी दोनों को वह अपने दोनों भाइयों को दे देगा। यह सोच कर उसने अपना चाकू उस कमरे के दरवाजे में लगाया जिस कमरे वाली लड़की से उसे शादी करनी थी और वहॉ से चला आया।

अब सुबह हो गयी थी। उसने देखा कि वह तो अपने तीर के पास ही खड़ा था। अब तीनों तीर खोज लिये गये थे। यह पाया गया कि सबसे छोटे भाई का तीर सबसे अधिक दूर जा कर पड़ा था सो उसको पूरी शानो शौकत के साथ गद्दी पर बिठा दिया गया।

डाकुओं को मारने वाली रात के अगले दिन उस महल का बादशाह जब जागा तो उसने देखा कि उसकी सबसे छोटी बेटी के कमरे के दरवाजे पर एक चाकू लगा हुआ है। उसने उसको दरवाजे में से बाहर खींचने की कोशिश की पर वह तो उसे ज़रा सा भी नहीं हिला सका। उसके नौकरों ने भी कोशिश की पर वे भी सफल नहीं हो सके।

तब उसने राज्य भर में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उसकी छोटी बेटी के कमरे के दरवाजे में लगा हुआ चाकू निकालेगा वह अपनी उस बेटी की शादी उसी से कर देगा।

कई देशों से कई उम्मीदवार उस चाकू को निकालने के लिये आये पर उनमें से कोई भी दरवाजे में से चाकू नहीं निकाल सका। केवल यही तीन राजकुमार रह गये थे सो इनको भी इनकी ताकत और होशियारी जॉचने के लिये बुलाया गया।

सबसे पहले बड़े भाई ने कोशिश की पर वह नहीं निकाल सका। फिर दूसरे ने कोशिश की वह भी सफल नहीं हुआ। तीसरे ने उसको आसानी से खींच कर अपनी म्यान में रख दिया।

यह देख कर बादशाह बोला — "मेरे बेटे। मेरी बेटी तुम्हारी हुई।"

छोटा भाई बोला — "पर मेरे दो भाई और हैं।"

इस पर बादशाह बोला — "तो मैं अपनी दोनों बड़ी बेटियॉ उनको देता हूॅ।"

इसके बाद तीन शादियॉ हुई। तीनों भाई अपनी अपनी दुलहिनों को अपने अपने घोड़ों पर बिठा कर अपनी राजधानी चल दिये।

जब वे जा रहे थे तो जैसे आसमान को चीर कर कोई चीज़ आयी और छोटे भाई की पत्नी को उसके पास से उठा कर ले गयी और गायब हो गयी।

यह एक देव था और 40 डाकू थे जिनकी गर्दनें काट कर छोटे भाई ने फेंक दिया था और जो देव के नौकर थे। ये अपने मालिक के कहने पर लड़की को उठा कर ले जाने के लिये आये थे।

छोटे भाई ने अपने बड़े भाइयों से कहा — "आप लोग घर चलें। मैं भी अपनी पत्नी को खोज कर ले कर वापस आता हूँ।" यह कह कर वह अपने इस मुश्किल और खतरनाक उद्देश्य को पूरा करने के लिये चल दिया।

पहाड़ों के ऊपर और घाटियों में और जंगलों और मैदानों में चलते चलते उसे एक देव स्त्री मिली। यह उस देव की मॉ थी जिसने उसकी पत्नी को उठाया था। जब उसने देव स्त्री को देखा तो वह उससे बहुत डर गया। वह सोचने लगा "यह तो मेरे टुकड़े टुकड़े कर देगी।"

फिर भी वह बहादुरी दिखाते हुए उसकी ओर बढ़ा उसके गले लगा और उसे मॉ कह कर पुकारा तो देव की मॉ बोली — "बेटा तुम कहॉ से आ रहे हो और कहॉ जा रहे हो?"

तो उसने उसको अपने आने का उद्देश्य बताया।

मॉ बोली — "जिस देव ने तुम्हारी पत्नी को चुराया है वह मेरा बेटा है। वह सालों से इस मौके की तलाश में था कि वह उसे उड़ा ले जाये। लड़की को उससे लेना बहुत मुश्किल काम है फिर भी तुम कोशिश कर सकते हो।

मैं तुम्हें रास्ता बताती हूॅ तुम उस रास्ते पर चले जाओ। आगे जा कर तुम्हें मेरी बहन मिलेगी। तुम उसे मेरा सलाम कहना। हो सकता है कि वह तुम्हारी कुछ सहायता कर दे।"

छोटा भाई उसके बताये रास्ते पर चल पड़ा। आगे चल कर उसे देव की मॉ की बड़ी बहन मिली तो उसने उसको भी मॉ कह कर सलाम किया और उसकी छोटी बहन का सलाम भी दिया। उसको भी उसने अपनी कहानी सुनायी और उससे सहायता मॉगी। इस बहन ने उसे अपनी बड़ी बहन के पास भेज दिया कि शायद वह उसकी सहायता कर सके।

भाई फिर चला और सबसे बड़ी बहन के पास आया। उसको भी उसने मॉ कह कर सलाम किया और उसकी बहनों का सन्देश दिया। अपनी परेशानियॉ बतायीं और सहायता मॉगी।

उसने कहा कि देव के रहने की जगह पहुॅचना ही बहुत मुश्किल काम है पर मैं तुम्हें एक तरीका बताती हूॅ जिससे तुम उसके घर तक आसानी से पहुॅच जाओगे।

तुम समुद्र के किनारे फलॉ फलॉ जगह ढूँढना फिर वहॉ **40** दिन तक इन्तजार करना। उस समय में समुद्री घोड़े[17] केवल एक बार ही किनारे पर आते हैं।

तुम एक ऊन की लच्छी लेना और अगर तुम उनमें से एक को पकड़ने में भी सफल हो जाओ तो उसे पकड़ कर मेरे पास ले आना। यहॉ हम उसे खाना पीना खिलायेंगे और **40** दिन तक प्रशिक्षण देंगे। उसके बाद फिर तुम उस पर चढ़ कर जहॉ चाहो वहॉ जा सकते हो।

सो वह भाई फिर से एक बार अपनी यात्रा पर निकल पड़ा और समुद्र के किनारे आ पहुँचा। चालीसवें दिन छोटे छोटे समुद्री घोड़े किनारे पर आये। उसने उनमें से एक समुद्री घोड़ा अपनी ऊन की लच्छी से पकड लिया और ला कर देव की मौसी को दे दिया।

जब करीब करीब **40** दिन हो गये तो मौसी ने समुद्री घोड़े से पूछा — "क्या अब तुम इस लड़के को जहॉ यह चाहे वहॉ ले जा सकते हो?"

समुद्री घोड़ा बोला — "मैं अभी भी छोटा हूँ और वह देव जो इस लड़के की पत्नी को उठा कर ले गया है वह मेरे पिता हैं। मैं कितना भी जल्दी भागूँ पर फिर भी वह मुझे निश्चित रूप से पकड़ ही लेंगे। पर एक तरकीब हो सकती है कि जब यह अपनी पत्नी को साथ ले कर मेरे ऊपर चढ़ कर भाग रहा हो तो यह मेरी गर्दन में

[17] Translated for the words "Sea Horse" – it is kind of fish. See its picture above.

अगर एक पिन चुभो दे तो उस दर्द की वजह से मैं शायद बहुत तेज़ भाग पाऊॅ। पर अगर देव ने हमें पकड़ लिया तो हम सब गये।"

यह सुन कर लड़का समुद्री घोड़े पर चढ़ा और देव के महल की ओर चल दिया। जब वह वहॉ पहुॅचा तो देव सो रहा था।

जब लड़की ने अपने पति को देखा तो चिल्लायी — "ओ मेरे शाहज़ादे। मुझे यहॉ से बाहर निकालने का यही समय है क्योंकि अगर देव जाग गया तो वह हम सबको मार डालेगा।"

लड़के ने तुरन्त ही अपनी पत्नी को उठाया दोनों समुद्री घोड़े पर बैठे और वहॉ से भाग लिये। जब देव के घोड़े ने उन्हें भागते देखा तो हिनहिनाया। उसके हिनहिनाने की आवाज से देव की ऑख खुल गयी।

उसने चारों ओर देखा तो देखा कि लड़की तो वहॉ से गायब थी। बिजली की सी तेज़ी से देव अपने घोड़े पर सवार हुआ और उनके पीछे दौड़ पड़ा।

लड़के ने समुद्री घोड़े की गर्दन में लगातार पिन चुभो कर उसको दर्द देने की कोशिश की ताकि वह तेज़ी से भागे। पर समुद्री घोड़े को अपने ऊपर अधिक विश्वास नहीं था। वह बोला — "मेरे पिता जी आ रहे हैं वह मुझे जरूर ही पकड़ लेंगे।"

यह सुन कर लड़के ने पिन को उसके शरीर में उसके सिर तक घुसा दिया। समुद्री घोड़े ने भी देव की मौसी तक पहुॅचने के लिये अपनी पूरी ताकत लगा दी।

जैसे ही देव की मौसी ने उनको देखा तो वह चिल्लायी — "अब तुम लोगों को डरने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि अगर देव को तुम्हें मारना होता तो वह तुमको इससे पहले ही पकड़ कर तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर डालता।

अब तुम अपनी पत्नी को ले कर जा सकते हो पर तुम मुझे रोज एक आदमी भेजना मत भूलना। अगर तुम किसी भी दिन ऐसा करना भूले तो मैं उसी दिन रात को तुम्हारे कमरे में आऊॅगी और तुम दोनों को खा जाऊॅगी।"

इस बीच उसके भाई उन दोनों के आने का इन्तजार कर रहे थे। उन दोनों को देख कर वे चारों बहुत खुश हुए और **40** दिन और **40** रात तक बहुत आनन्द मनाया। अब इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इस हॅसी खुशी में एक दिन छोटा भाई देव की मौसी को एक आदमी भेजना भूल गया।

अब इसका नतीजा यह निकला कि देव की मौसी उसी रात उनके कमरे में आयी और जब वह लड़का अपनी पत्नी के साथ सो रहा था तो वह उसका पलंग ही उठा कर ले गयी। सो अगले दिन जब उनकी ऑख खुली तो वे दोनों उसके चंगुल में थे।

लड़के की निराशा और पछतावे का एक मुख्य कारण यह था कि यह सब उसकी लापरवाही के कारण हुआ था। देव की मौसी ने उसको उसकी बेवफाई के लिये बहुत डॉटा और उनको खाने की तैयारी करने लगी।

खैर लड़के ने उनको छोड़ देने की उससे कुछ इस तरह से रो रो कर विनती की कि वह स्त्री इस शर्त पर मान गयी कि वह वापस लौटते ही उसके नुकसान की भरपाई करेगा और आगे भी लगातार उसे आदमी भेजता रहेगा। ऐसा करने के वायदा करने के बाद ही देव की मौसी ने उन दोनों को छोड़ा।

जब वे लौट रहे थे तो थक जाने के कारण वे सुस्ताने के लिये एक जगह बैठ गये और सो गये। अचानक तभी देव वहॉ आया और इससे पहले कि लड़का लड़की को उसके चंगुल से बचा सकता वह लड़की को उठा कर ले गया।

वह अब दूसरी बार बहुत दुखी था। वह निराश हो कर इधर उधर देख रहा था कि उसको वहॉ एक कुॅआ दिखायी दिया। उसको बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने उस कुॅए में से किसी की कान फाड़ने वाली आवाज और ज़ोर ज़ोर से गाने की आवाज सुनी।

उसने सोचा कि नीचे क्या हो सकता है। वह यह सोच ही रहा था कि एक चिड़िया कुॅए में निकल कर बाहर की ओर उड़ी। उड़ते समय उसने भी अपने चारों ओर देखा तो वहीं लड़के को खड़ा पाया तो उसने उससे पूछा "क्या बात है ओ नौजवान। तुम्हें क्या चाहिये?"

लड़का बोला — "मैं यहॉ एक अजनबी हूॅ मैंने कुॅए में से आवाज सुनी तो उत्सुकतावश यह जानने के लिये इधर चला आया कि यहॉ क्या हो रहा है।"

चिड़िया बोली — "यह परी बादशाह के बेटे की शादी का दिन है और मैं मेहमानों के लिये पानी लेने जा रही हूॅ।"

लड़के ने पूछा कि क्या वह भी परी बादशाह के बेटे की शादी देख सकता है तो चिड़िया बोली "अभी तो मैं मेहमानों के लिये पानी लेने जा रही हूॅ। मैं वापस आ जाऊॅ तो तुम्हें कुॅए में नीचे ले चलूॅगी।" लड़के ने वहॉ इन्तजार करने का निश्चय किया।

कुछ देर में चिड़िया पानी ले कर वापस आ गयी और लड़के से बोली — "अगर मैं तुम्हें नीचे ले कर जाऊॅ और वह तुम्हें देख लें तो वे सब तुम्हारी ओर दौड़ेंगे और कहेंगे कि इस सांसारिक आदमी की यहॉ कोई जरूरत नहीं है।

इस हालत में तुम बादशाह के पास जाना और उनसे अपने साथ हुई परेशानी को दूर करने में सहायता मॉगना। जब वह पूछें कि तुम्हें क्या परेशानी है तो तुम उन्हें तुम्हें जो भी परेशानी हो बता देना।"

यह कह कर चिड़िया उस लड़के को हाथ पकड़ कर कुॅए में नीचे ले गयी। नीचे जाकर लड़के ने अपने आपको एक बागीचे में पाया जिसमें बहुत सारे पेड़ खड़े थे और उसमें बहुत तरह के फूल खिले हुए थे। वह सब कुछ इतना सुन्दर शानदार था कि उसे लगा जैसे वह स्वर्ग में आ गया है।

उसने वहॉ बहुत सारी चिड़ियें देखीं जो उसको देखते ही यह कहते हुए उसके पास आ पहुॅचीं — "ओ आदमी के बच्चे। तुम

यहॉ क्यों आये हो और तुम्हें हमसे क्या चाहिये।" यह सुनते ही लड़का बादशाह की ओर चला और जा कर उससे अपना दुखड़ा रोया।

परी बादशाह ने पूछा — "ओ नौजवान। यह कैसे सम्भव हुआ कि धरती का एक बच्चा यहॉ आ गया।"

लड़के ने उस चिड़िया की ओर इशारा किया जो पानी ले कर आयी थी तो बादशाह ने उसे अपने पास बुलाया और कहा — "इस नौजवान को जहॉ यह चाहे वहॉ ले जाओ। अगर तुम्हें किसी परेशानी का सामना करना पड़े तो बस "मेरे शाह" पुकार लेना मैं तुम्हारी मुश्किल दूर कर दूँगा।"

चिड़िया ने लड़के को अपनी पीठ पर बिठाया और सीधे उसे देव के महल में ले गयी। उन्होंने राजकुमारी को उसे दे दिया तो चिड़िया उन दोनों को ले कर सातवें आसमान पर चली गयी। देव ने उनका पीछा भी किया पर वह उन्हें ढूँढ नहीं सका सो निराश हो कर वह अपने महल वापस चला गया।

अब खतरा टल गया था सो चिड़िया दोनों को साथ ले कर नीचे उतर आयी और कुँए पर आ गयी। वह उन्हें ले कर बादशाह के पास गयी तो बादशाह ने उनसे कहा — "अगर तुम आज से अपना नाम शाह मेराम और अपनी पत्नी का नाम सादे सुलतान रख लो तो फिर तुम्हें किसी बात का डर नहीं रहेगा। पर ध्यान रहे तुम अपने पुराने नाम भूल कर भी इस्तेमाल नहीं करना।"

दोनों ने अपने नये नामों को ध्यान में रखा और फिर अपने घर को वापस चल दिये। वहॉ से सुरक्षित लौट कर उन्होंने अपनी शादी दोबारा मनायी और शान से उसे **40** दिन **40** रात तक मनाया।

इकतालीसवें दिन देव फिर से उनके सोने के कमरे में घुसा और लड़की को उठा कर ले जाने लगा तो लड़की चिल्लायी "ओ शाह मेराम।" तो राजा ने पूछा "क्या बात है सादे सुलतान।"

ये शब्द सुनते ही देव हमेशा के लिये पत्थर बन गया। अगले दिन उस मूर्ति को बागीचे में तालाब के पास लगा दिया गया। अब शाहज़ादा और राजकुमारी अक्सर अपने बागीचे में घूमने जाते और तालाब के पास बैठ जाते।

कभी कभी वे परी बादशाह की चेतावनी भूल जाते और एक दूसरे को अपने पुराने ही नामों से पुकार लेते पर जैसे ही वे ऐसा करते देव की पत्थर की मूर्ति टूट कर बिखरने को हो जाती।

यह देख कर वे फिर तुरन्त ही अपने आपको सही भी कर लेते और एक दूसरे को नये नामों से पुकारते। इससे वह मूर्ति दोबारा जुड़ कर एक हो जाती और वह अपने ऊपर पड़े हुए जादू से आजाद नहीं हो पाता।

इन घटनाओं के काफी समय बाद एक दिन राजकुमारी ने सपने में एक दरवेश देखा जिसने उससे कहा "अगर तुम फिर से अपने नये नाम भूल जाओ और देव मूर्ति तोड़ कर बाहर निकल जाये तो तुम इस तालाब का पानी ले कर देव की मूर्ति के सिर के ऊपर छिड़क

देना। पत्थर में से सोना और हीरे निकल कर तालाब में गिर पड़ेंगे और तुम लोग फिर देव के खतरे से हमेशा के लिये बाहर हो जाओगे।"

जागने पर राजकुमारी ने पति को अपने सपने के बारे में बताया तो राजकुमार ने पूछा — "और तब क्या हो अगर मैं अपना नया नाम भूल जाऊँ और तुम मूर्ति के सिर पर पानी डालना भूल जाओ तब क्या होगा?"

पर राजकुमारी ने कहा — "बस आशा करो कि ऐसा नहीं होगा। हम भूलें नहीं।" राजकुमार इस बात से सन्तुष्ट हो गया।

एक दिन जब वे तालाब के किनारे बैठे हुए थे तो अचानक ही मूर्ति फट गयी और उन्होंने उसमें से देव को बाहर निकलते देखा तो राजकुमारी चिल्लायी "ओ शाह मेराम।" तो राजकुमार ने बजाय तालाब का पानी उस मूर्ति पर डालने के अपना चाकू निकाला और देव के ऊपर हमला कर दिया।

इस पर देव ने राजकुमार को कमर से पकड़ लिया और उसे ले कर जाने ही वाला था कि राजकुमार चिल्लाया "ओ सादे सुलतान।" तुरन्त ही देव उस पत्थर की मूर्ति में घुस गया और तालाब में गिर पड़ा। तालाब का पानी उसके खून से लाल हो गया।

कुछ दिन बाद वे एक दिन फिर तालाब के पास बैठे हुए थे और मूर्ति की ओर देख रहे थे कि वहॉ वह दरवेश आया जिसे राजकुमारी ने सपने में देखा था।

वह बोला — "अगर तुमने मेरी बात मान कर इसकी मूर्ति के सिर पर तालाब का पानी फेंक दिया होता तो आज तालाब में सोना और हीरे होते खून नहीं। यह कहने की हिम्मत भी नहीं करना "काश हमने ऐसा किया होता।" कहीं ऐसा न हो कि देव फिर से ज़िन्दा हो जाये और तुम लोगों को इस तरह ले जाये कि तुम लोग आपस में एक दूसरे से कभी मिल ही न सको।

जब दरवेश चला गया तो राजकुमार ने कहा — "हम अब इस जगह को बन्द किये देते हैं ओ मेरे सादे सुलतान। क्योंकि कभी ऐसे किसी मौके पर अगर हम फिर भूल गये तो फिर देव के बाहर निकलने का कोई मौका नहीं।"

उस दिन के बाद से उन्होंने बागीचे को हमेशा के लिये छोड़ दिया। मूर्ति से खून बराबर बह रहा है और तालाब भी भर रहा है पर राजकुमार और राजकुमारी दोनों बागीचे से दूर खुशी और शान्ति से रह रहे हैं।

29 जादूगर और उसका शिष्य[18]

एक बार एक स्त्री थी जिसके एक बेटा था। वह उसे जिस स्कूल में भी भेजती वह वहीं से भाग जाता। जब मॉ बहुत परेशान हो गयी तो उसने अपने बेटे से पूछा — "मैं तुझे कहॉ भेजूॅ?"

इसके जवाब में उसने कहा — "तुम मुझे कहीं नहीं भेजो बल्कि तुम मेरे साथ चलो। जो जगह मुझे पसन्द आ गयी तो फिर मैं वहीं चला जाऊॅगा और वहॉ से नहीं भागूॅगा।"

सो फिर वह उसको अपने साथ बाजार ले गयी। वहॉ उन्होंने बहुत सारे लोग बहुत सारे तरह के हाथ का काम करते देखे उनमें से एक जादूगर भी था।

लड़का इस जादूगर को देख कर उसकी ओर आकर्षित हो गया और अपनी मॉ से विनती की कि वह उसे वहॉ काम दिलवा दे। सो वह उस जादूगर के पास गयी और उससे अपने बेटे की इच्छा बतायी। दोनों का मामला ठीक से पट गया और मॉ ने अपने बेटे को उसकी निगरानी में छोड़ दिया। अब वह जादूगर लड़के का मालिक था।

थोड़े ही समय में लड़के ने जादूगर से वह सब सीख लिया जो वह उसे सिखाना चाहता था। एक दिन लड़के के मालिक ने लड़के से कहा — "मैं अपने आपको एक भैंसे में बदल लेता हूॅ। तुम मुझे

[18] The Wizard and His Pupil. Tale No 29

बाजार ले चलो और बेच दो पर ध्यान रखना कि मेरी रस्सी तुम अपने पास ही रखना।"

लड़का मान गया। जादूगर ने अपने आपको एक भैंसे में बदला लड़के ने उसके गले में एक रस्सी बॉधी और उसे बाजार की ओर ले चला। उसने उसे एक बेचने वाले को दिया जिसको उसने बेच दिया। एक आदमी ने उसे **500** पियास्त्रे का खरीद लिया।

पर लड़के ने उसकी रस्सी नहीं बेची जैसा कि उससे कहा गया था सो शाम को भैंसा आदमी का रूप रख कर घर वापस आ गया।

अगले दिन जादूगर ने अपने शिष्य से कहा कि वह अब एक घोड़े में बदल जायेगा और वह उसे बाजार में ले जा कर बेच आये पर वह उसकी रस्सी न बेचे। लड़के ने कहा "मैं जानता हूॅ।"

सो लड़का उस घोड़े को बाजार ले गया और उसे **1000** पियास्त्रे को बेच दिया। लड़के ने उसकी रस्सी अपने पास रख ली थी वह घोड़ा बेच कर घर आ गया।

तभी उसके दिमाग में एक विचार कौंधा कि मुझे इस जादू को अपने ऊपर भी लागू कर के देखना चाहिये कि मैं यह कर सकता हूॅ या नहीं।

यह सोच कर लड़का अपनी मॉ के पास गया। मॉ के पास जा कर वह अपनी मॉ से बोला — "मॉ। मैंने गुरू जी से जो कुछ सीखना था सीख लिया। मुझे वहॉ जादूगरी सिखवाने का बहुत बहुत धन्यवाद। अब इससे मैं बहुत सारा पैसा कमा सकूॅगा।"

बेचारी स्त्री कुछ नहीं समझी कि उसका बेटा क्या कह रहा था। उसने पूछा — "मेरे बेटे। तुम क्या करने वाले हो। मैं आशा करती हूॅ कि तुम फिर से नहीं भाग जाओगे और मुझे परेशान नहीं करोगे।"

लड़का बोला — "नहीं मॉ बिल्कुल नहीं। कल मैं एक नहानघर में बदल जाऊॅगा। तुम उसको बेच देना पर ध्यान रखना कि उसके दरवाजे की चाभी मत बेचना उसे अपने पास ही रखना वरना मैं फिर कभी वापस नहीं आऊॅगा।"

जब बेटा अपनी मॉ से इस तरह की बातें कर रहा था जादूगर उस आदमी की पकड़ से छूट कर भाग आया जिसे घोड़ा बेचा गया था। घर आ कर उसने देखा कि उसका शिष्य तो वहॉ नहीं है। इस पर वह बहुत गुस्सा हुआ।

उसने कहा — "ओ बेकार आदमी। इस बार तूने मुझे सारा का सारा बेच दिया। पर इन्तजार कर अब तू उस समय का जब तू मेरे हाथ फिर से लगेगा।" उस रात वह घर पर ही रहा अगले दिन वह अपने बेकार के शिष्य को खोजने के लिये निकल पड़ा।

उधर अगले दिन लड़के ने अपने आपको एक नहानघर में बदला और उसकी मॉ उसकी नीलामी के लिये खड़ी हो गयी। शहर के सारे लोग उसे देखने आने लगे। नीलामी करने वाले के चारों ओर लोगों की भीड़ लग गयी। वह था ही इतना शानदार।

इस भीड़ में वह जादूगर भी खड़ा था। उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह सचमुच का नहानघर नहीं था बल्कि वह तो उसका अपना शिष्य था जो उसके सामने नहानघर के रूप में खड़ा था।

उसने किसी से कुछ कहा नहीं पर जब सारे पाशा बे आदि सभी ने अपनी अपनी कीमत लगा दी तो जादूगर ने सबसे ऊॅची कीमत लगा कर उसे खरीद लिया सो वह नहानघर उसे दे दिया गया। स्त्री को बुलाया गया।

जब वह स्त्री को पैसे देने वाला ही था कि स्त्री ने कहा कि वह उसे उसकी चाभी नहीं दे सकती। जादूगर बोला कि वह भी उसे पैसे नहीं दे सकता जब तक कि वह उसे चाभी न दे। फिर उसने उसे दिखाया कि उसके पास बहुत पैसा था।

उसने उससे यह भी कहा कि वह चाभी उसके किसी मतलब की नहीं थी अगर उसे कोई चाभी चाहिये भी थी तो वह कोई और चाभी बाजार से खरीद सकती थी। पास में खड़े लोगों ने जादूगर का समर्थन किया।

अब क्योंकि स्त्री को उस चाभी को खरीदार को न देने का मतलब नहीं मालूम था सो उसने कुछ देर के बाद जादूगर से नहानघर का पैसा ले कर उसे चाभी दे दी। जब लड़के की मॉ ने जादूगर को चाभी दे दी तो लड़के को समझ में आ गया कि अब उसका भी समय आ गया। वह एक चिड़िया बन कर उड़ गया।

जादूगर ने अपने आपको एक बाज़ के रूप में बदला और उसके पीछे पीछे उड़ चला। वे बहुत देर तक उड़ते रहे और एक दूसरे शहर में पहुँच गये। वहॉ वे वहॉ के बादशाह के महल में पहुँच गये जहॉ बादशाह अपने बागीचे में बैठा बैठा अपने दरबारियों के साथ आनन्द कर रहा था।

लड़के के पास अब कोई और चारा नहीं था सो उसने अपने आपको एक गुलाब में बदला और बादशाह के पैरों पर गिर पड़ा। बादशाह तो उस गुलाब को देख कर चौंक गया कि वह गुलाब आया कहॉ से। क्योंकि वह मौसम तो गुलाबों का मौसम नहीं था।

वह बोला — "लगता है यह अल्लाह की कृपा है। इसकी तो सुगन्ध ही इतनी प्यारी है जो मौसम में आने वाले गुलाबों में भी नहीं होती।"

जादूगर अब अपनी आदमी की शक्ल में आ गया था। अब वह बागीचे में संगीत का एक साज़ ले कर घुसा। क्योंकि वह वह साज़ बजा रहा था सो बादशाह ने उसे देख लिया। उसने उसे अपने सामने बुलवाया और उससे कुछ गाने बजाने के लिये कहा।

जब यह गा रहा था तो एक गीत में इसने बादशाह से उसे गुलाब देने के लिये कहा। यह सुन कर बादशाह बहुत नाराज हुआ उसने कहा — "तुमने क्या कहा? मैं यह गुलाब तुम्हें दे दूँ। नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह गुलाब तो मुझे अल्लाह ने दिया है। ओ खानाबदोश। तुम इसे मुझसे मॉग भी कैसे सकते हो।"

जादूगर बोला — "बादशाह। मेरा काम तो बिल्कुल साफ है। मुझे आपके इस गुलाब से प्यार हो गया है जो आपके पास है। मैं इसे कई सालों से खोज रहा हूॅ पर अब तक यह मुझे मिला नहीं था। अगर आप मुझे इसे नहीं देंगे तो मैं आत्महत्या कर लूॅगा। क्या यह मेरे ऊपर दया नहीं होगी।

मैं इसका पहाड़ों के ऊपर भी पीछा करता आ रहा हूॅ और गिर पड़ा पर अब मैंने इसे आप जैसे दयालु बादशाह के हाथों में पाया है। क्या आप मेरे जैसे गरीब पर दया नहीं करेंगे जिसकी प्यार रोशनी और खुशी सब खो गयी है।"

बादशाह यह सुन कर बहुत द्रवित हो गया। बादशाह ने सोचा "आखिर यह गुलाब मेरे किस काम का। मैं इसे इस बदकिस्मत को ही दे देता हूॅ।" ये शब्द कह कर वह आगे बढ़ा और वह फूल जादूगर को दे दिया।

पर इससे पहले कि जादूगर उस फूल को पकड़ता वह फूल फर्श पर नीचे गिर पड़ा और एक बाजरे के ढेर में बदल गया। जादूगर भी तुरन्त ही एक मुर्गे में बदल गया और वह उसे खा गया।

इत्तफाक से बाजरे का एक दाना बादशाह के सिंहासन के पाये के पास जा कर गिर गया था। वह तुरन्त ही एक लड़का बन गया और उसने मुर्गे की गर्दन मरोड़ दी। यानी शिष्य ने अपने गुरू को मार डाला।

ये सब आश्चर्यजनक चीज़ें देख कर बादशाह तो हक्का बक्का रह गया। फिर उसने लड़के से इस पहेली का मतलब समझाने के लिये कहा। उसने बादशाह को शुरू से ले कर आखीर तक का सारा किस्सा सुना दिया।

बादशाह उसके जादू की होशियारी सुन कर बहुत खुश हुऐ। उन्होंने अपनी बेटी की शादी उस लड़के से कर दी। अब उस लड़के की मॉ भी वहीं आ कर रहने लगी। सब लोग खुशी खुशी अपना जीवन बिताने लगे।

30 तीस परियों का बादशाह[19]

बहुत समय पुरानी बात है जब परियॉ रहा करती थीं तब मैं अवध्य बागीचों में रहा करता था। पर मैं एक ऐसे बागीचे में रहा जिसमें मेरे साथ बहुत बुरा हुआ।

मैंने अपना घोड़ा रंगा तो मुझे लगा कि उस घोड़े का रंग स्वाभाविक ही था। फिर मैंने एक गधा खरीदा जिसे मैंने सोचा कि वह मेरी पत्नी थी। एक दिन उस गधे ने मुझे दुलत्ती मारी तो मैंने सोचा कि मेरी पत्नी मुझे सहला रही है।

पुराने खंडहरों में सोते हुए जिनमें उल्लू रहते थे मैं और आगे चला जब तक मेरे साथ कुछ और बुरा नहीं हो गया।

तोफेन्स[20] की बड़ी सी गेंद को मैंने फल समझ कर अपनी जेब में रख लिया। गलाटा की बड़ी मीनार को मैंने भोंपू समझ कर अपने मुॅह में रख लिया था। किज़ कुलेसी[21] के किले को मैंने भालू समझ कर गले लगा लिया। मैं समुद्र के बीच में उसे चट्टान समझ कर चिपक गया था।

संक्षेप में मैं सारे बेवकूफों में सबसे बड़ा बेवकूफ हूॅ। इन कहानियों का वर्णन करना ही मेरा पाप है।

---

[19] The Padishah of the Thirty Peris. Tale No 30

[20] Tophanes

[21] Kyz Kulesi

एक बार की बात है कि एक बादशाह था जिसकी एक बेटी थी। वह बहुत सुन्दर थी बिल्कुल पूरे चॉद की तरह। वह साइप्रस के पेड़ की तरह पतली दुबली थी। उसकी ऑखें जलते हुए कोयलों की तरह से चमकदार थीं। उसके बाल रात की तरह काले थे। उसकी भौंहें धनुष जैसी थीं और उसकी पलके तीर के समान थीं।

उसके महल में एक बहुत बड़ा बागीचा था जिसके बीच में एक बहुत बड़ा तालाब था। राजकुमारी रोज ही उसके किनारे पर बैठ कर कपड़े सिलती कसीदाकारी करती।

एक बार उसकी ऑगूठी उसके पास की मेज पर रखी थी एक छोटी सी फाख्ता उड़ती हुई आयी और उसकी ऑगूठी अपनी चोंच में उठायी और उड़ गयी। वह चिड़िया इतनी प्यारी थी कि राजकुमारी को उससे प्यार हो गया। अगले दिन उसने मेज पर अपना कंगन रख दिया। चिड़िया उसको भी ले कर उड़ गयी।

राजकुमारी को तो अब उससे इतना प्यार हो गया कि उसकी भूख प्यास नींद सब गायब हो गयी। उससे तो अब अगले दिन का भी इन्तजार नहीं हो पा रहा था।

तीसरे दिन उसने मेज पर से लेस उठायी और अपने पास रख ली। चिड़िया पहले की तरह से आयी और लेस ले कर उड़ गयी। राजकुमारी की अब इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि वह अपनी जगह से उठ सके। वह ऑसू बहाती हुई महल की ओर भाग गयी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

एक दासी ने उसे इतना दुखी देखा तो उससे पूछा — "राजकुमारी जी आप इतनी दुखी क्यों हैं? क्या किसी ने आपका दिल दुखाया है?"

बादशाह की बेटी ने रोते हुए और उसॉसें लेते हुए कहा — "मेरा दिल बहुत दुखी है।"

राजकुमारी बादशाह की अकेली बच्ची थी इसलिये उसके पिता को उनकी बेटी की बीमारी के बारे में खबर देना भी बहुत मुश्किल काम था पर राजकुमारी की हालत दिन ब दिन बिगड़ती जा रही थी। वह रोज पीली पड़ती जा रही थी।

सो बादशाह को उसके बारे में खबर देनी ही पड़ी। यह सुन कर बादशाह अपनी बेटी को देखने आये और उसे देख कर वह बहुत दुखी हुए। उन्होंने अपने राज्य के सारे डाक्टर होजा आदि बुलाये पर कोई भी उसका इलाज नहीं कर सका। न कोई उसका रोग ही पहचान सका।

अगले दिन बादशाह के वज़ीर ने बादशाह से कहा — "ये डाक्टर और होजा आपकी बेटी का इलाज करने के योग्य नहीं है। हमको इनका इलाज किसी दूसरी जगह ढूँढना पड़ेगा।"

फिर उसने बादशाह को सलाह दी कि वह एक नहानघर बनवाये जिसका पानी सब बीमारियों का इलाज करेगा। और उस नहानघर में जो कोई भी नहाने आयेगा वहॉ उसको अपनी कहानी सुनानी पड़ेगी।"

एक शाही घोषणा भी की गयी कि जो इस नहानघर में नहायेंगे उनमें से जो गंजे होंगे उनके बाल आ जायेंगे बहरे सुनने लगेंगे अन्धे देखने लगेंगे और लंगड़े चलने लगेंगे।

अब क्या था लोग उस नहानघर में नहाने के लिये भीड़ में आने लगे। हर आदमी जो उसमें नहाता था उसे वहॉ कोई पैसा नहीं देना पड़ता था और वहॉ नहाना भी उसकी बीमारी ठीक कर देता था। फिर अपनी कहानी सुना कर उसे जाने दिया जाता था।

एक आदमी की लॅगड़ी मॉ थी। उन्होंने भी इस नहानघर के इलाज के बारे में सुना तो बेटा मॉ से बोला — "मॉ चलो हम भी वहॉ चलते हैं। हो सकता है कि हम भी वहॉ जा कर ठीक हो जायें।"

गंजे की मॉ बोली — "बेटा मैं कैसे जा सकती हूॅ जबकि मैं तो अपने पैरों पर भी खड़ी नहीं हो सकती।"

बेटा बोला — "मॉ उसकी तुम चिन्ता मत करो। उसे मैं देख लूॅगा।" यह कर उसने अपनी मॉ को अपनी पीठ पर बिठाया और नहानघर चल दिया।

चलते चलते बेटा थक गया। रास्ते में एक नदी पड़ी तो उसने मॉ को अपनी पीठ से उतार कर उसके किनारे मैदान में नीचे बिठा दिया और वह खुद भी आराम करने के लिये बैठ गया।

तभी एक मुर्गा पानी का एक जग अपनी पीठ पर ले कर जा रहा था। गंजे को उत्सुकता हुई कि वह कहॉ जा रहा था सो वह

उसके पीछे पीछे चल दिया। अब वह मुर्गा एक किले तक आ गया था। किले की दीवार के एक छेद से हो कर वह उसके अन्दर घुस गया। वह गंजा भी उसके पीछे पीछे उस किले में चला गया।

अब वह एक शाही महल के सामने खड़ा था। वहॉ कोई जीवित प्राणी नहीं था सो वह उसमें आगे बढ़ता चला गया। सीढ़ियों से चढ़ कर वह एक बड़े कमरे में पहुॅच गया। फिर वहॉ से वह एक सजे हुए कमरे से दूसरे सजे हुए कमरे में घूमता फिरा जब तक वह घूमते घूमते थक नहीं गया।

उसने अपने मन में सोचा कि शायद कोई प्राणी उसे अब देखने के लिये मिले। यह सोच कर वह एक आलमारी में बन्द हो गया। उस आलमारी की किवाड़ में एक छेद था जिससे वह बाहर का वह सब कुछ देख सकता था जो बाहर हो रहा था।

तभी उसने तीन फाख्ता एक खिड़की से अन्दर उड़ते आते देखे। उन्होंने अपने पंख हिलाये और लो वे तो तीन बहुत सुन्दर लड़कियों में बदल गये। वे तीनों लड़कियॉ उन सब लड़कियों से ज़्यादा सुन्दर थी जितनी लड़कियॉ उसने अभी तक देखी थीं।

उनमें से एक लड़की बोली — "हम लोग बहुत देर तक बाहर रही हैं। बादशाह जल्दी ही यहॉ आने वाले होंगे और अभी यहॉ कुछ भी तैयार नहीं है।"

सो एक ने झाड़ू उठायी और कमरे में सब जगह झाड़ू लगायी। दूसरी ने खाने की मेज लगायी और तीसरी ने वहॉ खाना ला कर

रखा। उन्होंने एक बार फिर अपने आपको हिलाया तो वह फिर से फाख्ता बन गयीं और खिड़की से बाहर उड़ गयीं।

इस बीच गंजे को भूख लग आयी थी तो उसने सोचा कि वहॉ तो कोई भी नहीं था सो वह अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकल कर उसने अपने आप ही उसमें से खाना ले ले।

जैसे ही उसने खाना लाने के लिये हाथ बढ़ाया कि उसके ऊपर इतना सख्त मार पड़ी कि उसका हाथ सूज गया। फिर उसने अपना दूसरा हाथ बढ़या तो उसके उस हाथ की भी हालत वही हुई जो उसे पहले हाथ की हुई थी।

यह देख कर गंजा बहुत डर गया और वह अपनी आलमारी में जा कर छिप गया। उसने अपनी आलमारी दरवाजा अभी बस बन्द ही किया था कि एक सफेद फाख्ता उड़ कर उस कमरे आयी और अपने पंखा हिला कर एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया।

वह एक सन्दूकची के पास गया उसमें से एक अॅगूठी कंगन और लेस का मेजपोश निकाले और बोला — "ओ अॅगूठी तुम कितनी किस्मत वाली हो क्योंकि उसकी उॅगली तुम्हें पहनती है। ओ कंगन तुम भी कितने खुश हो क्योंकि उसकी बॉह तुम्हें पहनती है।" यह कहते हुए वह रो पड़ा और उसने उस लेस के मेजपोश से अपने ऑसू पोंछ लिये।

फिर उसने ये सब चीज़ें सन्दूकची में वापस रखीं और वह खाना खाया जो उसके लिये तैयार किया गया था।

गंजा आदमी बेचारा अगले दिन तक बड़ी मुश्किल से भूखा रहा जब वह नौजवान उठा और अपने आपको एक फाख्ता में बदला और खिड़की से बाहर उड़ गया।

आदमी अब आलमारी से बाहर निकला ऑगन में गया और फिर दीवार के छेद से हो कर किले के बाहर निकल गया जैसे वह किले के अन्दर आया था। वहॉ से वह अपनी मॉ के पास पहुॅचा जो बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी क्योंकि वह सोचती थी कि उसका बेटा उसको वहॉ सोता छोड़ कर चला गया है।

बेटे ने आ कर मॉ को तसल्ली दी उसे अपनी पीठ पर चढ़ाया और दोनों नहानघर की ओर चले। वे नहाये और स्त्री का लंगड़ापन ठीक हो गया था और गंजे के सिर पर अब बाल उग आये थे। तब गंजे ने अपनी कहानी सुनायी।

राजकुमारी ने जब यह कहानी सुनी तो उससे पूछा कि क्या वह उसे उस किले तक ले जा सकता है। अगर वह उसे उस किले में ले गया जिसमें वह गया था तो उसने उस आदमी को बहुत सारा इनाम देगी।

अगले दिन राजकुमारी उस गंजे को अपना मार्गदर्शक बना कर उस किले की ओर चल दी। चलते चलते अपने समय से वे वहॉ पहुॅच गये। उसने राजकुमारी को किले की दीवारें दिखायीं और उसे छेद से हो कर अन्दर जाने के लिये सहारा दिया। अन्दर पहुॅच कर

वह उसे फाख्ताओं के कमरे में ले गया। उसने उसे वह आलमारी भी दिखा दी जहॉ वह छिप कर बैठ सकती थी।

उसे वहॉ छोड़ने के बाद उसका काम समाप्त हो गया था सो वह गंजा वहॉ से वापस चला आया। अपने और अपनी मॉ के अच्छे स्वास्थ्य और राजकुमारी के दिये हुए पैसे से वह आराम से रहने लगा।

शाम को तीन फाख्ताऐं उस कमरे में उड़ती हुई आयीं अपने आपको लड़कियों में बदला कमरे झाड़ा बुहारा सब बिखरी हुई चीज़ें ठिकाने पर रखीं मेज पर खाना लगाया और फिर से फाख्ता बन कर वहॉ से उड़ गयीं।

जल्दी ही एक सफेद फाख्ता उड़ती हुई वहॉ आयी और अपने पंख हिला कर एक सुन्दर नौजवान में बदल गयी। राजकुमारी तो उस सुन्दर नौजवान को देख कर बेहोश होते होते बची। वह नौजवान एक सन्दूकची के पास गया उसमें से अॅगूठी कंगन और लेस का मेजपोश निकाला जो पहले राजकुमारी के पास थे।

फिर वह बोला — "ओ अॅगूठी तुम कितनी किस्मत वाली हो क्योंकि उसकी उॅगली तुम्हें पहनती है। ओ कंगन तुम भी कितने खुश हो क्योंकि उसकी बॉह तुम्हें पहनती है।" यह कहते हुए वह रो पड़ा और उसने उस लेस के मेजपोश से अपने ऑसू पोंछ लिये।

यह देख कर राजकुमारी तो बस रो ही पड़ी। वह जिस आलमारी में बन्द थी उसको अन्दर से उंगली से ठकठकाने से नहीं

रोक सकी। नौजवान ने वह आवाज सुनी तो आलमारी का दरवाजा खोल दिया और लो आलमारी में तो उसका प्यार खड़ा था। वे एक दूसरे के गले लग गये। काफी देर तक तो वे किसी से कुछ कह भी न सके क्योंकि वे इस मिलन की आशा नहीं कर रहे थे।

फिर नौजवान ने उससे पूछा कि वह यहॉ इस परियों के महल में कैसे आयी तो उसने उसे सब बता दिया। तब नौजवान ने उसे बताया कि वह एक धरती की लड़की की सन्तान था पर जब वह केवल तीन दिन का ही था तब परियॉ उसको उठा कर यहॉ ले आयी थीं। और अब वह उनका बादशाह है।

वह अब सिवाय दो घंटे के सारा दिन उनके साथ रहने के लिये बाध्य था और उन दो घंटे के लिये वह आजाद था। उसने लड़की से कहा कि वह वहॉ उस दिन के लिये ठहर सकती थी। दिन के समय में जब उसका मन चाहे वह बाहर जा सकती थी और जब मन चाहे अन्दर आ सकती थी।

पर शाम को उसे छिप कर रहना पड़ेगा क्योंकि उस समय **30** परियॉ घर लौटती थीं और अगर उन्होंने उसे देख लिया तो वे उसे मार डालेंगी। अगले दिन वह उसे अपनी मॉ का घर दिखा देगा जहॉ वह शान्ति से रह सकेगी और वहीं वह उसके साथ अपनी आजादी के दो घंटे आजादी से बिता सकेगा।

अगले दिन परी बादशाह ने राजकुमारी को अपनी मॉ के घर की ओर इशारा कर दिया और उससे कहा — "जाओ और मेरी मॉ को

बचतीजार बे[22] की ओर से सलाम कहना। वह तुम्हें अन्दर बुला लेगी और तुम्हारा प्यार से ख्याल रखेगी।" यह सुन कर राजकुमारी वहॉ से नौजवान की मॉ के घर चली गयी।

जब उसने उसकी मॉ के घर का दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया दरवाजा खोलने आयी और जब उसने अपने बेटे का नाम सुना तो उसने अपने मेहमान को बहुत प्यार से अन्दर बुला लिया। राजकुमारी वहॉ बहुत दिनों तक रही। दो घंटे के लिये रोज वह चिड़िया उससे मिलने आया करती थी।

कुछ समय बाद राजकुमारी ने एक नन्हे राजकुमार को जन्म दिया पर न तो बच्चे के जन्म के बारे में बुढ़िया को पता चला और न ही वह चिड़िया फिर घर आयी।

अगले दिन वह चिड़िया रोज की तरह से घर आयी खिड़की पर बैठ कर चीं चीं करने लगी। चिड़िया ने पूछा — "मेरा बेटा कैसा है?"

राजकुमारी बोली — "कोई विशेष बात नहीं है पर वह बचतीजार बे का इन्तजार कर रहा है।"

नौजवान एक लम्बी सॉस ले कर बोला — "काश मेरी मॉ जानती तो वह उसके लिये अपने घर में सबसे अच्छा कमरा चुनती।"

---

[22] Bachtijar Bey

फिर वह एक आदमी में बदला। उसने अपनी पत्नी को सहलाया अपने बच्चे के साथ खेला। फिर दो घंटे बीत जाने के बाद उसने अपने आपको हिलाया चिड़िया बना और उड़ गया।

इस बीच मॉ ने अपने बेटे की आवाज पहचान ली तो उसकी तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। वह बहू के पास दौड़ी और उसको कई बार चूमा। फिर वहॉ से घर जा कर उसके लिये घर के सबसे अच्छे कमरे तैयार किये।

जब पूरा इन्तजाम हो गया तो उसने बहू से अपने बेटे के बारे में पूछा। अब तक बुढ़िया को पता चल चुका था कि उसके बेटे को परियॉ चुरा कर ले गयी थीं और अब वह यह चाहती थी कि किसी तरह से वह अब परियों से उसे चुरा ले।

उसने बहू से कहा — "जब मेरा बेटा कल आता है तो तुम उसे दो घंटे से कुछ अधिक देर तक रोके रखने की कोशिश करना बाकी मैं देख लूॅगी।"

अगले दिन जब चिड़िया खिड़की पर आयी तो राजकुमारी को वहॉ न देख कर वह अपने घर के सबसे अच्छे कमरे की ओर उड़ा और वहॉ जा कर बोला — "मेरा बेटा कैसा है?"

राजकुमारी बोली — "वह बहुत परेशान है। वह बचतीजार बे का इन्तजार कर रहा है।"

सो चिड़िया ने अपने आपको आदमी में बदला और फिर पति और पत्नी का समय इतने आनन्द में बीता कि उनको समय का ध्यान ही नहीं रहा।

अब इस बीच नौजवान की बुढ़िया मॉ क्या कर रही थी?

उनके घर के सामने साइप्रस का एक बहुत बड़ा पेड़ लगा हुआ था जिसकी शाखों पर कभी कभी वे **30** परियॉ आ कर बैठा करती थीं। बुढ़िया ने उस पेड़ पर सारे में जहर भरी पिनें लगा दीं।

शाम को परियॉ अपने खोये हुए बादशाह की खोज में वहॉ आयीं तो उस पेड़ पर बैठ गयीं। जैसे ही वे पेड़ पर बैठीं तो उनको जहर भरी पिनें छू गयीं और वे सब मर गयीं।

जब नौजवान को पता चला कि उसे वापस जाने में बहुत देर हो गयी है तो वह तो बहुत डर गया। वह यह सोचते हुए कमरे में आगे पीछे टहलने लगा कि वह अब करे तो क्या करे।

पर अचानक उसकी निगाह बाहर खड़े पेड़ पर पड़ी तो उसने देखा कि **30** परियॉ तो पेड़ पर नहीं थीं। यह देखते ही वह तो इतना खुश हुआ जितना वह एक पल पहले चिन्तित था।

जब उसकी मॉ ने उसको सब बताया कि उसने क्या किया था तब तो उसकी खुशी का वारापार ही न रहा। मॉ बेटा पति पत्नी चारों ने एक दूसरे को पूरे तौर पर पा लिया था। अब कोई उन्हें परेशान करने वाला नहीं इसको मनाने के लिये उन्होंने **40** दिन **40** रात तक दावत की और आनन्द मनाया।

31 धोखा देने वाला और चोर[23]

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके दो पति थे। मजे की बात यह थी कि दोनों को एक दूसरे का पता नहीं था। उनमें से एक दूसरों को धोखा दे कर गुजारा करता था और दूसरा चोरी कर के गुजारा करता था। दोनों ने ये कलाऐं उस स्त्री से ही सीखी थीं।

चोर अपनी चुरायी हुई चीज़ों को ले कर एक व्यापारी के पास गया। उसने व्यापारी को अपना सामान बेचा और पैसे ला कर स्त्री को दे दिये।

धोखा देने वाला गया तो उसने व्यापारी का कौलर पकड़ा और कहा — "यह सब सामान मेरा है। यह भी और मुझे लगता है कि तूने और भी मेरा बहुत कुछ चुराया है। अब मैं देखता हूॅ कि जितना भी सामान तूने मेरा चुराया है तू उसे वहीं रख कर आता है जहॉ से तूने उसे चुराया है या नहीं।"

पर व्यापारी बोला — "अफसोस। मैं चोर नहीं हूॅ। मैंने ये चीज़ें दूसरों से खरीदी हैं। यह तुम कैसे कह सकते हों कि ये तुम्हारी हैं। तुम मुझे छोड़ो और किसी दूसरे चोर को ढूॅढो।"

अब तो बहुत शोर मच गया। चोर ने देखा कि अब सब लोग उसका पीछा करने लगेंगे सो बिना समय गॅवाये अपने घर चला गया। उसकी पत्नी ने उसे बताया कि उसकी चोरी पकड़ ली गयी

[23] The Deceiver and the Thief. Tale No 31

है। उसने उसे सलाह दी कि वह अब थोड़े दिन के लिये कहीं दूर चला जाये ताकि पुलिस उसे पकड़ न सके।

फिर स्त्री ने भेड़ की एक पूँछ ली और उसे दो भागों में काट लिया। एक भाग का उसने रोटी के साथ एक पोटली बनायी और चोर को दे दी और वह उस पोटली को ले कर वहॉ से कहीं बाहर चल दिया।

कुछ देर बाद ही धोखा देने वाला वहॉ आया और स्त्री से बोला — "मेरा खेल अब खत्म हो गया है अब मेरी धोखेबाजी बिल्कुल नहीं छिप सकती। तुम मुझे खाना दो और मैं अब कुछ दिनों के लिये इस शहर में अपनी सूरत नहीं दिखाना चाहता जब तक यह तूफान खत्म नहीं हो जाता।"

सो स्त्री ने भी उसे कुछ बची हुई रोटियॉ और बची हुई भेड़ की पूँछ की एक पोटली बना कर दे दी और वह भी उस पोटली को ले कर तुरन्त ही वहॉ से चल दिया।

अब पहला पति जो चोर था वह चलते चलते बहुत थक गया था सो जैसे ही उसे एक नदी दिखायी दी तो वह वहॉ सुस्ताने के लिये बैठ गया।

जैसे ही वह अपना खाना खोल रहा था कि धोखा देने वाला भी वहीं आ पहुँचा और वह भी वहीं बैठ गया। उसने भी खाना खााने के लिये अपनी पोटली खोली। चोर बोला — "आओ दोस्त खाना साथ में मिल कर ही खाना खाते हैं।"

सो वे एक दूसरे के आमने सामने बैठ गये और अपनी अपनी पोटलियॉ खोलीं तो सबसे पहले उनका ध्यान भेड़ की पूँछ पर गया। दोनों की पूँछें मिल कर एक पूँछ बन रही थी।

यह देख कर धोखा देने वाला चौंक गया वह चोर से बोला — "क्या मैं तुमसे पूछ सकता हूँ कि तुम इस समय कहॉ से आ रहे हो?"

चोर ने अपने शहर का नाम बता दिया पर धोखा देने वाला भी तो उसी शहर से आता था सो उसने पूछा — "तो तुम वहॉ की किस गली से आते हो?"

चोर बोला — "मै उस शहर की फलॉ गली से आता हूँ। उसमें यह मेरा घर है और इसमें मेरी पत्नी रहती ही।"

धोखा देने वाला तो आवेश में उछल ही पड़ा बोला — "ओह अल्लाह वही तो मेरी पत्नी है। वह तो मेरी एक साल से पत्नी है। तुम झूठ क्यों बोलते हो?"

चोर बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो वह तो मेरी पत्नी है। क्या तुम होश में तो हो या फिर मुझसे मजाक कर रहे हो? वह तो बहुत समय से मेरी पत्नी है।"

वे यह सोच ही नहीं सके कि वे अब क्या करें सो वे अपना सिर खुजलाने लगे। आखिर धोखा देने वाला बोला — "यह तो ऐसा मामला है जिसे हम अपने आप तय नहीं कर सकते। हमको उस स्त्री

के पास ही जाना चाहिये और उसी से पूछना चाहिये कि हम दोनों में से कौन उसक पति है।"

सो वे उठ गये और अपने घरों को चल दिये। जब स्त्री ने दोनों को साथ साथ आते हुए देखा उसने भॉप लिया कि क्या मामला हो सकता था। उसने उनको सलाम किया और अन्दर आने के लिये कहा और खुद उनके सामने बैठ गयी।

धोखा देने वाले ने बात शुरू की — "बताओ कि तुम किसकी पत्नी हो।"

वह बोली — "अब तक मैं तुम दोनों की पत्नी थी पर इसके बाद मैं उसकी पत्नी बनूॅगी जो तुम दोनों में से अधिक होशियार होगा। मैंने तुम दोनों को एक एक कला सिखायी है। अबसे मेरा पति वही होगा जो उस कला का सबसे अच्छा उपयोग कर के मुझे सन्तुष्ट करेगा।"

दोनों नौजवानों ने पक्का इरादा किया कि वे अपनी अपनी कला का पूरा उपयोग कर के स्त्री को सन्तुष्ट करने की अपनी पूरी कोशिश करेंगे।

धोखा देने वाले ने चोर से कहा — "आज मैं अपनी होशियारी दिखाऊॅगा कल तुम अपनी होशियारी दिखा सकते हो।" यह तय कर के वे दोनों घर छोड़ कर बाजार चले गये।

धोखा देने वाले ने वहॉ एक आदमी देखा जो अपनी थैली में 1000 सोने की मुहरें रख रहा था और फिर वह थैली उसने अपनी

छाती में छिपा लीं। वह उसके पीछे पीछे गया और भीड़ के दबाव में उसकी मुहरों की थैली उसकी छाती से निकाल ली।

उसे ले कर वह एक एकान्त जगह चला गया। उसने थैली में से नौ सोने की मुहरें निकाली उसमें अपनी उंगली में से निकाल कर अपनी मुहर वाली अॅगूठी उसमे डाली और फिर वापस जा कर उसे बिन कुछ देखेभाले उसी की छाती में डाल दिया जिसकी वह थैली थी।

हमने कहा "बिना देखेभाले" पर फिर भी वहॉ एक आदमी ने उसकी यह चाल देख ली और वह था चोर।

धोखा देना वाला यह कर के चला गया पर थोड़ी देर बाद फिर थैली वाले के पास लौटा। उसने उसका कौलर पकड़ा और कहा — "ओ गधे। तूने मेरे डकैट[24] की थैली चुरा ली।"

थैली वाला आदमी यह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह तो यह समझ ही नहीं सका कि वह आदमी कह क्या रहा था। वह बोला — "मेरे दोस्त। तुम अपने रास्ते जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो। मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं।"

धोखा देने वाला बोला — "तुम्हारा मुझे जानना कोई जरूरी नहीं है। बस अब तुम जज के पास चलो।"

[24] Ducat – old currency used in Italy and some other European countries.

थैली वाले के पास और कोई चारा नहीं था सो वे जज के पास चल दिये। धोखा देने वाले ने थैली वाले के ऊपर आरोप लगाया कि थैली वाले ने उसकी सोने की मुहरों की थैली चुरा ली है।

जज ने पूछा कि थैली में उसकी कितनी मुहरें थीं। उसने तुरन्त ही कहा "**1000**।"

फिर जज ने धोखा देने वाले से पूछा कि "थैली में से कितनी मुहरें चुरायी गयी हैं।"

जवाब मिला "**991**। और मेरी मुहर वाली अॅगूठी भी उसी में है।"

जज ने थैली की मुहर गिनी तो सचमुच में ही उसमें **991** मुहरें थीं और धोखा देने वाले की मुहर अॅगूठी भी थी। सो मुहर वाला आदमी बेचारा बहुत पीटा गया और धोखा देने वाले को वह मुहरों की थैली दे दी गयी। वह अपने घर चला गया।

अगली सुबह चोर अपने काम पर निकला। उसने एक रस्सी ली धोखा देने वाले को साथ लिया और बादशाह के महल चल दिया। वहॉ पहुॅच कर चोर ने अपनी रस्सी महल की दीवार पर फेंकी जहॉ पहुॅच कर वह अटक गयी और वह उसके सहारे उस दीवार पर चढ़ गया। उसके पीछे पीछे उसका दोस्त भी चढ़ गया।

वहॉ पहुॅच कर वे खजाने वाले कमरे की ओर बढ़े और कई चाभियॉ लगाने के बाद उसे खोल लिया। चोर ने अपने दोस्त से

कहा कि वह भी वहॉ से जितने डकैट चाहे उतने डकैट अपनी जेबों में भर ले।

उसकी खुद की नजर भी सोने की चमक से चौंध रही थीं सो उसने भी बहुत सारा सोना अपनी पीठ पर लादा और दोनों वहॉ से चले गये। चोर तो मुर्गीखाने चला गया। वहॉ एक बतख पकड़ी उसकी गर्दन मरोड़ी उसे एक गड्ढे में रखा आग जलायी और उसे भुनने के लिये रख दिया। उसने अपने साथअी से कहा कि वह यह देखे कि वह जले नहीं।

यह कर के वह वापस बादशाह के कमरे में गया। तो उसका साथी चिल्लाया — "रुको। तुम कहॉ जा रहे हो?"

चोर बोला — "मैं बादशाह से यह बताने जा रहा हूॅ कि मैंने कितनी चालाकी का काम किया है। और साथ में मैं उससे यह भी पूछूॅगा कि अब वह स्त्री मेरी है या तेरी।"

उसका साथी बोला — "अल्लाह के लिये अब हम लोगों को यहॉ से जाना चाहिये। मैं उस स्त्री को छोड़ता हू। तू उसे ले सकता है।"

"ठीक है। यह बात तो तू अब कह रहा है कल को तू अपना दिमाग बदल सकता है। पर अगर बादशाह इस बात को तय करे तब तो तू उस बात को मानेगा ही।"

कह कर वह बादशाह के सोने वाले कमरे में खिसक गया जहॉ से उसको अन्दर का दृश्य अच्छी तरह से दिखायी दे रहा था। उसने

देखा कि बादशाह अपने पलंग पर सोया हुआ है। एक दास उसके पैर मल रहा था और किशमिश खा रहा था।

उसने फर्श पर पड़ा हुआ घोड़े का एक बाल उठाया और उसे दास के मुँह में घुसा दिया कि वह किशमिश से चिपक गया। दास को बहुत नींद आ रही थी सो वह जॅभाइयॉ ले रहा था। जैसे ही उसने अपना मुँह खोला तो चोर ने वह बाल किशमिश के साथ उसके मुँह से खींच लिया और वह किशमिश अपने मुँह में रख ली।

दास ने अब अपना मुँह बहुत बड़ा खोला और अपने मुँह में किशमिश न पा कर उसने अपने चारों ओर देखा पर उसे अपनी किशमिश कहीं दिखायी नहीं दी। उसके बाद वह सो गया।

चोर के हाथ में बहुत तेज़ शराब की एक शीशी थी जिसे उसने दास की नाक के नीचे रखा हुआ था और वह उसे तब तक ऐसे पकड़े रहा जब तक वह बेहोश हो कर नीचे नहीं गिर गया। फिर उसने उसे उठा कर एक टोकरी में रख दिया और टोकरी को बाहर छज्जे पर लटका दिया। फिर वह खुद बादशाह के पैर मलने के लिये बैठ गया।

धोखा देने वाला जो चोर के पीछे पीछे आ गया था यह सब देख रहा था। अचानक बादशाह कुछ हिला तो चोर ने बहुत ही धीमी आवाज में उससे कहा — "अगर आप इजाज़त दें तो मैं आपको एक कहानी सुनाऊॅ।"

सोते हुए बादशाह ने फुसफुसाया "ठीक है सुनाओ।"

इस पर चोर ने अपने और अपने साथी के बीच अब तक जो कुछ भी हुआ था वह सब बादशाह को सुना दिया। इस बीच उसने नजरें घुमा कर अपने साथ को इशारा कर के उससे यह कह दिया कि वह बतख के पास जाये ताकि उसकी बतख जल न जाये।

पहले उसने उसे खजाने की चोरी की बात बतायी फिर दास के मुँह से किशमिश चुराने की बात बतायी। इस सारे समय चोर का साथी बेचारा बुरी तरह कॉप रहा था और बार बार कह रहा था कि "अब यहॉ से चलो।" पर चोर अपनी कहानी सुनाते सुनाते बीच बीच में उससे कहता जा रहा था "अपनी बतख का ध्यान रखो।"

अन्त में वह बोला — "बादशाह साहब। अब बताइये कि किसका काम अधिक बड़ा था मेरा या मेरे दोस्त का।"

बादशाह ने सोते सोते जवाब दिया — "निश्चित रूप से चोर का काम अधिक बड़ा था और वह स्त्री उसी की होनी चाहिये।"

चोर बादशाह के पैर और थोड़ी देर दबाता रहा और जब बादशाह गहरी नींद सो गया तब वह वहॉ से बिना कोई आवाज किये उठ गया और अपने साथी से जा कर मिल गया।

उसने साथी से पूछा — "क्या तुमने सुना कि बादशाह ने क्या कहा। वह स्त्री मेरी है।"

साथी बोला — "हॉ हॉ सुना कि वह स्त्री तुम्हारी है।"

चोर ने एक बार और पूछा — "वह स्त्री किसकी है?"

साथी बोला — "मैंने कहा तो कि वह तुम्हारी है।"

चोर बोला — "चलो अब हमको यहॉ से भाग जाना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि हम पकड़े जायें। मैं तो बिल्कुल मरे जैसा हो रहा हूॅ। जल्दी है मैं अपनी सारी हॅसी भूल जाऊॅगा।" और धोखा देने वाले का तो डर के मारे बिल्कुल दिमाग ही खराब हो रहा था।

चोर फिर बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो। मैं एक बार फिर से जा कर बादशाह से पूछता हूॅ।"

डर का मारा बेचारा धोखा देने वाला बोला — "अबकी बार तुम पकड़े जाओगे। अल्लाह के लिये बस अब तुम लौट चलो। न केवल वह स्त्री ही तुम्हारी होगी बल्कि मैं भी तुम्हारा जीवन भर के लिये गुलाम रहूॅगा। पर अभी तुम यहॉ से चलो।"

सो वे वहॉ से चले गये सारा पैसा अपने साथ ले गये। वहॉ से वे सीधे स्त्री के पास गये। वह चोर की ताकत से इतनी अधिक खुश हुई कि उसने तुरन्त ही उसके साथ शादी कर ली।

अगली सुबह जब बादशाह जागा तो उसने अपने दास को आवाज दी। पर सब जगह शान्ति छायी हुई थी। कुछ देर तक तो बादशाह ने इन्तजार किया पर जब फिर भी कोई नहीं आया तो उसने फिर आवाज लगायी मगर फिर भी कोई नहीं आया।

उसका गुस्सा बढ़ गया और वह अपने बिस्तर पर से कूद कर उठ बैठा और एक टोकरी को अपने छज्जे से लटके देखा। "यह क्या है।" कहते हुए उसने वह टोकरी उतारी और उसमें देखा कि उसमें तो उसका नौकर बेहोश पड़ा है।

तब उसने फिर बहुत ज़ोर से आवाज लगायी तो फिर कई नौकर दौड़े वहॉ आये और उस बेहोश नौकर को होश में लाये। बादशाह ने पूछा कि इस नौकर के साथ क्या हुआ था पर वह कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं था।

अब बादशाह को समझ आया कि रात में उसने जो चोरी की कहानी सुनी थी वह उस चोर ने ही सुनायी होगी जिसने इस आदमी को बेहोश किया था। यह सोचते ही वह अपनी राजगद्दी पर बैठ गया और अपने वज़ीरों को बुलाया।

उसके सारे वज़ीर बे अक्लमन्द आदमी उसके पास तुरन्त ही चले आये। जब वे सब वहॉ इकट्ठे हो गये तब बादशाह ने उन सबको अपनी रात का किस्सा सुना कर कहा —

"तुम सबको इस चोर को जरूर ढूँढना चाहिये। और शहर में मुनादी पिटवा दो कि वह आदमी मुझसे अकेले में आ कर मिल सकता है और मैं अल्लाह की कसम खा कर कहता हूँ कि मैं उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। जो सोना उसने चुराया है वह उसे अपने पास रख सकता है बल्कि उसके अलावा उसको पेन्शन अलग से मिलेगी।"

मुनादी पीटने वालों ने शहर में अपने मालिक की इच्छा की मुनादी पीट दी। चोर ने भी बादशाह की इस मुनादी को सुना और उसने यह भी सुना कि बादशाह ने उस आदमी को कोई नुकसान न

पहुँचाने की कसम खायी है तो वह बेधड़क बादशाह के पास पहुँच गया।

वह बोला — "ओ शाह। आप चाहें तो मुझे मारें या इनाम दें पर मैं ही वह आदमी हूँ।"

बादशाह ने उससे पूछा — "तुमने ऐसा क्यों किया?"

इस पर चोर ने सारी कहानी बता दी। बादशाह ने अपनी कसम के अनुसार उसको जो कुछ उसने चुराया था वह सब उसे रखने दिया और उसको जीवन भर के लिये पेन्शन भी तय कर दी।

पर चोर ने बादशाह की उदारता को देखते हुए यह कसम खायी कि अब वह फिर कभी चोरी नहीं करेगा। वह और उसकी पत्नी जीवन भर बादशाह के स्वास्थ्य और समृद्धि के लिये प्रार्थना करते रहेंगे।

32 सॉप परी और जादुई शीशा[25]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब लकड़हारा था। उसके एक बेटा था। एक दिन लकड़हारे ने अपने बेटे से कहा — "जब मैं मर जाऊॅ तब तुम मेरा काम करते रहना। तुम रोज जंगल जाना। तुम उस जंगल का हर एक पेड़ काट सकते हो सिवाय उस पेड़ के जो जंगल के किनारे पर लगा है। उसे तुम कभी नहीं काटना।"

कुछ दिन बाद लकड़हारा मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। जैसा कि पिता और बेटे में आपस में तय हुआ था बेटे ने पिता का काम अपने हाथ में ले लिया और वह भी जंगल में लकड़ी काटने जाने लगा।

एक बार जंगल के पेड़ गिराते गिराते वह उस पेड़ तक पहुॅच गया जिस पेड़ को काटने से उसके पिता ने मना किया था। उसको देख कर वह सोचने लगा कि "मेरे पिता ने इस पेड़ को काटने के लिये मना क्यों किया था जबकि मैं इस जंगल के दूसरे पेड़ अपनी मन मर्जी से काट सकता हूॅ।"

यह सोच कर बस बिना कुछ और विचार किये उसने अपना बड़ा चाकू इस पेड़ के तने पर चला दिया। पर यह क्या। ऐसा लगता था कि उस पेड़ के तो पैर थे। वह पेड़

[25] The Snake-Peri and the Magic Mirror. Tale No 32

तो पीछे को हटना शुरू हो गया। और उसे लगा कि वह तो उस पेड़ को नहीं बल्कि केवल हवा को ही काट रहा था।

लड़का अपने गधे पर चढ़ा और उसके पीछे पीछे चल दिया। पर रात हो गयी और वह उस पेड़ को पकड़ नहीं पाया। सो उसने अपना गधा एक छायादार पेड़ से बॉध दिया और खुद उस पेड़ पर चढ़ कर सुबह तक का इन्तजार करने लगा।

सुबह को जब वह पेड़ से उतरा तो उसने देखा कि उसके गधे का तो सिवाय उसकी हड्डियों के और कुछ भी नहीं बचा। लकड़हारे ने सोचा "अब तो मुझे यहॉ से पैदल जाना पड़ेगा।"

वह एक बार फिर पेड़ के पीछे भागा। वह सारा दिन उसके पीछे पीछे भागा पर फिर शाम हो गयी और उसे पकड़ नहीं पाया। तीसरे दिन वह फिर से उसके पीछे जाने की तैयारी में था कि अचानक उसके सामने एक सॉप और हाथी आ गये जो आपस में लड़ रहे थे।

वह खड़ा हो गया और उन दोनों की लड़ाई देखने लगा जब तक कि उनकी लड़ाई खत्म नहीं हो गयी। सॉप हाथी को निगलने ही वाला था। सॉप ने उसे नीचे तो गिरा दिया पर हाथी के दॉत उसके गले में अटक गये। दोनों ने लड़के को देखा तो दोनों ने उससे सहायता मॉगी।

हाथी ने उससे वायदा किया कि वह उसे वह सब कुछ देगा अगर वह उस सॉप को मार दे तो।

दूसरी ओर सॉप ने कहा कि "तुम इसके दॉत तोड़ दो। तुम्हारा यह काम आसान है और इसका इनाम भी बहुत बड़ा होगा।"

यह सोचते हुए कि यही सबसे अधिक ठीक काम रहेगा लड़के ने अपने बड़े चाकू से हाथी के दॉत काट डाले। सॉप ने उसकी सहायता के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और लड़के से कहा कि अपना इनाम लेने के लिये वह उसके पीछे पीछे आये।

रास्ते में वह एक नदी के पास रुका और अपने साथी से बोला — "तुम थोड़ी देर यहॉ रुको मैं ज़रा इसमें नहा आऊॅ। इस बीच जो कुछ भी हो तुम उससे डरना नहीं।"

जैसे ही सॉप नदी में घुसा तो उस नदी में बड़ा सा तूफान आ गया। बादल गरजे बिजली चमकी। ऐसा लगा जैसे बस अब यह दुनियॉ खत्म हो जायेगी। जल्दी ही सॉप एक आदमी के रूप में नदी से बाहर आ गया और फिर वे दोनों अपनी यात्रा पर आगे चल पड़े।

वे खुशी खुशी कौफ़ी पीते हुए अपनी चिलम पीते हुए वौयलैट बोते हुए आगे बढ़ते रहे और घर के पास आ गये तो सॉप परी ने लड़के से कहा — "जल्दी ही हम मेरी मॉ के घर पहुॅचने वाले हैं। जब वह दरवाजा खोलेगी तो मैं तुम्हें भाई कह कर पुकारूॅगा और तुम्हें अन्दर बुलाऊॅगा।

वह तुमको कौफ़ी देगी पर तुम उसे लेना नहीं। तुमको खाना दिया जायेगा तो तुम उसे छूना भी नहीं। दरवाजे के पास ही एक

छोटा सा शीशा लगा हुआ है बस तुम मेरी माँ से विनती करना कि वह उसे तुम्हें दे दे।"

वे घर पहुँचे और परी ने अपने घर का दरवाजा खटखटाया। परी की माँ ने खुद ही दरवाजा खोला। परी बोला — "आओ भाई अन्दर आ जाओ।"

परी की माँ ने पूछा — "यह तुम्हारा कौन सा भाई है?"

परी बाला — "माँ इसने मेरी जान बचायी है।" और फिर अपनी माँ को सारी कहानी बतायी।

वे घर में घुसे तो माँ ने लड़के को कौफ़ी दी और एक चिलम पीने के लिये दी पर उसने उन्हें नहीं लिया। उसने क्षमा माँगते हुए कहा — "मुझे ज़रा जल्दी है मैं यहाँ अधिक देर नहीं रुक पाऊँगा।"

माँ बोली — "कुछ देर आराम कर के जाओ बेटा। पर हम मेहमान को ऐसे ही बिना कुछ लिये हुए तो नहीं जाने देते।"

वह बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये। पर हाँ अगर आप मुझे कुछ देना ही चाहती हैं तो आपके दरवाजे के पास जो शीशा लगा है वह मुझे दे देंगी तो उसे मैं ले लूँगा।"

स्त्री उसे देने के लिये तैयार नहीं थी पर उसका बेटा उससे इस बात पर गुस्सा था कि वह उसकी जान बचाने वाले को शीशे जैसी छोटी चीज़ के लिये मना कर रही थी। सो उसने अनमने मन से उसे लड़के को दे दिया।

लड़का उस शीशे को ले कर वहाँ से चला गया।

जब वह सड़क पर पहुॅचा तो उसने उस शीशे को चारों तरफ से उलट पलट कर देखा और सोचने लगा कि यह शीशा उसके किस काम आ सकता था। जब वह उसे इस तरह से देख रहा था तो अचानक ही एक अरब उसके सामने आ खड़ा हुआ जिसका ऊपर का होठ आसमान को छू रहा था और नीचे वाला होठ जमीन तक लटक रहा था।

लड़का तो उसे देख कर डर के मारे मर ही गया होता अगर अरब ने उसको सान्त्वना न दी होती और यह न कहा होता — "हुक्म मेरे सुलतान।

वह उससे केवल खाने के लिये ही कुछ मॉगने की हिम्मत कर सका। कहते ही उसके सामने सबसे स्वादिष्ट खाना लग कर तैयार हो गया। ऐसा खाना तो उसने पहले न कभी देखा था और न कभी खाया था। उसका यह काम कर के वह अरब गायब हो गया।

यह देख कर तो लड़के की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी। उसने शीशे को फिर से उठाया अपने हाथ में लिया और फिर से उसमे देखा तो वही अरब उसके सामने फिर से आ गया और बोला — "हुक्म मेरे सुलतान।"

हालॉकि ऐसा पहले भी हो चुका था पर भी उसको फिर से देख कर वह कुछ घबरा गया। वह कुछ हकलाते हुए बोला "मुझे एक महल चाहिये।" और लो उसके सामने बादशाह के महल से भी शानदार महल खड़ा था।

लड़का बोला "ले जाओ इसे।" और लो वह महल तो गायब भी हो गया। लड़का अपने पास की इस चीज़ से अब बहुत खुश था। अब तो वह बस यही सोच रहा था कि अब उसे क्या चाहिये।

उसे याद आया कि बादशाह के एक बहुत ही प्यारी सी और सुन्दर सी बेटी थी सो उसने फिर से अपना शीशा उठाया और उसमें देखा तो फिर वही आवाज आयी "हुक्म मेरे सुलतान।"

लड़के ने उसे फिर हुक्म दिया "मुझे एक महल चाहिये जिसमें बादशाह की बेटी भी हो।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे तुरन्त ही उसने अपने आपको एक महल में पाया जिसमें बादशाह की बेटी भी थी। वह उसके पास ही बैठी हुई थी। उन्होंने आपस में एक दूसरे को गले लगाया और चूमा और फिर बहुत खुश हुए।

इस बीच बादशाह को बताया गया कि राजकुमारी रहस्यमयी तौर पर महल से गायब हो गयी है। बादशाह ने कहा कि राजकुमारी को सारे राज्य में ढूँढा जाये। ऐसा ही किया गया पर सब बेकार। यह बिल्कुल असम्भव था कि ऐसा कैसे हो गया।

तब एक बुढ़िया आयी और उसने बादशाह को सलाह दी कि वह एक बक्सा बनवाये जिसके अन्दर टीन लगी हो। उसमें बुढ़िया को रख कर उसे समुद्र में फेंक दिया जाये। उसने वायदा किया कि वह राजकुमारी को जरूर ढूँढ लायेगी, कहीं से भी या तो समुद्र के इस किनारे से या फिर उसके दूसरे किनारे से।

सो इसके अनुसार एक बक्सा बनवाया गया। उसमें बहुत सारा खाना रखा गया फिर उसमें बुढ़िया को बिठा कर समुद्र में फेंक दिया गया। समुद्र की लहरों पर नाचता हुआ वह बक्सा उसी शहर के समुद्र के किनारे पर जा कर लग गया जिसमें वह लड़का राजकुमारी के साथ रहता था।

कुछ मछियारे जो किनारे पर खड़े खड़े मछलियॉ पकड़ रहे थे उन्होंने वह बक्सा देखा तो वे उस बक्से को किनारे पर खींच लाये। उसे किनारे पर ला कर उन्होंने उसे खोला तो उसमें से तो एक बुढ़िया निकल आयी।

यह पूछने पर कि वह कहॉ से आयी है वह बोली — "अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन अन्धे हो जायें मुझसे इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिये।" और वह रोने लगी।

उसको इतना अधिक रोते हुए लोगों ने सोचा कि किसी ने वास्तव में उसके साथ बहुत ही निर्दय व्यवहार किया है। उसने पूछा — "इस शहर का बे कहॉ है। शायद वही मुझ पर कुछ दया करेगा। शायद वही मुझे अपने घर में शरण दे।"

पास खड़े लोगों ने उसे उस शहर के बे के घर का पता बता दिया और उसे विश्वास दिलाया कि वह यह विश्वास रखे कि वहॉ उसे कोई न कोई सहायता मिल ही जायेगी।

वह महल में आयी और उसका दरवाजा खटखटाया तो राजकुमारी ने ऊपर से ही उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये।

हालॉकि उसने राजकुमारी की आवाज पहचान ली थी फिर भी क्योंकि वह वहॉ अजनबी थी उसने वहॉ घर में काम करने वाली की नौकरी मॉगी।

राजकुमारी बोली — "मेरे पति इस समय बाहर गये हैं शाम को लौटेंगे तब तक तुम बाहर कोने में इन्तजार करो।" जब शाम को उसके पति घर लौटा तो उसने कहा कि उस स्त्री को घर में काम करने के लिये रख लिया जाये।

हालॉकि बुढ़िया उस महल मे कई हफ्ते रही पर वहॉ उसने किसी प्रकार को कोई नौकर या रसोइया नहीं देखा फिर भी वहॉ दुनियॉ का सबसे स्वादिष्ट और सबसे मॅहगा खाना मिलता था। इसके अलावा वहॉ सब जगह बहुत अच्छी सफाई रहती थी।

एक दिन उसने राजकुमारी से कहा — "राजकुमारी जी। क्या आपको अकेलापन नहीं लगता।" फिर उसने अपने आप ही उसको सलाह दी कि अगर आपकी इजाज़त हो तो एक दिन मैं आपके साथ बिताना चाहती हूॅ। आपको अच्छा लगेगा।"

राजकुमारी ने कहा कि वह इस बारे में अपने पति से बात करेगी। लड़के ने इसका कोई प्रतिवाद नहीं किया सो बुढ़िया अब रोज ही काफी समय राजकुमारी के कमरे में बिताने लगी।

एक दिन बुढ़िया ने राजकुमारी ने बेहिचक पूछ ही लिया कि उनका खाना कहॉ से आता था और उनके नौकर कहॉ थे। अब क्योंकि राजकुमारी को तो शीशे का पता नहीं था सो वह उसे कुछ

बता नहीं सकी। बुढ़िया ने उससे अपने पति से पूछने के लिये कहा। अब जब पति आया तो राजकुमारी ने उससे इतने प्यार से यह पूछा कि उसने उसे अपना खजाना दिखा दिया।

अब यह तो काफी नहीं था सो बुढ़िया ने राजकुमारी को सलाह दी कि वह अपने पति से उस शीशे को मॉग ले ताकि वह जब अकेली हो तो वह उससे खेल सके। लड़का उसको किसी चीज़ को मना नहीं कर सकता था सो उसने वह शीशा उसे दे दिया।

अब बुढ़िया का मौका था। उसने पता लगा लिया कि राजकुमारी शीशा कहॉ रखती थी। उसने शीशे को वहॉ से चुरा लिया और उसमें देखने लगी।

जैसे ही उसने उसमें देखा तो एक मेटे होठ वाला अरब उसके सामने प्रगट हो गया और बोला "हुक्म मेरे सुलतान।"

तो वह तुरन्त ही बोली — "मुझे और राजकुमारी को उसके पिता के पास ले चलो।" उसने उससे और आगे कहा "यह महल जला दो।"

सो जब शाम को लकड़हारे का बेटा घर आया तो उसे वहॉ कुछ नहीं मिला सिवाय अपनी बिल्ली के जो इस सुन्दर घर की राख में गर्मी ले रही थी। उसको वहॉ कुछ बचा हुआ खाना भी मिला जो शायद राजकुमारी ने खाने के बाद फेंक दिया होगा।

उसने वह फेंका हुआ खाना उठा कर एक थैले में रखा अपने घोड़े पर सवार हुआ और राजकुमारी को ढूँढने चल दिया।

वह इतना घूमा इतना घूमा कि अपने ससुर जी के शहर में पहुॅच गया। वहॉ वह उनके महल के रसोईघर में गया और रसोइयों से विनती की कि वे उसे अपने शाही रसोईघर में काम करने के लिये रख लें। उसकी दशा देख कर रसोइयों को उस पर दया आ गयी और उन्होंने उसे शाही रसोईघर में काम पर रख लिया।

कुछ दिनों में ही उसे पता चल गया कि उनके बादशाह की बेटी कुछ दिन रहस्यमय रूप से गायब रहने के बाद अब वापस आ गयी है।

एक दिन रसोइया बीमार पड़ गया तो उसने लड़के से कहा कि वह उसकी जगह खाना बना दे। लड़के ने तुरन्त ही इसे स्वीकार कर लिया। रसोइये ने उसे उसका काम समझा दिया। सब कुछ अच्छी तरह से पूरा हो गया सिवाय जब वह खाना बाहर भेज रहा था तो उसने वह फेंका हुआ खाना राजकुमारी की थाली में रख दिया।

जब राजकुमारी ने वह खाना देखा तो वह समझ गयी कि उसका पति वहीं कहीं आसपास में ही है। उसने तुरन्त ही रसोइये को बुलवाया और उससे पूछा कि उसके साथ रसोईघर में कौन था।

पहले तो उसने कुछ भी बताने से मना कर दिया फिर बाद में उसे बताया कि एक नौजवान उसे रसोई के काम करने में सहायता कर रहा था। राजकुमारी तुरन्त अपने पिता के पास गयी और उससे

कहा कि रसोईघर में एक नौजवान है जो इतनी अच्छी कौफ़ी बनाता है कि वह उसे अपना निजी कौफ़ी बनाने वाला चाहिये।

उसके बाद उस लड़के ने कौफ़ी बनायी और फिर उसे खुद ही राजकुमारी के पास ले कर गया और इस तरह वह दोनों मिल गये। फिर राजकुमारी ने बताया कि बुरी घटना के पीछे किसका हाथ था। अब वे बराबर यही विचार करते रहे कि उस बुढ़िया से वह शीशा कैसे प्राप्त किया जाये।

अब लड़का राजकुमारी इतनी जल्दी जल्दी मिलता रहता था और उसके साथ इतनी अधिक देर तक रहता था कि उस बुढ़िया के दिल में शक पैदा होने लगा।

बुढ़िया ने फिर शीशा निकाला और उसमें देखा और अरब से कहा कि वह राजकुमार को उसके पुराने महल की राख के पास ले जाने के लिये कहा। अरब ने तुरन्त ही उसे उसके महल की राख के पास पहुँचा दिया। लड़के को अपनी बिल्ली अभी भी वहीं पर मिल गयी। वह वहॉ आते जाते चूहे पकड़ते खाते ज़िन्दा थी।

अब तक उसने इतने सारे चूहे खा लिये थे कि चूहे बादशाह के राज्य में उसके राज्य की रक्षा के लिये अब बहुत सिपाही चूहे नहीं रह गये थे। वह इसके बारे में बहुत चिन्तित था। पर कोई भी चूहा बिल्ली से इस बारे में बात करने जाने के लिये तैयार नहीं था।

एक दिन चूहे बादशाह ने इस लड़के को देखा तो इस बारे में इससे सहायता मॉगने गया। लड़का बोला "मैं जरूर ही तुम्हारी सहायता करूॅगा पर अभी मैं खुद बहुत दुखी हूॅ।"

चूहे बादशाह ने पूछा — "आपको क्या दुख है।"

लकड़हारे के बेटे ने अपने शीशे की कहानी सुना दी जिसे एक बुढ़िया चुरा कर ले गयी थी। चूहा बादशाह बोला "यह मामला तो बिना किसी परेशानी के हल किया जा सकता है।"

उसने अपने सारे चूहों को बुलाया और उनसे पूछा कि राजकुमारी वाले महल में कौन रहता था और उनमें से किसी को क्या यह पता था कि वह शीशा कहॉ रखा था।

एक बूढ़ा चूहा लॅगड़ाता हुआ सामने आया और बादशाह के सामने की जमीन चूमता हुआ बोला कि वह जानता है कि शीशा कहॉ छिपा हुआ था। वह बुढ़िया उसे हर रात अपने तकिये के नीचे रख कर सोती है।

बादशाह ने उसे हुक्म दिया कि वह जल्दी से जल्दी उस शीशे को ला कर उसे दे। उसके दो साथी उसका साथ देने के लिये तैयार हो गये। क्योंकि वह बेचारा बूढ़ा था सो वे उसको अपनी पीठ पर बिठा कर महल ले गये। जब वे महल पहुॅचे तो रात हो गयी थी और बुढ़िया ने अभी अभी बहुत अच्छा खाना खाया था।

लॅगड़ा चूहा कमरे में घुसते हुए बोला "हम अच्छे समय पर आये हैं आज हमें अच्छा खाना भी मिल जायेगा।"

जब तक बुढ़िया गहरी नींद सोयी तब तक उन्होंने इन्तजार किया। फिर लॅगड़ा चूहा उसके पलंग पर चढ़ गया और अपनी पूॅछ से उसकी नाक में तब तक गुदगुदी करता रहा जब तक उसको छींक नहीं आ गयी और उसका सिर उसके तकिये से नीचे नहीं गिर गया।

ऐसा होते ही दूसरे चूहों ने उसके तकिये के नीचे से शीशा निकाल लिया। उसके बाद उन्होंने लॅगड़े चूहे को अपनी पीठ पर बिठाया और अपने बादशाह के पास ले गये।

लड़का अपना शीशा पा कर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी बिल्ली को उठाया ताकि वह उसके चूहे दोस्तों को फिर कोई नुकसान न पहुॅचा सके और वहॉ से चल दिया।

उसने अपना शीशा निकाला और उसमें देखा तो तुरन्त ही वह अरब वहॉ प्रगट हो गया और बोला "हुक्म मेरे सुलतान।"

लड़के ने उसे सोने के कपड़े का एक सूट और एक ताकतवर सेना लाने के के लिये कहा। जैसे ही उसने घूम कर देखा तो एक आदमी उसके पीछे उसके शाही कपड़े ले कर खड़ा हुआ था। उसने कपड़े पहने। एक बहुत सुन्दर घोड़ा उसके सामने खड़ा हुआ था। जैसे ही वह अपने घोड़े पर चढ़ा तो एक बहुत बड़ी सेना हथियार लिये उसके पीछे पीछे चल दी।

इस शान से वह राजकुमारी के शहर में घुसा। वह अपने महल के आगे जा कर रुक गया। उसके सिपाही लोग उसके महल के

चारों ओर घेरा बना कर खड़े हो गये। जब बादशाह ने अपने महल के चारों ओर इतने सारे सिपाही देखे तो वह हमले के डर से अपनी जान और राजगद्दी के लिये कॉप गया।

लड़का बादशाह के पास पहुँचा और उसे विश्वास दिलाया कि अगर वह अपनी बेटी की शादी उससे कर देता है तो उसे डरने की कोई बात नहीं है।

बादशाह तो इस खुशी भरे आश्चर्य से इतना खुश हुआ कि वह न केवल अपनी बेटी ही उसको देने के लिये तैयार हुआ बल्कि अपना राज्य भी देने के लिये तैयार हो गया।

बुढ़िया को मोटे होठ वाला घसीट कर ले गया और दोनों प्रेमी उसके बाद जीवन भर खुशी खुशी रहे। उन्होंने फिर कभी उस शीशे को अपने से अलग नहीं किया जो हमेशा उनकी हर जरूरत पूरी करता रहा।

33 छोटी हायसिन्थ का घर[26]

एक बार की बात है कि एक बादशाह था जिसका बेटा बहुत सुन्दर था। उसकी सुन्दरता की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती थी। जो भी उसे देखता था वह उसकी सुन्दरता को देखता खड़ा रह जाता था। उसका पिता भी अपने बेटे से आधा घंटे के लिये भी दूर नहीं रह सकता था।

एक बार बादशाह बीमार पड़ गया और राज्य के बहुत सारे होशियार डाक्टरों और होजाओं की निगरानी में भी मर गया। सारा महल महान दुख में डूब गया पर उनका रोना धोना किसी काम नहीं आया। वह तो अब ज़िन्दा हो नहीं सकता था।

एक शाही घर बनवाया गया और बादशाह का मृत शरीर उसमें रखवा दिया गया। उसके बाद बादशाह का बेटा जो उस समय **25** साल का था राजगद्दी पर बैठा।

कई साल बीत गये। एक दिन उसने अपना वातावरण बदलने के लिये अपने लाला यानी वज़ीर के साथ बाहर जाने का प्रोग्राम बनाया। उन्होंने अपने साथ बहुत सारा सामान नहीं लिया। वे अपने अपने घोड़ों पर चढ़े और सारा दिन बिना कहीं रुके चलते रहे जब तक उन्हें शाम नहीं हो गयी।

[26] Little Hyacinth's Kiosk. Tale No 33

वे शाम तक एक नदी के किनारे पहुॅच गये जो एक बहुत बड़े मैदान में से हो कर बहती थी। पानी का कुछ हिस्सा ऊॅचे ऊॅचे पेड़ों में छिपा हुआ था। मैदान में बहुत सारे खुशबू वाले फूल खिल रहे थे। वह जगह एक मुस्कुराते हुए बागीचे की तरह थी और नदी का बर्फ जैसा ठंडा पानी ताजगी और ज़िन्दगी देने वाला था।

जब बादशाह ने जो अपने पिता के मरने के बाद अक्सर ही बहुत दुखी रहता था यह सब देखा तो अपने लाला से कहा "मुझे यह जगह बहुत अच्छी लग रही है। क्यों न हम यहॉ थोड़ी देर बैठ कर सुस्ता लेते हैं। मैं थोड़ी देर के लिये अपने पैर पानी में रखूॅगा फिर हम आराम करेंगे।"

लाला की आशा जाग उठी कि इस जगह की सुन्दरता शायद बादशाह के दुख को कुछ कम कर सके। वे दोनों वहीं बैठ गये। वहॉ बैठ कर उन्होंने कौफ़ी पी चिलम पी। शाम भर वे बुलबुलों के गीत सुनते रहे। वह जगह उनको इतनी अच्छी लगी कि वे उसे छोड़ना ही नहीं चाहते थे।

नौजवान बादशाह बोला — "लाला मैं यहॉ कुछ दिन और रुकना चाहता हूॅ क्योंकि इस सुन्दर सी प्यारी सी जगह का सारी दुनियॉ में कोई मुकाबला नहीं।"

लाला को भी यही लगा कि यह जगह सचमुच खुशी देने वाली थी फिर भी थी तो वह रेगिस्तान में ही। वे लोग वहॉ रात को नहीं रुक सकते थे।

नौजवान बादशाह बोला — "ठीक है। पर आज रात को तो हम यहॉ रुक ही सकते हैं। पर कुछ दिन बाद हम यहॉ फिर आयेंगे।"

कुछ देर बैठने के बाद बादशाह उठा और आगे पीछे घूमने लगा और घूमते घूमते बोला — "मैं यहॉ एक घर बनवाऊॅगा जिसमें मैं अपनी गर्मियॉ बिता सकूॅ।"

जब वह यह कह रहा था तो उसने देखा कि एक बूढ़ा एक जग लिये नदी की ओर आ रहा था। वह नदी के पास आया और उसने अपना जग उसके पानी से भरा।

बादशाह उसे देख कर कुछ उत्सुक हुआ तो उसने उस बूढ़े से पूछा — "आप कौन हैं और कहॉ से आये हैं?"

बूढ़ा बोला — "यहॉ से आधा घंटे की दूरी पर एक लड़की का घर है जिसे छोटी हायसिन्थ कहते हैं। यह नदी भी उसी की है। वह यहॉ हर साल तीन दिन बिताने आती है। चालीस देव उसकी रक्षा करते हैं। पर तुम्हारी यहॉ आने की हिम्मत कैसे हुई। मैं तुम्हें सलाह देता हूॅ कि इससे पहले कि तुम्हें यहॉ कोई देख ले तुम यहॉ से जल्दी से जल्दी बाहर चले जाओ नही तो तुम मारे जाओगे।"

हालॅकि यह सुन कर बादशाह डर गया था पर फिर भी वह उत्सुक था। उसने बूढ़े से पूछा कि यह कौन से लड़की थी जो यहॉ इस तरह से **40** देवों से सुरक्षित रहती थी। बूढ़ा मुस्कुराया और उसने अपनी चेतावनी दोहरायी।

वह बोला — "मुझे तुम्हारे लिये बहुत दुख है पर मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूॅ। तुम यहॉ से जल्दी से जल्दी चले जाओ।" पर बादशाह तो ऐसे ही छोड़ने वाला नहीं था।

बूढ़े ने भी बादशाह की अनोखी सुन्दरता देखी तो उसने भी सोचा कि दुनियॉ में इतना सुन्दर कोई ओर नौजवान नहीं हो सकता था। वह भी इतना ही सुन्दर था जितनी कि उनकी हायसिन्थ। जैसे एक सेब के दो टुकड़े कर दो तो उसके दोनों आधे तो एक जैसे ही सुन्दर होंगे न।

यह सोच कर उसने नौजवान से कहा — "यहॉ से एक घंटे की दूरी पर एक ऊॅचे पहाड़ के पीछे देवों की मॉ रहती है। तुम वहॉ जा कर उससे सुरक्षा मॉग सकते हो। तुम उससे यह भी पता लगा सकते हो कि तुम हायसिन्थ को कैसे देख सकते हो।"

बादशाह को बूढ़े की यह सलाह कुछ जॅच गयी सो वह लाला को ले कर वहॉ से चल दिया। ठीक समय से उन्होंने पहाड़ पार कर लिया तो वहॉ उन्होंने जो कुछ देखा तो उससे तो बस उनकी चीख ही निकलने वाली थी।

वहॉ घाटी में एक मीनार जितनी लम्बी स्त्री बैठी हुई थी। उसकी एक टॉग पहाड़ पर रखी हुई थी और दूसरी घाटी में फैली हुई थी। वह एक घर जितनी बड़ी किशमिश चूस रही थी जिसकी आवाज दो मील दूर तक सुनी जा सकती थी। जब वह सॉस लेती

तो उसके सामने हवा का एक बवंडर सा उठ जाता था। और उसकी बॉहें आठ गज लम्बी थीं।

जब दोनों ने उसे देखा तो वे तो बड़ी मुश्किल से उसे उस तरह मॉ कह कर सलाम कर सके और उसे गले लगा सके। किसी तरह से उन्होंने यह सब किया तो देवों की मॉ बोली — "मैंने तुम्हें मक्खियों की तरह मसल दिया होता अगर तुमने मुझे मॉ कह कर न पुकारा होता तो। तुम्हें यहॉ किसने भेजा है।"

सिर से पैर तक कॉपते हुए बादशाह ने कहा — "एक कुँए पर हमें एक बूढ़ा मिला था – छोटी हायसिन्थ का एक नौकर। उसने हमसे कहा कि अगर हम मौत से बचना चाहते हैं तो यहॉ आ जायें। ओ मॉ। छोटी हायसिन्थ देखने में कैसी लगती है। जबसे मैंने उसका नाम सुना है मुझे उसे देखे बिना चैन नहीं है। मैं उसे कैसे देख सकता हूँ।"

देवों की मॉ बोली — "छोटी हायसिन्थ देखने में बहुत बहुत सुन्दर है। इस धरती पर उसके बराबर की सुन्दरता का कोई भी नहीं है। बहुत लोगों ने उसे देखने की कोशिश की है पर कोई भी उसे देख नहीं सका हालॉकि उसको देखने के लिये सब मर गये।

मेरे **40** बेटे उसके घर की दिन रात रक्षा करते हैं। वे उस क्षेत्र में किसी चिड़िया को भी पर नहीं मारने देते। इसलिये तुम उसको देखने का विचार छोड़ दो नहीं तो तुम भी मारे जाओगे और वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

बादशाह ने उससे विनती की कि — "मॉ कुछ तो करो। मेरे ऊपर दया करो। मैं आपको इसका बदला जरूर दूँगा।" वह उससे बहुत देर तक और बहुत नम्रता से विनती करता रहा कि देवों की मॉ का दिल पिघल गया।

उसने लाला को एक झाड़ू में बदला और बादशाह को एक तम्बाकू के डिब्बे में बदला जिन्हें उसने अपनी कमर की पेटी में खोंसा और चली। तीन पग में ही वह छोटी हायसिन्थ के घर पहुँच गयी।

वहॉ पहुँच कर उसने अपनी जेब से एक मुट्ठी भर रेत निकाली और फर्श पर बिखेर दी। फिर उसने बादशाह से कहा — "तुम डरना नहीं। इस समय सारे देव सोये हुए हैं। तुम सीधे उस कमरे में चले जाओ जहॉ वह लड़की सो रही है। वहॉ पहुँच कर तुम और कुछ मत करना। बस उसकी उँगली में से उसकी अँगूठी निकालना और उसे मेरे पास ले आना।"

बादशाह हिम्मत कर के उसके कमरे में चला गया जहॉ वह सो रही थी। वाह क्या दृश्य था। सबसे अच्छे शब्द भी लड़की की सुन्दरता का बखान नहीं कर सकते।

उसकी बॉहें टरकौइज़[27] की तरह से चमक रही थीं। और जैसे वह अपने बिस्तर पर लेट रही थी उससे ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई स्वर्ग की हूर यानी सुन्दरी लेटी हुई हो।

[27] Turquoise is a shade of very bright blue color. It is a gem also of the same color.

उसको देख कर बादशाह की ऑखें चकाचौंध हो गयीं और वह अपने होश खो बैठा। पर फिर उसे देवों की मॉ के शब्द याद आये तो उसने उसकी उॅगली से उसकी अॅगूठी निकाली और जल्दी से देवों की मॉ के पास भाग आया।

उसने बादशाह को उठाया और फिर तीन पग में ही अपने घर आ गयी। वहॉ पहुॅच कर उसने बादशाह को एक जग में बदल दिया और उसे अपने पास रख लिया।

सुबह को जब लड़की जागी तो उसने देखा कि उसके हाथ की एक अंगूठी गायब है। वह सोचने लगी कि उसे उसने कहॉ पर रखा हो सकता है। या शायद वह कहीं पर गिर गयी हो।

उसने अपना सारा घर छान मारा पर वह उसे वहॉ नहीं मिली। उसने उसे बागीचे में ढूॅढने की कोशिश की पर वह वहॉ भी नहीं मिली। तब उसने देवों को बुलाया और उनसे पूछताछ की पर उनको भी कुछ नहीं मालूम था।

लड़की इस सबसे बहुत गुस्सा हुई और उसने देवों को बहुत डॉटा। तब सब देव **40** भिन्न भिन्न दिशाओं उसे ढूॅढने गये पर वह उनको वहॉ भी नहीं मिली।

तब देव अपनी मॉ के पास गये और उससे पूछा कि क्या उसको अॅगूठी के बारे कुछ पता था। पर उनकी मॉ बोली — "क्या तुम लोगों की अक्ल घास चरने गयी है। क्या उसके घर में कोई घुस सकता है जबकि हम सब यहॉ हैं। किसको पता है कि उस लड़की

ने ही उसे कहीं गिरा दिया हो।" कह कर उसने अपने बेटों को वहॉ से भगा दिया।

अगली रात बादशाह ने देवों की मॉ से फिर विनती की कि वह उसे लड़की को देखने दे। देवों की मॉ उसे फिर से लड़की के घर ले गयी। पहले की तरह से रेत फर्श पर बिखेरा और बादशाह से कहा — "तुम उसके सिवाय और कुछ मत करना जो मैं तुमसे करने के लिये कहूॅ। तुम उसके एक कान का बुन्दा उतार कर ला कर मुझे दे दो।"

बादशाह सीधा उस लड़की के कमरे में गया उसके एक कान का बुन्दा उतारा और वहॉ से जाने को था कि उसको लगा कि वह उसे छोड़ नहीं पायेगा। फिर वह देवों की मॉ का कहना मान कर वह उसे ले कर देवों की मॉ के पास भाग आया। उसने उसे फिर से एक जग में बदल कर फर्श पर रख दिया।

हयासिन्थ जब अगले दिन सो कर उठी तो उसने देखा कि उसके एक कान का बुन्दा गायब है। अबकी बार वह बहुत गुस्सा हुई और उसने बूढ़े को बुला भेजा।

बूढ़ा बहुत अच्छी तरह जानता था कि क्या हुआ है पर वह बोला — "बेटी। यहॉ से तो कोई मक्खी भी नहीं उड़ती। कोई कारवॉ नहीं जाता। कोई सॉप नहीं आता। तुम कहती हो कि तुम्हारी चोरी हुई है। यह तो असम्भव है।

हो सकता है कि तुम्हारी अँगूठी घास में गिर गयी हो जब तुम घास में चल रही हो। मैं तुम्हारी दोनों चीज़ों को ढूँढने की कोशिश करूँगा और जैसे ही वे मुझे मिल जायेंगी मैं उन्हें तुम्हें ला कर दूँगा।"

यह कह कर उसने लड़की को शान्त करने की कोशिश की। हालॉकि लड़की इस बात से बिल्कुल भी सन्तुष्ट नहीं थी पर फिर भी उसने बूढ़े से कहा — "यह तुम केवल कहने के लिये कह रहे हो। मुझे तो यह पूरा विश्वास है कि कोई मेरे कमरे में घुसा है और मेरे गहने चुरा कर ले गया है।"

फिर उसने अपने देव रक्षकों से कहा कि अगर ऐसी कोई घटना फिर घटी तो उन्हें मालूम है कि उन्हें क्या करना है। उस दिन वह सारा दिन बहुत गुस्सा रही।

बादशाह की विनम्रता भरी प्रार्थना पर देवों की मॉ उसे फिर से लड़की के घर ले कर गयी और इस बार उससे कहा कि वह केवल उसके दोनों गालों को चूम कर वापस आ जाये और कुछ न करे।

खुशी से भरा हुआ बादशाह उस लड़की के कमरे में घुसा पर वह लड़की उस दिन इतनी गुस्सा थी और यह पहेली सुलझाने की ताक में थी कि वह उस रात सो ही नहीं सकी। बस अपने चारों ओर देखती रही।

जैसे ही उसकी ऑखें उस सुन्दर नौजवान पर पड़ीं तो वह तो खुशी से भर गयी। उधर बादशाह यह सोच कर कि वह सो रही

होगी उसके दोनों गाल चूमने के लिये आगे बढ़ा। गाल चूम कर जैसे ही वह वहॉ से वापस जाने वाला था कि लड़की ने बादशाह को अपनी बॉहों में भर लिया और बोली —

"प्रिय तुम यहॉ अन्दर कैसे आये। डरो नहीं। मैं तो तुम्हारी ही हूॅ। आज मैंने वह पा लिया है जिसको मैं बहुत दिनों से ढूॅढ रही थी।"

बादशाह तो अपनी इस खुशकिस्मती पर विश्वास ही नहीं कर पाया। लड़की की सुन्दरता से प्रभावित हो कर वह तो अपने होश ही खो बैठा। लड़की उसके ऊपर गुलाबजल छिड़क कर उसे होश में लायी। फिर वे दोनों सुबह होने तक बातें करते रहे।

तब लड़की ने कहा — "अबसे मैं तुम्हारी हूॅ और तुम मेरे हो। हालॉकि मैं यह जगह नहीं छोड़ सकती फिर भी मैं तुमसे कभी अलग नहीं होऊॅगी। अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो तुम यहीं रहो मेरे पास।"

बादशाह बोला — "ओ मेरी सुलताना। मैं एक बादशाह हूॅ। जब मैं बाहर घूम रहा था तो मैं एक कुॅए के पास आया तो मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं अपने लिये गर्मी में रहने के लिये यहॉ एक मकान बनवाऊॅगा।" तब उसने उसे अपना हाल बताया।

लड़की बोली — "अगर ऐसी बात है तब हमें तुम्हारी राजधानी चलना चाहिये। वहॉ अपनी शादी करनी चाहिये और फिर अपना समय तुम्हारी राजधानी और मेरे शहर के बीच बॉट लेना चाहिये।"

फिर उसने देवों को बुलाया और वे दोनों देवों की मॉ के पास गये। लड़की ने देवों की मॉ से कहा — "मॉ। हमने एक दूसरे को पा लिया है। अब हम जाना चाहते हैं। अल्लाह तुम्हारे ऊपर दया करे और तुम्हारी रक्षा करे।"

देवों की मॉ ने कहा — "जाओ सुरक्षित रूप से जाओ पर मेरे लिये **40** भेड़ें रोज भेजती रहना नहीं तो तुम लोग समृद्ध नहीं रह पाओगे।"

बादशाह बोला — "हम तो आपके इतने ऋणी हैं कि जो कुछ आपने कहा है हम उसे भूल ही नहीं सकते। हम आपको **40** भेड़ें रोज भेजते रहेंगे और आपके बेटे इस जगह की हमेशा रक्षा करते रहेंगे।"

इस तरह से वे वहॉ से चले आये और ठीक समय पर अपनी राजधानी आ गये। सारा महल उनका स्वागत करने गया। बड़े वज़ीर साहब को बुलाया गया और उन दोनों की शादी हो गयी। अगले **40** दिन और **40** रात तक यह उत्सव मनता रहा। दावतें चलती रहीं। चालीस दिन के बाद उनकी शादी पक्की हो गयी।

वे दोनों एक साथ बहुत प्यार से रहे और अपनी पूरी ज़िन्दगी खुश रहे – कभी बादशाह की राजधानी में कभी छोटी हायसिन्थ के शहर में। वे कभी भी देवों की मॉ को **40** भेड़ें भेजना नहीं भूले।

34 राजकुमार अहमद[28]

एक बार एक बादशाह था जिसके एक बेटा था। एक दिन बादशाह अपने बेटे से गुस्सा हो गया तो उसने हुक्म सुना दिया कि उसका सिर काट दिया जाये। वज़ीर ने बादशाह को उसके इस निर्दयी फैसले के लिये बहुत समझाने की कोशिश की।

उसने कहा — "सरकार। **40** साल एक दिन के बराबर होते हैं और आपके केवल एक ही बेटा है। आप उसे मत मारिये वरना आप बहुत पछतायेंगे।"

सो बादशाह ने सोचा कि वह अपने आपको उसे केवल राज्य से बाहर निकाल कर ही सन्तुष्ट हो जायेगा। मॉ बोली — "अगर मेरा बेटा मुझसे अलग किया गया तो फिर मैं यहॉ नहीं रह पाऊॅगी।" सो मॉ और बेटा दोनों महल से चले गये।

घूमते घामते वे दोनों एक झील के किनारे पहुॅचे जहॉ वे कुछ समय के लिये रुक गये। एक दिन जब वे पानी के किनारे घूम रहे थे तो राजकुमार का पैर एक पत्थर से टकरा गया। उसने उसे उठाया तो वह तो उसकी चमक ही देखता रह गया।

राजकुमार ने वह पत्थर अपनी जेब में रख लिया और मॉ बेटा फिर से आगे चल पड़े। चलते चलते वे एक शहर में पहुॅचे जहॉ

[28] Prince Ahmed. Tale No 34

एक घर में उन्होंने घर की देखभाल का काम ढूँढ लिया और मालिक के घर की देखभाल करने लगे।

वहॉ के बादशाह ने एक आदेश निकाल रखा था कि कोई वहॉ किसी तरह की रोशनी नहीं करेगा – कोई आग नहीं जलायेगा मोमबत्ती नहीं जलायेगा कोई लैम्प नहीं जलायेगा और किसी और तरह की भी चमक नहीं करेगा।

पर वह पत्थर जिसे राजकुमार उठा कर लाया था और जिसे उसने अपनी मेज पर रख दिया था उससे न केवल उसका घर बल्कि सारा शहर चमक रहा था। उसकी मॉ ने उससे उस पत्थर को छिपा कर रख देने के लिये कहा क्योंकि पता चलने पर वह पत्थर उनसे ले लिया जायेगा। इसके अलावा वे किसी मुसीबत में भी फॅस सकते हैं।

पर राजकुमार उसकी किसी भी बात को नहीं सुन रहा था। उसका कहना था कि क्योंकि उसने न तो मोमबत्ती जलायी थी और न ही कोई लैम्प जलाया था इसलिये उसने किसी भी शाही आदेश का उल्लंघन नहीं किया था।

एक रात बादशाह अपनी खिड़की से बाहर झॉक रहे थे तो उन्होंने देखा कि किसी पत्थर से बहुत ही चमकीली रोशनी निकल रही थी। उन्होंने अपने वज़ीर को बुलाया और पूछा कि इस रोशनी का क्या मतलब है। लाला उन्हें केवल इतना ही बता सका कि यह रोशनी किसी घर से आ रही थी।

तुरन्त ही इस बात की जॉच के लिये नौकर चाकर भेजे गये। वे राजकुमार के घर आये और उसका दरवाजा खटखटाया और राजकुमार से कहा कि बादशाह ने उसे अपने सामने बुलाया है।

राजकुमार बादशाह के सामने गया तो बादशाह ने उससे पूछा कि उसने बादशाह के आदेश को न पालने की हिम्मत कैसे की। उसने जवाब दिया कि उसने बादशाह के किसी आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

यह रोशनी न तो किसी मोमबत्ती की थी और न ही किसी लैम्प की। यह रोशनी तो एक पत्थर से निकल रही थी जिसे उसने सड़क पर से उठाया था। बादशाह ने कहा "उस पत्थर को मेरे पास लाओ।"

राजकुमार पत्थर को लेने के लिये घर लौटा और उसे महल ले गया और बादशाह को दे दिया। उसने सोचा कि खतरा टल गया।

बादशाह ने वह पत्थर अपने वज़ीर को दिखाया तो वज़ीर ने बताया कि "हुजूर यह तो हीरा है। उस आदमी से इसे और मॉगिये जो इन्हें थैला भर कर लाया है क्योंकि जहॉ यह होगा वहीं और भी बहुत सारे होंगे।"

बादशाह ने फिर उस राजकुमार को बुलाया और उससे कहा कि वह ऐसे पत्थर थैला भर कर ला कर उसे दे। राजकुमार ने कहा — "मैं अब इन्हें और कहॉ से ला कर दूँगा।"

बादशाह बोले — "यह तुम्हारा काम है। अगर तुमने **40** दिनों के अन्दर अन्दर मुझे ला कर नहीं दिया तो मैं तुम्हारा सिर ले लूँगा।"

बहुत अधिक परेशान हो कर राजकुमार घर लौटा और अपनी मॉ से बादशाह ने उसे जो काम दिया था उसके बारे में बताया। मॉ बहुत गुस्सा हो कर बोली — "मैंने तुमसे पहले ही नहीं कहा था कि यह पत्थर हमारे लिये बदकिस्मती ले कर आयेगा। अब हम इतने सारे हीरे कहॉ से लायेंगे।" और वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

इसी निराशा की दशा में वे लोग कई दिन तक रहते रहे। फिर एक दिन अचानक मॉ ने एक तरीका निकाला। वह बोली — ऐसे रोने धोने से काम नहीं बनेगा। हमको कुछ तो करना चाहिये। तुम वहीं जाओ जहॉ से तुमने यह पत्थर उठाया था। जा कर देखो शायद तुम्हें वहॉ ऐसे पत्थर और मिल जायें।"

राजकुमार ने तुरन्त ही अपना घोड़ा उठाया और उस पर सवार हो कर उसी जगह पहुँच गया जहॉ से उसने वह पत्थर उठाया था। जब वह वहॉ पत्थर ढूँढ रहा था तो उसने कुछ दूरी पर एक पहाड़ देखा।

उसकी उत्सुकता उसे पहाड़ के उस पार ले गयी। पहाड़ के दूसरी ओर उसे एक महल दिखायी दिया। वह आगे बढ़ा तो उसने देखा कि एक सात सिर वाला ड्रैगन उसकी पहरेदारी कर रहा था। राजकुमार के मुँह से निकला "ओह। मैं क्या ढूँढने निकला था और

मुझे क्या मिला।" गुस्से में आ कर उसने अपना बड़ा चाकू निकाला और उस ड्रैगन के छह सिर एक ही वार में काट डाले।

ड्रैगन ने उसे चुनौती दी कि "अगर तुम आदमी हो तो तुम मुझे दोबारा मारो।"

राजकुमार बोला — "मैं नहीं।" और ड्रैगन को उसके भाग्य पर छोड़ कर वहॉ से चला गया।

अचानक उसने महल में आती एक बहुत भयानक आवाज सुनी। उसने सुना कोई कह रहा था — "तुमने मेरे दुश्मन को मारा है और अब तुम मुझे छोड़े जा रहे हो।"

वह वापस महल की ओर मुड़ा और महल के अन्दर घुसा तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की को देखा। वह लड़की बोली — "पूरे 10 साल हो गये हैं जब इस ड्रैगन ने मुझे पकड़ा था। अब मैं तुम्हारी हूॅ। तुम जहॉ चाहो वहॉ मुझे ले चलो।"

राजकुमार ने कहा — "अभी नहीं। अभी तो मेरे पास दूसरे कुछ जरूरी काम हैं।"

पर लड़की ने उससे विनती की कि वह उसे वहॉ न छोड़े सो उसने लड़की को अपने घोड़े पर अपने आगे बिठाया और अपनी मॉ के पास लौट आया।

लड़की ने देखा कि राजकुमार बहुत दुखी और परेशान था। सो एक दिन उसने उससे पूछा कि क्या चीज़ उसे परेशान कर रही थी।

राजकुमार बोला — "बस तुम यह न पूछो। केवल अल्लाह ही इसमें मेरी सहायता कर सकता है और कोई नहीं।"

पर लड़की ने भी उसको शान्ति से बैठने नहीं दिया जब तक कि उसने उसे अपनी परेशानी उसे बता नहीं दी। लड़की बोली — "यह तो बड़े दुख की बात है कि तुम इतनी छोटी सी बात के लिये इतने परेशान हो। इस काम में मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। अभी तो मुझे बहुत प्यास लगी है। तुम उस कुँए से मुझे एक जग पानी ला कर दो ताकि मैं अच्छी तरह से पानी पी सकूँ।"

राजकुमार ने सोचा कि वह इस लड़की को नहीं बल्कि अपनी एक मुसीबत को साथ ले कर आ गया है। पर अभी वह उसकी मेहमान थी उससे कुछ गुस्सा सा होने के बावजूद वह उसके लिये कुँए से पानी ले कर आया और उसे दिया।

बजाय उस पानी को पीने के उस लड़की ने राजकुमार से कहा कि वह उस पानी को उसके ऊपर सिर से ले कर पॉव तक छिड़क दे। और लो वह पानी तो हीरों के रूप में उसके शरीर से नीचे गिर पड़ा।

लड़की खुशी से बोली — "अब तुम इन्हें इकट्ठा कर लो एक थैले में भरो और बादशाह के पास ले जाओ।" राजकुमार ने ऐसा ही किया।

जब राजकुमार अहमद चला गया तब बादशाह ने वज़ीर को बुलवाया और उसको वे हीरे दिखाये।

वज़ीर जीत के भाव से बोला — "अब आपने देखा? मैं ठीक था। अबकी बार आप उससे थैला भर कर मोती मॉगिये।"

बादशाह ने पूछा — "पर वह मोती कहॉ से लायेगा?"

वज़ीर ने जवाब दिया — "जहॉ से वह ये हीरे ले कर आया है वहीं से मोती भी ले कर आयेगा। आप वैसा ही कीजिये जैसा मैं आपसे कहता हूॅ।"

सो बादशाह ने एक बार राजकुमार को फिर अपने पास बुलाया और उसे एक थैला भर कर मोती लाने के लिये कहा। राजकुमार ने पूछा — "मैं इतने सारे मोती कहॉ से लाऊॅगा?"

बादशाह बोला — "मैं तुम्हें **40** दिन देता हूॅ। अगर तुमने तब तक मुझे मोती ला कर नहीं दिये तो तुम्हें मुझे अपनी ज़िन्दगी देनी पड़ेगी।"

राजकुमार बेचारा अपना सिर झुका कर दुखी मन से घर चला आया। लड़की ने पूछा "क्या बात है। तुम इतना परेशान क्यों हो?" राजकुमार ने दुखी मन से अपनी नयी मुसीबत उसे बता दी।

वह बोली — "तुम उस महल के पीछे जाओ जहॉ तुम मुझसे सबसे पहले मिले थे। वहॉ तुम्हें एक महल और मिलेगा जहॉ तुम्हें मोती मिल जायेंगे।"

राजकुमार ने अपना घोड़ा उठाया और उसी महल की ओर चल पड़ा। समय से वह उस महल में पहुॅच गया जहॉ उसे एक और ड्रैगन को मारना पड़ा। महल में घुस कर उसने चारों ओर देखा तो

वहॉ उसे एक और लड़की दिखायी दी जो पहली वाली लड़की से भी अधिक सुन्दर थी। वह उसे भी घर ले आया।

घर आ कर उसने राजकुमार से कहा कि वह उसके ऊपर पानी छिड़क दे। वह पानी उसके ऊपर से बह कर मोतियों के रूप में नीचे गिर पड़ा। राजकुमार ने उनको समेटा एक थैले में भरा और बादशाह को दे आया।

वज़ीर बहुत लालची था। उसका मन अभी भी नहीं भरा था। उसने बादशाह से कहा कि वह उस लड़के से लाल लाने के लिये और कहे। राजकुमार ने बहुत दुखी हो कर लड़की से बादशाह के इस हुक्म के बारे में भी कहा।

इस बार भी राजकुमार खुशकिस्मत रहा। लड़की ने कहा कि दूसरे महल के बाद एक तीसरा महल और है जहॉ उसे अपनी इच्छित वस्तु मिल जायेगी। उसे तीसरा महल मिल गया। वहॉ भी उसने एक ड्रैगन मारा

वह उस महल में अन्दर गया तो वहॉ उसे एक और लड़की मिली जो उन दोनों लड़कियों से भी अधिक सुन्दर थी। वह उसको घर ले आया। उसने उसकै ऊपर भी पानी छिड़का तो वह लाल के रूप में उसके शरीर से नीचे गिर पड़ा। इनको उसने एक थैले में भर लिया और बादशाह को दे आया।

जब वज़ीर ने यह देखा तो वह फिर बादशाह से बोला — "देखा न। मैंने कहा था न। अबकी बार आप उससे एक घर

मॉगिये जो हीरे मोती और लाल का बना हो और समुद्र में बना हो।"

बादशाह को शक हुआ कि वह लड़का उसकी ऐसी इच्छा पूरी कर सकता है पर फिर भी उसने अपनी इच्छा उस लड़के को बतायी और इस काम के लिये उसे **40** दिन दिये। यह सुन कर राजकुमार उस दिन के लिये बहुत पछताया जब वह इस शहर में आया था।

बहुत दुखी हो कर वह घर पहुँचा। तीनों लड़कियों ने उससे उसके दुख का कारण पूछा तो राजकुमार ने उन्हें सब बताया। सबसे बड़ी लड़की ने उससे किसी खास जगह जाने के लिये कहा। वहॉ एक पहाड़ है उस पर चढ़ जाना।

उसकी चोटी से बहुत ज़ोर से चिल्लाना "हाजी बाबा" और जब तुम इसके जवाब में कोई आवाज सुनो तो कहना कि "तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी अपना सबसे छोटा महल मॉगती है। अगर तुम्हारी बात का कोई जवाब न दे तो ध्यान रखना कि तुम उन्हें दोबारा मत पुकारना वरना तुम गये।"

राजकुमार अपने घोड़े पर चढ़ा और बतायी हुई जगह पर चल दिया। वहॉ उसे एक पहाड़ दिखायी दिया। वह उस पर चढ़ गया और जितनी ज़ोर से पुकार सकता था उतनी ज़ोर से पुकारा "हाजी बाबा"।

उसे लगा कि उसके पैरों के नीचे धरती हिली और एक आवाज आयी "तुम्हें क्या चाहिये?"

राजकुमार बोला — "आपकी सबसे बड़ी बेटी अपना सबसे छोटा महल मॉगती है।"

फिर से धरती हिली और एक आवाज गूॅजी — "उसकी इच्छा उसके कहने से पहले ही पूरी की जा चुकी है।" बिना इन्तजार किये हुए राजकुमार वहॉ से घर की ओर चल दिया।

अगली सुबह जब बादशाह सो कर उठे और अपनी खिड़की से बाहर झॉका तो जो कुछ उन्होंने बाहर देखा तो उससे तो उनकी ऑखें चकाचौंध हो गयीं। उनको अपनी ऑखें कई बार बन्द करनी पड़ीं।

उनको आश्चर्य हुआ कि "यह क्या हो सकता है।" उन्होंने अपनी ऑखें मलते हुए अपनी ताली बजा कर अपने वज़ीर को बुलाया और कहा — "मेरी ऑखों को क्या हो गया है। मैं बिना पलक झपकाये बाहर देख ही नहीं सकता।"

वज़ीर बोला — "यह समुद्र के बीच एक कीमती पत्थर है जो आपकी ऑखें चौंधिया रहा है बादशाह हुजूर।"

यह सुन कर बादशाह अपने सब वज़ीरों पाशाओं और बे के साथ अपनी नयी चीज़ देखने के लिये अधीर हो बैठे थे। जब सारा दरबार उस महल को देखने में व्यस्त था तो लड़की ने राजकुमार से फिर से उसी पहाड़ पर जाने के लिये कहा और कहा कि वह उस महल को वापस ले ले।

राजकुमार जल्दी से पहाड़ की चोटी पर गया और चिल्लाया अपना महल वापस ले लो। उसके पैरों के नीचे एक बार धरती फिर से हिली और फिर उसी आवाज में किसी ने कहा "हमने उसे वापस ले लिया है।"

राजकुमार जब घर लौट कर आया तो उसने देखा कि वह महल अब वहॉ नहीं था जहॉ वह पहले था। बाद में उसे यह भी पता चला कि बादशाह और उनके सब दरबारी समुद्र में डूब गये।

लड़कियों ने कहा — "यह शहर हमारे रहने के लिये नहीं है। ओ शाहज़ादे चलो यहॉ से चलते हैं।" सो राजकुमार अहमद उन तीनों लड़कियों और अपनी मॉ को ले कर अपने शहर चल दिया।

रास्ते में उनको एक लॅगड़ा देव मिला। राजकुमार ने तो उसको तुरन्त ही मार दिया होता पर देव ने उससे अपनी ज़िन्दगी के लिये विनती की कि हो सकता है कि वह किसी दिन उसकी सहायता करे। लड़कियों ने भी उसकी विनती का समर्थन किया सो राजकुमार ने उसे छोड़ दिया और वह भी उन्हीं के साथ चल दिया।

जब वे लोग अपनी राजधानी के पास पहुॅचे तो वे कुछ सुस्ताने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गये। पर सबसे बड़ी लड़की ने अपने जादू से वहीं उसी जगह एक इतना सुन्दर घर बना दिया जितना सुन्दर घर पहले कभी किसी ने नहीं देखा था।

अब ऐसा हुआ कि राजकुमार का पिता यानी वहॉ का बादशाह उस समय अपनी खिड़की से बाहर देख रहा था तो उसने भी वह

सुन्दर महल देखा। उसने तुरन्त ही अपने वज़ीर को बुलवाया और उससे पूछा कि वह सब क्या था।

इस बात की जानकारी लेने के लिये बहुत सारे नौकर वहॉ भेजे गये तो उन्होंने यह खबर ला कर दी कि वह महल राजकुमार अहमद का है और राजकुमार अहमद तो बादशाह का अपना ही बेटा था।

यह सुन कर बादशाह खुद उस महल में गये। उनके बेटे ने अपने पिता का पूरे आदर और बहुत खुशी के साथ स्वागत किया। उसने इनको वे तीनों लड़किया दिखायीं जिनकी सुन्दरता देख कर बादशाह इतना खुश हुआ कि उसने उनको अपने महल में रखने की इच्छा प्रगट की।

जब बादशाह अपने महल में लौटा तो उसने अपने वज़ीर से कहा — "राजकुमार अहमद को मार दिया जाये।"

वज़ीर ने एक बार फिर से बादशाह को यह करने से रोकने की कोशिश की। उसने उनको याद दिलाया कि गुस्से में आ कर एक बार पहले भी वह राजकुमार को देश निकाला दे चुके हैं। कौन जानता है कि उस बेचारे ने क्या क्या दुख सहे हैं।

पर बादशाह ने उसकी बात नहीं मानी और वह अपने फैसले पर अड़े रहे कि राजकुमार को मौत की सजा दे देनी चाहिये। वज़ीर बेचारा लम्बी सॉस ले कर बोला — "अगर ऐसा ही होना है तो फिर ऐसा ही हो। आप उसे महल में बुलवायें और उसे खाने में जहर दे दें।"

अगले दिन राजकुमार को बुलावा आया कि वह बादशाह के महल में खाना खाये। वहॉ जाने से पहले लड़की ने उसे अपनी उॅगली से उतार कर एक अॅगूठी दी और कहा — "जब तुम महल में हो तब जो कुछ भी खाना तुम्हें खाने के लिये दिया जाये उसे खाने से पहले तुम इस अॅगूठी से जरूर छूना।"

उसने उस अॅगूठी को अपनी उॅगली में पहन लिया और महल की ओर चल दिया। कुछ देर तक वह अपने पिता से बात करता रहा फिर उसके बाद खाना लगाया गया। जितने भी खाने राजकुमार के लिये लाये गये थे उन सबमें जहर था।

खाने से पहले चुपचाप से ही उसने हर खाने को खाने से पहले अपनी अॅगूठी से छू लिया और फिर खा लिया जिससे इस जहर ने उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया। मेज साफ कर दी गयी और राजकुमार ने बादशाह से विदा ली।

यह देख कर कि उसका बेटा जहर वाला खाना खा कर मरा नहीं था बादशाह ने अपने वज़ीर को बुलवाया और उससे कहा — "वह तो जहर भरा खाना खा कर नहीं मरा अब हमें क्या करना चाहिये।"

वज़ीर बोला कि अबकी बार उसे राजकुमार को "तौला" खेल खेलने के लिये बुलाना चाहिये। जो उस खेल में हारे उसे रस्सी से बॅधवा देना चाहिये। अगर राजकुमार हार जाता है तो उसे रस्सी से बॉध कर मरवा देना चाहिये।"

इस तरह बादशाह ने राजकुमार को एक बार फिर से अपने महल में बुलाया। कुछ समय बातें करने के बाद बादशाह बोले — "आओ बेटे आज "तौला" खेल खेलते हैं। जो जीतेगा वह हारने वाले को रस्सी से बॉधेगा।" दोनों खेले और बादशाह हार गये।

राजकुमार ने उनकी सजा को छोड़ दिया। उसको बादशाह के इरादों के बारे में कुछ पता भी नहीं था सो दोनों ने खेल फिर से शुरू किया। दूसरी बार भी बादशाह हार गये। राजकुमार ने दूसरी बार भी बादशाह का आदर करते हुए बादशाह को सजा नहीं दी और उनसे फिर से खेल खेलने के लिये कहा। इस बार राजकुमार ने जानबूझ कर बादशाह को जीतने दिया।

बादशाह बोले — "अब अपनी शर्तों के अनुसार मैं तुम्हें बॉधूॅगा।" अब राजकुमार को इसमें क्या ऐतराज हो सकता था। उसके पिता ने उसे एक बहुत ही मजबूत रस्सी से मजबूती से बॉध दिया। फिर उसने एक मारने वाले को बुलाया। पर इस बीच राजकुमार ने अपने आपको एक ज़ोर का झटका दिया और उन रस्सियों को तोड़ दिया। अब वह आजाद था।

जब बादशाह ने यह देखा तो उसने बहाना बनाया कि यह तो केवल एक हॅसी मजाक था। वह तो बस यह जानना चाहता था कि उसके अन्दर आदमियों वाली ताकत है भी या नहीं।

यह सुन कर राजकुमार बोला — "अगर ऐसा ही है तो आप मुझे लोहे की जंजीरों से बॉध कर देखें।"

उसकी चुनौती के अनुसार उसे इस बार लोहे की जंजीरों से बॉध दिया गया पर उसने उनको भी एक ही झटके में तोड़ दिया। बादशाह ने ऊपर से तो दिखाया कि वह अपने बेटे की ताकत देख कर बहुत खुश था पर वास्तव में अन्दर ही अन्दर बहुत गुस्सा था। अब वह उसे मारने की कोई दूसरी चाल सोचने लगा।

सो ऊपर से मुस्कुराते हुए वह बोला — "मैं देख रहा हूॅ कि तुम एक बहुत ही वीर आदमी बन गये हो। शायद तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हारी यह ताकत कहॉ बसती है।"

राजकुमार को फिर भी अपने पिता पर कोई सन्देह नहीं हुआ सो उसने कहा — "अगर आप मेरे सिर में से तीन बाल तोड़ लें और फिर उन्हें मेरी उॅगली पर ही लपेट दें तो मैं बिल्कुल शक्तिहीन हो जाऊॅगा।"

बादशाह बोला — "मैं खुद यह जॉचना चाहता हूॅ।"

राजकुमार ने नम्रता दिखाते हुए अपने आप ही अपने सिर के तीन बाल तोड़े और बादशाह को दे दिये। बादशाह ने वे बाल अपने बेटे से ले कर उसी की उॅगली पर लपेट दिये। अब वह बिल्कुल बच्चे जैसा हो गया था।

अब बादशाह ने मारने वाले को बुलाया और उसे हुक्म दिया कि वह उसके बेटे का सिर काट दे। मारने वाला यह नहीं कर सका और वहॉ से भाग गया। अब बादशाह नहीं जानता था कि उसे आगे क्या करना है।

कुछ देर के बाद उसने खुद ने अपने बेटे की ऑखें निकालीं और उन्हें अपनी जेब में रख लिया। फिर उसने राजकुमार को एक सूखे कुॅए में फिंकवा दिया। राजकुमार का छोटा कुत्ता भी अपने मालिक के पीछे पीछे कुॅए तक चला गया।

जब राजकुमार को कुॅए में फेंका गया तो वह भी उसके पीछे ही कुॅए में कूद पड़ा और उसके बुरे दिनों में उसके साथ ही रहा।

कुछ समय बीतने बाद बादशाह ने तीनों लड़कियों को अपने महल में बुलाने की योजना बनायी। उन लोगों ने उनके लिये **40** गाड़ियों को भेजने का सोचा जिनमें हर एक में एक में एक दासी हो। और इनके अलावा **40** गाड़ियॉ उनका सामान लाने के लिये हों।

योजना के अनुसार ऐसा ही किया गया तो तीनों लड़कियों ने उन चालीसों दासियों के हाथ काट कर उन्हें खाली गाड़ियों में बिठा कर वापस भेज दिया। इससे बादशाह बहुत गुस्सा हो गया और उसने लड़कियों से लड़ाई की घोषणा कर दी। पर लड़कियों ने देव की सहायता से बादशाह की सारी सेना को मार दिया।

इस बीच उस कुॅए के पास एक कारवॉ आ कर रुका जिसमें राजकुमार को अन्धा कर के फेंक दिया गया था। उसके कुत्ते ने कारवॉ के लोगों के प्रति कुछ दोस्ताना भाव दिखाये तो उन्होंने उसको रोटी खाने के लिये दी। रोटी को वह कुॅए तक ले गया और उसमें फेंक दी।

वह फिर कारवॉ के पास लौटा और फिर रोटी ले जा कर कुॅए में डाल दी। फिर वह तीसरी बार पहुॅचा तो कारवॉ के सरदार ने कहा — "इस कुत्ते का या तो कोई बच्चा है या फिर कोई और है जो कहीं छिपा हुआ है।"

सो वह कुत्ते के पीछे पीछे गया और उसने कुत्ते को रोटी को कुॅए में डालते देखा तो चिल्लाया। कुॅए में से आवाज आयी "मेहरबानी कर के मुझे बाहर निकालो।"

तुरन्त ही एक रस्सी कुॅए में डाली गयी और उस लड़के से कहा गया गया कि वह उसे पकड़ ले। लड़के ने अन्दर से चिल्ला कर कहा कि उसके हाथ कुछ इस तरह बॅधे हुए थे कि वह रस्सी नहीं पकड़ सकता था। राजकुमार ने उसे यह भी बताया कि उसके दुश्मन ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया था।

कारवॉ का सरदार बोला — "अगर हम तुम्हें बाहर निकाल लें और अपने साथ ले चलें तो लोग समझेंगे कि हमने तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार किया है। और इसके बाद हमारे कारवॉ को बहुतों के गुस्से का शिकार होना पड़ेगा। इसलिये अच्छा यही रहेगा कि तुम यहीं रहो और अल्लाह की सहायता के लिये प्रार्थना करो।"

यह कह कर उन्होंने उसे खाना दिया और उसे वहीं छोड़ कर चले गये। राजकुमार अहमद उनकी इस छोटी सी दया का बहुत आभारी था। वह रात भर वहीं बैठा रहा। रात में एक पीर वहॉ आया जिसने अपनी जेब से दो ऑखें निकाल कर उसकी ऑखों के

छेद में लगा दीं जिससे वह तुरन्त ही देखने लगा। पर वह पीर जो उसके लिये ऑखों की रोशनी ले कर आया था वह उसके उसे देखने से पहले ही गायब हो गया था।

राजकुमार अब अपने शहर लौटा और अपने पिता के महल में लौटा। यह देख कर कि उसका पिता उसकी लायी हुई तीनों लड़कियों के साथ लड़ने गया हुआ था वह बोला — "मेरे पिता और बादशाह। तीन दिन के अन्दर अन्दर मैं देव को पकड़ लूॅगा और उसे तुम्हारे हाथों में दे दूॅगा।"

उसका पिता यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने वायदा किया कि अगर उसने ऐसा किया तो वह उसकी सारी इच्छाऐं पूरी कर देगा। इधर देव ने उन सब सिपाहियों को मार दिया था जिन्हें उसके साथ लड़ने के लिये भेजा गया था।

राजकुमार अहमद ने अपने पिता से विनती की कि वह उसे अपने लिये एक घोड़ा और एक तलवार चुनने दें क्योंकि उसका अपना घोड़ा अऔर अपनी तलवार उसी दिन उसके पिता के महल में रह गयी थी जब उसके पिता ने उसकी ऑखें निकाल कर उसे कुॅए में फिंकवाया था।

उसने एक घोड़ा और एक तलवार चुन ली। अपनी तलवार अपनी कमर में लगा कर और अपने घोड़े पर बैठ कर वह देव से मिलने चल दिया।

जब लड़कियों ने देखा कि राजकुमार अकेला ही उनसे लड़ने आ रहा है तो इसका नतीजा उन्होंने यह निकाला कि लगता है कि अब बादशाह के पास और कोई आदमी लड़ाई पर भेजने के योग्य नहीं है।

जब राजकुमार देव के पास पहुँचा तो देव ने बजाय उस पर हमला करने के अपने आपको रोक लिया और दोनों विरोधियों ने एक दूसरे का नंगी तलवारों से सामना किया। दोनों ने अपनी दोस्ती फिर से ताजा की और दोनों एक साथ बादशाह के महल लौटे।

देव को देख कर तो बादशाह बहुत डर गया। वह तो हिल भी नहीं सका। वह चिल्लाया — "उसे इधर मत लाओ।"

राजकुमार बोला — "हमारी बात तो यही हुई थी कि मैं देव को पकड़ कर लाऊँगा। अब आप चाहें तो इसे मार सकते हैं।"

यह सुन कर देव बादशाह के ऊपर कूद पड़ा। उसने उसे उसकी गद्दी से नीचे उतार दिया और मार दिया। फिर वह वज़ीरों की ओर घूमा और बोला — "देखिये। उसका बेटा राजकुमार अहमद ही मुझे यहॉ ले कर आया है।"

वज़ीर तो शाहज़ादे के प्रति बादशाह के निर्दय व्यवहार से कभी भी राजी नहीं था सो उसने राजकुमार अहमद का स्वागत किया और उसे राजगद्दी पर बिठाया। खूब खुशियॉ मनायी गयीं।

पहला काम तो राजकुमार ने यह किया कि उसने अपनी मॉ और तीनों लड़कियों को महल में बुलवाया जिन्होंने उसके साथ खूब खुशियॉ बॉटीं।

35 जिगर[29]

एक बुढ़िया को जिगर खाने की बहुत इच्छा हुई। उसने अपनी बेटी को कुछ पैसे दिये जिससे उसने उससे जिगर खरीद कर लाने के लिये कहा। उसने उससे कहा कि वह उसे तालाब में अच्छी तरह से धोये और फिर उसे सीधा घर ले कर आये।

लड़की शारशी[30] गयी वहॉ उसने जिगर खरीदा और उसे ले कर सीधी तालाब पर गयी और वहॉ उसे अच्छी तरह से धोया। जैसे ही उसने उसे पानी में से निकाला तो एक सारस उड़ता हुआ आया उसने नीचे कूद मारी जिगर लड़की के हाथ से छीना और उड़ गया।

लड़की बोली — "मेरा जिगर मुझे वापस दो ओ सारस ताकि मैं उसे अपनी मॉ के पास ले जाऊॅ वरना वह मुझे मारेगी।"

सारस बोला — "अगर तुम मुझे थोड़े से जौ ला कर दो तो मैं तुम्हारा जिगर तुम्हें वापस कर दूॅगी।"

लड़की बेचारी एक किसान के पास गयी और उससे कहा — "ओ किसान मुझे थोड़ा जौ दो ताकि मैं उसे सारस को दे सकूॅ ताकि वह मुझे मेरा जिगर लौटा सके। जिसे मैं अपनी मॉ के पास ले जा सकूॅ।"

---

[29] The Liver. Tale No 35

[30] Tscharschi – means market

किसान बोला — "अगर तुम मेरे खेतों के लिये अल्लाह से बारिश की प्रार्थना करो मैं तुम्हें जौ दे दूँगा।"

यह लड़की को बहुत आसान लगा। जब वह अल्लाह की प्रार्थना कर रही थी — "ओ अल्लाह बारिश कर दो। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी मॉ को दूँगी।"

तभी वहॉ एक आदमी आया जिसने कहा कि "बिना अगरबत्ती के अल्लाह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार नहीं करेगा।"

सो वह लड़की अगरबत्ती की दूकान पर गयी और उससे कहा — "मुझे अगरबत्ती दो जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँ जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी मॉ को दूँगी।"

दूकान वाला बोला — "मैं तुम्हें अगरबत्ती दे दूँगा अगर तुम मुझे जूता बनाने वाले से जूता ला कर दे दो।"

लड़की बेचारी जूता बनाने वाले के पास गयी और उससे कहा — "ओ जूता बनाने वाले। तुम मुझे जूता दो। यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी। दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को

दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी मॉ को दूँगी।"

जूता बनाने वाला बोला — "पहले तुम मुझे बैल का चमड़ा ला कर दो तभी मैं तुम्हें जूता दे सकूँगा।"

सो वह लड़की खाल रंगने वाले के पास गयी और उससे कहा — "ओ खाल रंगने वाले मुझे बैल का चमड़ा दे दो। मैं यह चमड़ा जूता बनाने वाले को दूँगी। जूता बनाने वाला मुझे जूता बना कर देगा। यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी।

दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी मॉ को दूँगी।"

खाल रंगने वाला बोला — "तुम मुझे बैल की खाल ला दो तो मैं तुम्हें बैल का चमड़ा दे दूँगा।"

सो लड़की एक बैल के पास गयी और उससे कहा — "मुझे बैल की खाल चाहिये। यह खाल मैं चमड़ा बनाने वाले को दूँगी। चमड़ा मैं जूता बनाने वाले को दूँगी। जूता बनाने वाला मुझे जूता बना कर देगा।

यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी। दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ

ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी मॉ को दूँगी।"

बैल बोला — "अगर तुम मुझे भूसा ला कर दोगी तो मैं तुम्हें खाल दे दूँगा।"

अबकी बार लड़की एक मजदूर के पास गयी और उससे भूसा मॉगा — "मुझे थोड़ा सा भूसा दो। मैं इसे ले जा कर बैल को खिलाऊँगी। बैल मुझे अपनी खाल देगा। यह खाल मैं चमड़ा बनाने वाले को दूँगी। चमड़ा मैं जूता बनाने वाले को दूँगी। जूता बनाने वाला मुझे जूता बना कर देगा।

यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी। दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी मॉ को दूँगी।"

मजदूर बोला — "मैं तुम्हें बहुत सारा भूसा दूँगा अगर तम मुझे एक चुम्बन दोगी।"

लड़की ने देखा कि बिना उसे चुम्बन दिये वह सारस से जिगर वापस नहीं ले सकती सो उसने उसे चूम लिया। मजदूर ने भी उसे बहुत सारा भूसा दिया।

भूसा ले कर वह बैल के पास गयी जिसने उसे खाल दी
खाल ले कर वह चमड़ा बनाने वाले के पास गयी जिसने उसे चमड़ा दिया
चमड़ा उसने जूता बनाने वाले को दिया जिसने उसे जूता दिया

जूता उसने दूकानदार को दिया जिसने उसे अगरबत्ती दी
अगरबत्ती जला कर उसने प्रार्थना की जिससे अल्लाह ने किसान के लिये बारिश की
किसान ने उसे जौ दिये जिन्हें उसने ले जा कर सारस को दिये
सारस ने उसे उसका जिगर वापस किया
तब कहीं जा कर वह अपना जिगर ले कर अपनी मॉ के पास गयी

मॉ ने उसे पकाया तब दोनों ने मिल कर उसे खाया।

36 ज्योतिषी[31]

एक बार एक विधवा स्त्री थी जिसके तीन बेटियॉ थीं। उनमें से एक सूत कातती थी और दूसरी दो सिलाई करती थीं। इसी तरह से वे अपनी जीविका चला रही थीं।

एक बार इन लड़कियों ने एक जिप्सी बुढ़िया जाती हुई देखी तो आपस में कहा कि "चलो हम इससे अपना भविष्य पूछते हैं।" सब राजी हो गयीं तो उन्होंने उस बुढ़िया को अपने पास बुला लिया।

बुढ़िया ने सबसे बड़ी लड़की का हाथ देख कर कहा — "तेरी किस्मत कुॅए की तली में है।" बीच वाली लड़की का हाथ देख कर उसने बताया कि उसकी किस्मत कब्रिस्तान में थी और सबसे छोटी वाली लड़की से उसने कहा "तेरी किस्मत में तो शर्म लिखी है।" ये रहस्य भरे शब्द कह कर जिप्सी चली गयी।

एक दिन जब बड़ी लड़की अपना सूत कात रही थी तो उसका धागा टूट गया। उसकी तकली चरखे में से निकल कर दूर जा गिरी और लुढ़कती चली गयी जब तक कि वह अचानक एक कुॅए में नहीं गिर पड़ी।

वह बोली — "अरे मेरी तकली तो कुॅए में गिर गयी। उसे निकालने में मेरी सहायता करो।"

---

[31] The Fortune Teller. Tale No 36

उसकी दोनों बहनों ने उसके शरीर में रस्सी बॉध कर उसे नीचे कुॅए में भेज दिया। जब वह कुॅए की तली में पहुॅची तो उसे एक लोहे का दरवाजा दिखायी दिया।

उसने उसे खोला और उसके अन्दर चली गयी। वहॉ पहुॅच कर उसने एक नौजवान और एक लड़की को सोते हुए देखा। उनके पलंग के बराबर में ही एक पालना था जिसमें एक बच्चा सो रहा था।

उसने अपना शौल उतारा और उसे नौजवान और लड़की को ओढ़ा दिया। उसकी ऑखें एक चाकू पर पड़ीं तो उसने उसे उठा कर अपनी कमर में खोंस लिया।

फिर वह कुॅए की सतह तक लौटी और अपनी बहनों को इशारा किया जिन्होंने उसे ऊपर खींच लिया। जब वह ऊपर आ गयी तो उसकी बहनों ने उससे पूछा कि वह कुॅए में इतनी देर तक कहॉ रही।

उसने कहा कि "मैं अपनी तकली ढूॅढ रही थी जो मुझे मिल गयी।" उसके इस जवाब से उसकी दोनों बहनें सन्तुष्ट हो गयीं।

अब वह नौजवान और वह लड़की जो कुॅए में सो रहे थे तो उनमें से वह नौजवान तो एक बहुत अमीर आदमी था और वह लड़की एक परी थी। उस परी को उस नौजवान से प्यार हो गया था। वे रोज ही कुॅए की तली में मिला करते थे।

जब वह परी जागी तो अपने ऊपर एक शौल देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। वह यह सोच कर बहुत दुखी हुई कि किसी धरती के प्राणी ने उन्हें देख लिया था। उसने तुरन्त ही अपने बच्चे को उठाया और वहॉ से गायब हो गयी।

जब नौजवान जागा तो उसे अपना चाकू नहीं मिला और ढूँढने पर भी नहीं मिला तो उसने देखा कि परी भी उसे छोड़ कर चली गयी है सो अब वह परी से आजाद है तो वह अब अपना चाकू ढूँढेगा कि किसने उसका चाकू लिया है।

वह कुँए से बाहर आया उसने कुछ छुटपुट चीज़ें खरीदीं और उन्हें बेचने निकल गया। जिस किसी ने उससे जो कुछ भी खरीदना चाहा उससे यह जरूर कहा गया कि वह ये चीज़ें पैसे के लिये नहीं बेच रहा था। वह उसी आदमी से इनका सौदा करेगा जिसके पास किसी तरह का चाकू हो।

सड़कों पर घूमते घूमते आखिरकार वह उस घर पर भी आया जहॉ वे तीनों बहनें रहती थीं। उन्होंने उसको बुलाया और उससे तकलियॉ सुइयॉ और सिल्क खरीदी।

जब उन्होंने उन सबकी कीमत पूछी तो उसने उनसे कोई पैसा नहीं लिया बल्कि उसकी जगह कोई पुराना चाकू मॉगा तो सबसे बड़ी लड़की वह चाकू ले आयी जो वह कुँए में से ले कर आयी थी। इसे उसने अपनी चीज़ों के बदले में स्वीकार कर लिया और अपने घर चला गया।

घर पहुॅच कर उसने अपनी मॉ से कहा कि उसे उस लड़की को घर जाना चाहिये जिसने उसे परी से आजाद कराया है और उससे शादी कर लेनी चाहिये। सो उसकी मॉ अपने बेटे की ओर से लड़की के पास गयी। लड़की ने उसकी पत्नी बनने के लिये हॉ कर दी तो समय पर उनकी शादी हो गयी।

अब हम इस खुश खुश जोड़े को यहीं छोड़ते हैं और दूसरी बहनों के पास चलते हैं। एक दिन वे दोनों बहनें नहानघर गयीं। वे नहा कर घर वापस लौट रही थीं कि बीच वाली लड़की ने देखा कि उसकी छोटी बहन उसके साथ नहीं है। वह तो बिकुल्ल ही गायब हो गयी थी।

उस लड़की ने मुहल्ले भर में अपनी बहन को ढूॅढा पर वह तो अपना कोई भी नामोनिशान पीछे छोड़े बिना ही कहीं चली गयी थी। जब वह ढूढते ढूॅढते थक गयी तो वह कब्रिस्तान में जा कर बैठ गयी। वह बहुत थक गयी थी सो वह वहीं सो गयी।

तभी एक घोड़े की हिनहिनाहट से उसकी ऑख खुल गयी। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि एक नौजवान आदमी अपने घोड़े से उतर रहा था। वह आदमी एक कब्र पर गया उस कब्र को खोला और एक नौजवान को निकाल कर उसे कुछ सुॅघाया और उसे होश में लाया। फिर उसने उसे कुछ खाने पीने को दिया और उससे यह जानना चाहा कि उसने उसकी बात मानी या नहीं मानी।

नौजवान बोला — "मैं ऐसी जिन्दगी से तो मर जाना अधिक पसन्द करूँगा।" इस पर आदमी ने कब्र को बन्द कर दिया और वहॉ से चल य

वह नौजवान एक बादशाह था जो बहुत बीमार पड़ गया था और वह आदमी इसका डाक्टर था। राजकुमार की सुन्दरता ने उसके ऊपर इतना प्रभाव डाला कि वह उसे अकेला छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सका।

एक दिन उसने राजकुमार से कहा कि वह उसको जरूर ठीक करेगा अगर वह हमेशा उसकी बात माने तो। राजकुमार उससे राजी नहीं था और डाक्टर उससे बदला लेने के लिये उसे कुछ ऐसा पीने के लिये देता था जिससे वह मरा सा पड़ जाता था।

उसके माता पिता ने यह सोच कर कि वह मर गया उसे एक कमरे में रख दिया था। डाक्टर रोज रात को वहॉ जाता था और उस बेचारे नौजवान को परेशान करता था जब तक कि वह उसकी बात न मान ले।

जब उस लड़की ने यह दृश्य देखा तो उसने सुबह का इन्तजार किया और फिर घर चली गयी। क्योंकि वह बहुत भूखी थी सो रास्ते में उसने एक कटोरा बूँदी[32] खरीद ली थी।

जब वह उसे खा रही थी तो उसने देखा कि दूकान के सब लोग रो रहे थे। उसने उनके रोने का कारण पूछा तो वे बोले — "हमारा

[32] Lokma or Luqma – from Arabic in Turky

शाहज़ादा 40 दिन पहले मर गया है और उसकी बूँदी हमारे हाथ पर है।" यह सुन कर उसने सुलताना से मिलने की इच्छा प्रगट की कि उसके पास सुलताना के लिये एक बहुत ही महत्वपूर्ण खबर है।

उसको महल ले जाया गया। वहॉ जब सुलताना उसके सामने आयी तो उसने उसे बताया कि जैसा कि वे मानते थे उनका बेटा मरा नहीं था बल्कि ज़िन्दा था। अगर वह उसकी शादी उससे कर दें तो वह उसे ठीक कर के ला सकती थी।

सुलताना बोली — "क्या तुम पागल हो गयी हो? वह तो 40 दिन हुए मर चुका है। अब तक तो केवल उसकी हड्डियॉ ही बची होंगी।"

पर लड़की ने कसम खायी कि "ऐसा नहीं है। आपका बेटा अभी ज़िन्दा है। अगर आपको विश्वास नहीं है तो आज रात को आप मेरे साथ चलें मैं आपको आपका बेटा दिखाती हूँ।"

सुलताना ने बादशाह से राय ली तो बादशाह तो बहुत खुश हुआ। वे दोनों रात को लड़की के साथ कब्रिस्तान गये। वहॉ पहुँच कर वे एक जगह छिप गये। आधी रात को डाक्टर आया। उसने उसकी कब्र खोली। वह राजकुमार को होश में लाया। उससे अपना सवाल पूछा पर वही जवाब पाया।

अपने बेटे की आवाज सुन कर बादशाह और सुलताना दोनों रोते हुए उसके पास पहुँचे और उसे अपने सीने से लगा लिया। बाद में डाक्टर का सिर धड़ से अलग करवा दिया गया और वह लड़की

जिसने यह खबर दी थी कि राजकुमार ज़िन्दा है उससे उसकी शादी कर दी गयी।

इस बीच छोटी लड़की को जो रास्ता खो गयी थी अपने घर का रास्ता मिल गया था। वह घर वापस लौट आयी थी और अपनी बहन के घर लौटने का इन्तजार कर रही थी। जब काफी देर तक भी वह लौट कर नहीं आयी तो उसने अपना फटा हुआ शाल ओढ़ा और उसकी खोज में चल दी।

वह भिखारिन की तरह से दर दर रोटी मॉगती हुई चली जा रही थी। एक दिन वह एक ऐसे घर में पहुॅच गयी जहॉ के रहने वाले का बेटा सुबह से शाम तक कुछ नहीं करता था बल्कि सारा दिन तकिये पर सिर रख कर लेटा रहता था।

उसके माता पिता चाहते थे कि उसकी शादी हो जाये पर कोई लड़की उसे पसन्द ही नहीं करती थी सो सारी लड़कियों ने उससे किसी भी तरह का कोई भी सम्बन्ध रखने से मना कर दिया था।

जब छोटी लड़की ने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो उसकी मीठी आवाज और सुन्दर चेहरा उस लड़के के माता पिता को भा गया। उन्होंने बहुत प्यार से उसे घर में बुलाया और कुछ सोच कर उससे पूछा — "मेरी बच्ची। हमारे एक बेटा है क्या तुम उसकी बहू बनना चाहोगी।"

लड़की बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

मॉ ने कहा — "पर हमारा बेटा किसी से एक शब्द भी नहीं बोलता।"

लड़की बोली — "मॉ जी। आप उसकी चिन्ता न करें। जब वह मेरा पति बन जायेगा तब मैं उससे जल्दी ही बुलवा लूॅगी।"

सो उन दोनों की शादी हो गयी। लड़की को उससे जान पहचान करने के लिये उसके साथ अकेला छोड़ दिया गया। लड़की ने देखा कि वह तो सचमुच ही वैसा है जैसा उसकी मॉ ने उसे बताया था। वह लड़का तो बस तकियों के बीच में अपना सिर दिये बिस्तर पर पड़ा रहता था और कभी किसी बोलता ही नहीं था।

लड़की ने कमरे का दरवाजा बन्द किया लड़के के पास गयी और उससे ऐसे बोली जैसे वह उसी से बात कर रही हो — "प्रिय मुझे छोड़ो न। तुमने मुझे इतनी कस कर क्यों पकड़ रखा है।"

बूढ़ा और बुढ़िया दोनों बाहर बैठे यह सब सुन रहे थे। ये शब्द सुन कर उन्हें लगा कि लगता है कि लड़की उसको बुलवाने में सफल हो गयी है।

शाम को बहू बेटे के सामने खाना परसा गया पर लड़के ने तकियों पर से अपना सिर ही नहीं उठाया सो लड़की दोनों के हिस्से का खाना खा गयी। फिर वह लेट गयी और सोने का बहाना करने लगी। इस बीच वह अपनी चादर में से लड़के को देखती रही।

जब लड़के ने सोचा कि लड़की गहरी नींद सो गयी होगी तो वह उठ कर चुपचाप सीढ़ियों से ऊपर चला गया। लड़की ने भी

चुपचाप उसका पीछा किया तो उसने देखा कि वह किसी बहुत ही प्यारी सी चीज़ से मिल रहा था पूरे चॉद की तरह सुन्दर।

उसने उसका इन शब्दों के साथ स्वागत किया — "ओ मेरे बे। तुम इतनी देर तक कहॉ थे मैं तो तुम्हारा इन्तजार करते करते थक गयी थी।"

लड़के ने उसे सब कुछ समझाया कि कैसे उसे वहॉ आने के लिये इन्तजार करना पड़ा जब तक वह लड़की सो नहीं गयी। वह सुन्दर लड़की परियों के बादशाह की बेटी थी जिसे लड़के ने सबसे पहले सपने में देखा था और उससे प्यार करने लगा था।

परी लड़की ने उससे कहा था कि "अगर तुम किसी और लड़की की ओर ऑख उठा कर भी न देखो तो मैं हर रात तुम्हारे पास आऊॅगी।"

लड़की ने कहा "तो यह बात है। यह लड़का इस लिये तकियों में सिर दबाये पड़ा रहता था और किसी दूसरे को नजर उठा कर देखना भी नहीं चाहता था।"

जब परी लड़की ने छोटी लड़की को यह कहते सुना तो वह बोली — "अगर तुमने उसकी ओर एक बार भी देखा तो फिर तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगे।"

जैसे ही लड़की ने परी लड़की के ये शब्द सुने तो वह नीचे कमरे में लौट गयी और कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। जब लड़का अपने कमरे में वापस लौटा तो उसने देखा कि उसके कमरे

का दरवाजा तो बन्द था। अब उसके इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि वह लड़की से दरवाजा खोलने के लिये कहता।

लड़की ने कहा कि वह कमरे का दरवाजा तभी खोलेगी जब वह उससे कुछ देर बात करेगा। अब वह इस बात को मना भी नहीं कर सकता था सो उसे उसकी बात माननी पड़ी।

लड़की ने दरवाजा खोला और उसे अन्दर आने दिया। जैसे ही लड़के की नजर लड़की पर पड़ी कि जादू के ज़ोर से दरवाजे और सीढ़ियों के बीच में एक दीवार खड़ी हो गयी जिसका मतलब था कि परी लड़की अब कभी उसके पास नहीं आयेगी।

लड़के माता पिता ने अपने लड़के के इस तरह से बदल जाने पर अल्लाह को बहुत धन्यवाद दिया। वे अपनी इस अजीब तरीके से पायी गयी बहू से इतने अधिक खुश हुए कि उन्होंने उनकी शादी दोबारा से धूमधाम से मनायी। और यह धूमधाम **40** दिन **40** रात चली।

37 बहन और भाई[33]

एक बार एक आदमी रहता था जिसका नाम था अहमद आगा। वह बहुत अमीर था। उसकी पत्नी के अलावा उसका कोई और नहीं था। उन लोगों की खुशियों में बस एक ही कमी थी कि उनके कोई बच्चा नहीं था।

वह कहा करता — "अल्लाह ने मुझे बहुत पैसा और समृद्धि दी है। इसके अलावा भी मैं एक आदरणीय आदमी हूॅ। क्या कभी ऐसा हो सकता है कि अल्लाह मुझे एक बच्चा दे दे। तब मेरी खुशियॉ साम्पूर्ण हो जायेंगी। मेरे मरने के बाद मेरी सारी सम्पत्ति उसकी हो जायेगी और मेरी प्रसिद्धि भी बढ़ जायेगी।"

एक रात जब वह इस बारे में सोच रहा था कि उसने अपनी पत्नी से कहा — "क्या यह इससे ज़्यादा अच्छा नहीं होता अगर अल्लाह हमें गरीबी के साथ कोई बच्चा दे देता।"

उसके ये शब्द उसकी पत्नी के दिल में चुभ गये। उस दिन सोने जाने से पहले उसने अल्लाह से प्रार्थना की कि वह उनको धीरज रखने की ताकत दे।

रात को उसने सपने में देखा कि वह एक समुद्र के किनारे बैठी हुई है कि एक मत्स्यकन्या अपने हाथों में एक बर्तन ले कर किनारे पर आयी और स्त्री से बोली — "अपने पति से कह देना कि

[33] Sister and Brother. Tale No 37

अल्लाह ने उसकी किस्मत उसे दे दी है। वह आये और उसे ले जाये।" सपने में ही वह उठी और जल्दी से पति को यह बताने के लिये घर दौड़ी गयी। खुशी में भर कर उसने अपने पति को और अपने आपको जगाया।

आदमी ने पूछा — "क्या बात है?"

स्त्री बोली — "कुछ नहीं। बल्कि तुमने मुझे जगाया है।"

आदमी बोला — "नहीं। वह तुम थीं जिसने मुझे जगाया है।"

तब उसकी पत्नी ने याद कर के उसे बताया कि उसने सपने में क्या देखा और क्या सुना।

पति ने कहा — "सो इसलिये तुमने मुझे जगाया।" कह कर वह पलट कर सो गया। परन्तु उसकी पत्नी के लिये वह सपना तो उसकी किस्मत खोलने वाला था।

सो सुबह को जब स्त्री उठी तो उसने अपने पति से समुद्र के किनारे जाने के लिये कहा तो पति बोला — "क्या बात कर रही हो। सपना तो सपना होता है। वह बेकार होता है।"

स्त्री बोली — "यह सपना बेकार नहीं भी हो सकता है।"

पति बोला — "बेवकूफ मत बनो। हमारी किस्मत सपनों में लिखी हुई नहीं है। अगर अल्लाह ने हमें ऐसी कोई भेंट देनी ही है तो वह हमें वह किसी और तरीके से देगा।"

पर उसकी पत्नी उसका पीछा नहीं छोड़ने वाली थी। उसने उससे जिद की — "फिर भी तुम जाओ तो सही। समुद्र तुम्हें निगल

नहीं जायेगा। क्या पता अल्लाह हमें इसी तरह से दे।" पति अब पत्नी की बातें और नहीं सह सका सो जब वह घूमने गया वह समुद्र के किनारे की ओर चला गया।

जब वह वहॉ घूम रहा था तो उसने देखा कि कोई काली सी चीज़ उसकी लहरों पर नाचती हुई किनारे की ओर चली आ रही थी। जब वह पास आ गयी तो उसने देखा कि वह तो एक बर्तन था जिसका मुँह कस कर बॅधा हुआ था।

आशा और डर के मिलेजुले भाव से उसने वह बर्तन पकड़ लिया और "बिसमिल्लाह" कह कर उसे खोला। ज़रा उसकी खुशी का ठिकाना तो देखो जब उसने उसमें दो नये जन्मे बच्चे देखे।

जब अहमद आगा ने उन्हें देखा तो वह तो खुद ही एक बच्चा बन गया। इस खुशी में उसे यही पता नहीं चला कि वह पहले क्या करे। उसने अपना शाल उतारा और सावधानी से उन दोनों बच्चों को उसमें लपेटा और उन्हें ले कर घर की तरफ दौड़ गया।

वह जब घर पहुँचा तो उसकी सॉस फूल रही थी। उसने वह पोटली अपनी पत्नी की गोद में डाल दी। जब उसने उसे खोला तो देखा कि उसमें तो दो नये जन्मे बच्चे थे। यह देख कर वह तो खुशी से पागल हो गयी। वह कभी उन्हें चूमती कभी अपने सीने से लगाती।

बच्चे भूखे थे सो वे ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। तब उन दोनों को ध्यान आया कि उन्हें उनके लिये दूध का इन्तजाम भी करना था।

अहमद उनके लिये एक आया का इन्तजाम करने के लिये जल्दी ही घर के बाहर चला गया। जल्दी ही उसे एक स्त्री मिल गयी। उसने उसे अच्छे पैसे दे कर रख लिया। जैसे ही वह आया घर में आयी तो बच्चों ने रोना बन्द कर दिया।

अगले दिन दो और आयाऐं काम पर रख ली गयीं। अब वे सब दोनों बच्चों की देखभाल करने लगीं – एक बेटा और एक बेटी। दोनों बढ़ने लगे और ताकतवर होने लगे।

एक दूसरा शहर था उसमें भी एक ऐसा ही जोड़ा था जिसके कोई बच्चा नहीं था हालॉकि अहमद आगा की तरह उसको भी एक बेटे की बहुत जरूरत थी। वह भी अल्लाह से बड़े मन से प्रार्थना किया करता था कि वह उसे एक बच्चा दे दे और जब उसने सुना कि उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गयी है तो उन्हें बहुत खुशी हुई।

यह खुशखबरी उनकी एक नौकरानी के द्वारा उनको मिली जो उनके यहॉ पहले काम किया करती थी पर उसकी पत्नी ने उसे इस लिये निकाल दिया था क्योंकि वह अपना काम ठीक से नहीं करती थी। वह अपनी मालकिन से इसलिये जलती थी कि उसकी मालकिन को बहुत खुशी मिलने वाली थी।

बदला लेने के लिये उसने अपने आपको एक आया बता कर वहॉ नौकरी कर ली। समय आने पर मालकिन को जुड़वॉ बच्चे पैदा हुए। पर जब उनकी मॉ सो रही थी और उनके पिता ने उन्हें देखा

भी नहीं था तो उसने उन दोनों बच्चों को एक बर्तन में रख कर उसे बन्द कर के सावधानी से समुद्र में बहा दिया।

जबकि पति सो रहा था तो उस नकली आया ने उसके कान में फुसफुसाया जो उसे लगा कि वह उसे अल्लाह का दिखाया हुआ एक सपना था। उसने उसके कान में कहा कि "वह एक सपना था। उसे धोखा दिया गया था। उसके कोई बच्चा नहीं हुआ था।"

अब क्योंकि मॉ भी सोयी हुई थी तो वह यह नहीं बता सकी कि उसके बच्चों का क्या हुआ। वे कहीं मिले भी नहीं। सो पति ने सपने को सच मान लिया और वह अपनी पत्नी पर बहुत गुस्सा हुआ कि उसने उसे धोखा देने की कोशिश की।

उसने अपनी पत्नी को घर से बाहर निकाल दिया और उस बेचारी का भी कोई था नहीं सो वह रोती हुई वहॉ से चल दी।

वह इधर उधर घूमती रही कि एक दिन हालॉकि उस समय अँधेरा था फिर भी उसे हर पहाड़ी का रंग अलग अलग दिखायी दे रहा था। यह देख कर वह डर गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। भूख और थकान से वह परेशान थी वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे।

पास में एक पेड़ देख कर वह रात बिताने के लिये उस पेड़ पर चढ़ गयी और अल्लाह की मेहरबानी का इन्तजार करने लगी। जब वह पेड़ की एक शाख पर ठीक से बैठ गयी तो वह सोने की कोशिश करने लगी।

जब सुबह हुई तो वह पेड़ से नीचे उतरी। उसे लग रहा था कि शायद उधर से उसे कोई आता जाता मिल जायेगा जिससे उसे कुछ रोटी मिल जायेगी। पर अफसोस वहॉ उसे कोई सहायता नहीं मिली।

कई घंटों तक घूमने के बाद वह फिर थक गयी और थकान के मारे एक जगह बैठ गयी। तभी उसने कुछ दूरी पर एक गड़रिया देखा और अपनी रही सही ताकत को इकट्ठा कर के उसने उसे बुलाया। गड़रिये ने उसे कुछ रोटी दी और उससे उसकी तकलीफ के बारे में पूछा।

जब उसने उसकी कहानी सुनी तो उसे इस पर बहुत दया आयी। जैसे जैसे समय बीतता गया स्त्री अपना दुख भूलती गयी पर वह अपने बच्चों के खोने का दुख नहीं भूली। उनकी याद कर के वह अक्सर लम्बी लम्बी सॉसें भरती और रोती कि वे कहॉ होंगे कैसे होंगे क्या कर रहे होंगे।

पर वे भले अहमद आगा के पास बहुत अच्छे से बड़े हो रहे थे। वे अब **13** साल के हो चुके थे और साथ साथ स्कूल जाते थे।

एक दिन लड़का अपने एक साथी के साथ खेल रहा था। उसके साथी को उसके अधिक अच्छे होने से ईर्ष्या थी सो वह बोला — "ओ लावारिस बच्चे। तुझे तो अहमद आगा ने समुद्र के किनारे पाया था।"

यह सुन कर लड़के की भौंहें तन गयीं और वह अपनी मॉ के पास भाग गया। वहॉ पहुॅच कर उसने मॉ को बताया कि उसके साथी ने उससे क्या कहा। उसने उसे शान्त करने की बहुत कोशिश की पर वह शान्त नहीं हो पाया।

पर उसी दिन लड़के ने सपने में एक गड़रिये की झोंपड़ी देखी और उसमें अपनी मॉ को देखा। सपने में ही उसकी मॉ ने उसे अपना सारा दुख बताया। जब उसने वह सपना अपनी बहन को बताया तो लो उसने भी कुछ वैसा सा ही सपना देखा था।

तब लड़के को पता चला कि उसका साथी उसे किस बात पर ताना मार रहा था। वह झूठ नहीं बोल रहा था वह तो सच ही बोल रहा था। तब वे दोनों भाई बहन अपने मुॅहबोले माता पिता के पास गये और उनको अपने अपने सपनों के बारे में बताया।

वह भला आदमी कुछ परेशान तो हुआ पर फिर उसने सच बता दिया कि सचमुच में ही उसने उनको बर्तन में बन्द पाया था जिसे समुद्र की लहरें किनारे पर डाल गयी थीं। पर वह उनकी मॉ के बारे में कुछ नहीं जानता।

भाई और बहन यह जान कर बहुत दुखी हुए कि उनकी मॉ एक गरीब गड़रिये की झोंपड़ी मं रह रही थी। बच्चों को किसी भी प्रकार से तसल्ली नहीं दी जा पा रही थी। आखिर लड़के ने यह निश्चय किया कि वह जा कर अपनी मॉ को ढूॅढेगा और बहन को वह अपने मुॅहबोले माता पिता के पास ही छोड़ जायेगा।

अपनी उत्सुकता और साहस से प्रेरित हो कर लड़का जल्दी से चल दिया। एक दिन रात को जब वह तारों के नीचे लेटा हुआ था तो उसको अपने सपने में अपनी मॉ के रहने की जगह दिखायी दी। संक्षेप में कहो तो उसने पॉच दिनों की यात्रा एक दिन में ही पूरी कर ली। उस समय न उसे भूख थी और न डर।

जब वह अपने सपने में देखे हुए रास्ते पर चलता जा रहा था तो उसे रास्ते में एक डरावना ड्रैगन मिला। अब लड़के के पास तो कोई हथियार था नहीं सो उसने वहीं पास में पड़ा एक पत्थर उठाया और उससे ड्रैगन को इतनी ज़ोर से मारा कि वह लुढ़कता हुआ नीचे गिर पड़ा।

ड्रैगन बोला — "अगर तुम आदमी के बच्चे हो तो तुम मुझे दोबारा मारो।" पर लड़का ड्रैगन को वहीं मरने के लिये छोड़ कर आगे चला गया।

लड़का बिना थके चलता रहा और समय से उस घाटी में पहुॅच गया जहॉ कभी उसकी मॉ ने एक पेड़ के ऊपर अपनी रात बितायी थी। यहॉ लड़का सुस्ताने के लिये रुका क्योंकि वह बहुत देर से चलता ही आ रहा था। लेटते ही उसकी ऑख लग गयी।

उधर मरे हुए ड्रैगन के छोटे भाई को जब पता चला कि उसके भाई के साथ क्या हुआ तो वह लड़के की खोज में निकल पड़ा। उसके भारी कदमों की आवाज से धरती हिल रही थी। उसने लड़के को जगा कर कहा कि तुम ही वह लड़के हो जिसने मेरे भाई को

मारा। अब मेरी बारी है।" यह कहते हुए वह अपने मुँह से झाग निकालते हुए और नाक से लपटें निकालते हुए लड़के के ऊपर कूद पड़ा।

अपने आपको बचाने के लिये उसने ड्रैगन की आगे की टॉग पकड़ ली और इतनी ज़ोर से खींची कि वह उसके शरीर से अलग हो गयी। उसने उसे दूर फेंक दिया।

ड्रैगन का बहुत सारा खून बह गया था सो वह बेचारा जमीन पर बैठ गया और बोला — "जिसने भी मुझे मारा है मेरा खजाना उसी का है।" इतना कह कर वह लुढ़कता चला गया और फिर पहाड़ की एक गुफा में गायब हो गया।

लड़के को कुछ उत्सुकता हुई तो उसने उस गुफा के अन्दर झॉक कर देखा तो उसने देखा कि एक सीढ़ी नीचे जा रही है। वह उस सीढ़ी से नीचे उतरा तो उसने देखा कि वहॉ तो एक महल है। वह उस महल में चारों तरफ घूम घूम कर उसे देखने लगा।

वहॉ उसने देखा कि एक सुन्दर लड़की राजगद्दी पर बैठी हुई थी। वह लड़की इतनी प्यारी थी कि उसका दिल उस लड़की के प्यार से पूरी तरह से भर गया। उधर वह लड़की भी लड़के को देख कर उसकी ओर आकर्षित हो गयी थी।

पर क्योंकि उसको ड्रैगन के बारे में नहीं पता था सो वह बोली — "अरे अगर ड्रैगन को इस नौजवान का पता चल गया तो वह हम दोनों को मार देगा।"

फिर उसने लड़के से कहा — "तुम बिना सॉस वाले ड्रैगन के इस महल में कैसे आये। वह तो जिस किसी को अगर देख भी लेता है तो वह मर जाता है।"

तब लड़के ने उसे बताया कि किस तरीके से उसने दोनों ड्रैगनों को मार दिया। फिर उसने उससे अपने साथ आने के लिये कहा। उसे लगा कि वह लड़की उसके साथ आना नहीं चाहती थी तो उसने फिर से विनती की और जल्दी करने के लिये कहा क्योंकि उसको और भी जरूरी काम करना था।

यह सुन कर लड़की ने कहा — "अगर ऐसा है तो यहॉ तो बहुत कुछ है जो हम यहॉ से अपने साथ ले जा सकते हैं।"

यह कह कर लड़की लड़के को अपने साथ ले गयी। लड़का उसके पीछे पीछे चला गया। वे वहॉ उस महल के **40** कमरों में घूमे। वे सारे कमरे सोने चॉदी हीरे लाल और कीमती रत्नों से भरे हुए थे।

यह सब देखने के बाद लड़का बोला — "प्रिये मुझे अभी एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम करना है। जब वह काम हो जायेगा तब हम वापस लौट कर हमें जितना चाहियेगा हम उतना खजाना यहॉ से ले जायेंगे।"

इस तरह से वे वहॉ से चल दिये। कुछ दूरी पर ही उन्हें गड़रिये की झोंपड़ी दिखायी दे गयी जहॉ लड़के की मॉ रह रही थी। लड़के ने उसे अपने सपने में देखने के कारण तुरन्त ही पहचान लिया।

जल्दी से वहॉ पहुँच कर उसने दरवाजा खटखटाया तो उसकी खुद की मॉ ने ही दरवाजा खोला। दोनों ने एक दूसरे को सपने में देखने की वजह से एक दूसरे को तुरन्त ही पहचान लिया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

अगले दिन वे दोनों ड्रैगन के महल की ओर लौटे। फिर वहॉ से जो गधे और घोड़े वे लोग अपने साथ ले कर आये थे उन पर थैले भर भर कर सोना चॉदी और कीमती रत्न लादे और अहमद आगा के घर के लिये चल दिये। बीच में वह कुछ देर के लिये सुस्ताने के लिये रुके। अहमद आगा के घर में मॉ बेटी आपस में मिलीं।

मॉ बहुत खुश थी। वह अपनी पुराने सब दुख भूल गयी थी। फिर वे बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

गड़रिये के बेटे की शादी लड़के की बहन से कर दी गयी। लड़के ने ड्रैगन के महल में रहने वाले ड्रैगन की बेटी से शादी कर ली। गड़रिये की बेटी के लिये भी एक योग्य पति खोज लिया गया।

उन सब की शादी एक ही दिन हुई और शादी का उत्सव **40** दिन और **40** रात तक चला पर उनकी खुशी हमेशा ही रही।

38 शाह जूसुफ़[34]

एक देश में एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटियॉ थीं। वे लोग इतने गरीब थे कि एक दिन उनके घर में खाने के लिये रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था। उनको यह समझ नहीं आया कि वे अब क्या करें सो वे तीनों सूत कातने बैठ गयीं।

वह सूत उन्होंने अपने पिता को दिया और कहा कि वह उन्हें बाजार ले जा कर कुछ पैसों के लिये बेच दें और उस पैसे से कुछ खाना खरीद लायें। बूढ़े ने सूत उठाया और बाजार की तरफ चल दिया पर उसने देखा कि बाजार में तो उसकी तरफ कोई देख ही नहीं रहा था।

वह बेचारा निराश सा इधर से उधर घूमने लगा कि एक अरब उसके सामने आया और उससे पूछा — "पिता जी आप क्या बेच रहे हैं?"

बूढ़े ने उसे सूत दिखाया और बोला — "मुझे आज यह सूत जरूर बेचना है तभी मुझे खाना मिल सकेगा।"

अरब ने पूछा — "यह सूत किसने काता है?"

बूढ़ा बोला — "मेरी बेटियों ने।"

अरब ने वह सूत खरीद लिया और उसकी कीमत बड़ी उदारता से दी। फिर उसने बूढ़े से उसकी एक बेटी मॉगी।

[34] Shah Jussuf. Tale No 38

बूढ़ा बोला — "मैं इस बारे में अपनी बेटियों से बात करूँगा। अगर किसी को भी भी मैं इसके लिय मना पाया तो मैं उसे आपको जरूर दे दूँगा।"

सो अरब भी उसी के साथ उसके घर चला गया। बूढ़े ने अपनी सबसे बड़ी बेटी से कहा — "अगर मैं तेरी शादी एक अरब से कर दूँ तो क्या तू उसके साथ जायेगी?"

बेटी बोली — "पिता जी मैं अरब के साथ जा कर क्या करूँगी। मेरी शादी किसी और काम के आदमी के साथ कर दीजिये।"

उसके बाद उसने वही सवाल अपनी बीच वाली बेटी से किया तो उसने भी वही जवाब दिया जो उसकी बड़ी बेटी ने दिया था। फिर उसने यही बात अपनी छोटी बेटी से कही तो उसने कहा कि वह अरब से शादी करने के लिये तैयार है ताकि वह अपने पिता की गरीबी का बोझ कुछ तो हल्का कर सके।

अरब ने उस लड़की को अपने साथ लिया बूढ़े को उसके बदले में काफी सोना दिया और उसे ले कर वहॉ से चला गया।

जब अरब वहॉ से कुछ दूर चला गया तो उसने लड़की से कहा "ऑखें बन्द कर ऑखें खोल"।

उसने ऐसा ही किया तो वह तो एक महल में खड़ी थी। जब वह सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रही थी तो कुछ दासियों ने उसकी बॉहें थाम रखी थीं। उसे यह सब बहुत अच्छा लग रहा था।

सीढ़ियों के ऊपर पहुँचने पर दासियॉ उसे हीरे मोतियों से चमकते कमरे में ले गयीं। ये हीरे मोती कमरे की दीवारों और फर्श पर जड़े हुए थे। उस कमरे की छत पर सोने चॉदी के तारे बने हुए थे। उसको एक सीट पर बिठा कर दासियॉ सिर झुका कर हाथ जोड़े हुए वहीं खड़ी रहीं।

कुछ और दासियॉ उसके पहनने के लिये पोशाक ले कर आयीं जिसमें सोने चॉदी के सितारे लगे हुए थे। शाम को सोने की थालियों में स्वादिष्ट खाना परसा गया और फिर यह सब एक गिलास शर्बत से खत्म हुआ।

शर्बत पी कर वह गहरी नींद सो गयी। तुरन्त ही दासियॉ उसको उठा कर उसके सोने के कमरे में ले गयीं। जब वह सो रही थी तब महल का बे वहॉ आया और उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखने लगा पर उसके जागने से पहले ही चला गया।

जब लड़की सुबह जागी तो दासियॉ उसको नहलाने धुलाने के लिये तैयार खड़ी थीं। वे उसकी छोटी से छोटी बात भी मान रही थीं। पूरे तीन महीनों तक उसकी ज़िन्दगी ऐसे ही चलती रही तो उसे घर की याद आने लगी। उसने अपने पिता और बहनों से मिलने की इच्छा होने लगी।

एक दिन उसने अपनी यह इच्छा अरब से कही जो उसे वहॉ ले कर आया था। उसने कहा — "लाला। क्या आप मुझे कुछ दिन मेरे पिता और बहनों के साथ बिताने की इजाज़त देंगे।"

लाला बोला — "मुझे लाला मत कहो। मेरा नाम लकलक आगा है और मैं इस महल की देखभाल करने वाला हूॅ।"

अगले दिन उसने उसे फिर से लाला कह कर पुकारा पर अरब ने पहले की तरह से उसे ठीक कर दिया। तीसरे दिन उसने उसे "लकलक मेरे आगा।" कह कर पुकारा तब उसने उसकी विनती सुनी।

लड़की ने कहा — "मैं एक दो दिन अपने पिता और बहनों के साथ रहना चाहती हूॅ।"

आगा बोला — "ठीक है। हम लोग कल वहॉ जायेंगे।"

अरब ने अपने मालिक बे से इस बारे में बात की तो बे ने मना तो नहीं किया परन्तु उसने उससे कहा कि लड़की को वह बहुत देर तक अपनी ऑखों से ओझल न होने दे।

इस प्रकार अगले दिन लड़की लकलक आगा के साथ अपने घर के लिये चली। आगा ने अपने साथ बहुत सारा सोना ले लिया।

उसने लड़की से कहा "अपनी ऑखें बन्द करो और अपनी ऑखें खोलो"। जैसे ही उसने यह किया तो वह अपने पिता के घर में खड़ी थी। उसका पिता और बहनें उसे प्यार से सहला रहे थे। उस दिन घर में बहुत खुशी मनायी जा रही थी।

पहले जो बूढ़े को अरब से सोना मिला था उससे उसने एक दूकान खोल ली थी। अब जो अरब ने उसे सोना दिया तो उससे उसने उसे बहुत बढ़ा लिया।

इस बीच लड़की की बहनों ने लड़की से पूछा कि उसकी ससुराल में उसे कैसा लग रहा था। लड़की बोली — "कोई बहुत अच्छा नहीं। हर रात मैं एक गिलास शर्बत पीती हूॅ और उसे पीने के जल्दी ही बाद मैं सो जाती हूॅ।"

उसके बाद उन्होंने पूछा कि क्या उसने कभी बे को देखा है तो उसने बताया कि अरब ही केवल एक आदमी है जिसे उसने अब तक वहॉ देखा है।

यह सुन कर उन्होंने उसे एक स्पंज दिया और कहा "जब तेरे पास शर्बत लाया जाये तब तू उसे पीने का केवल बहाना करना। उसे पीने की बजाय उसे इस स्पंज में भर लेना। उसके बाद लेट जाना और सोने का बहाना करना। तब तुझे पता चलेगा कि तेरे साथ क्या होता है।"

जब कुछ दिन बीत गये तो उसने अपने पिता और बहनों से विदा ली और अरब के साथ अपनी ससुराल चल दी। अरब ने लड़की से फिर कहा "अपनी ऑखें बन्द करो और अपनी ऑखें खोलो"।

जैसे ही उसने यह किया तो वह अपनी ससुराल में खड़ी थी। शाम को जब उसके लिये शर्बत लाया गया तो लड़की ने बड़ी

होशियारी से उसे पीने का बहाना किया पर उसने पिया नहीं। उसने उसे स्पंज में भर लिया और सोने का बहाना किया। दासियॉ उसको उठा कर उसके सोने के कमरे में लिटा आयीं। रोज की तरह से बे वहॉ आया और उसकी तरफ देखता रहा।

जैसे ही लड़की ने कदमों की आवाज सुनी उससे यह देखने के लिये ऑखें खोले बिना नहीं रहा गया कि उसके कमरे में कौन आया। बे को जैसे ही लगा कि वह जाग गयी है वह समझ गया कि शर्बत के बारे में उसने उसे धोखा दिया है।

वह बोला — "तो तू यह समझती है कि धोखा दे कर तू अपनी उत्सुकता को शान्त कर लेगी। इसकी सजा तुझे भोगनी पड़ेगी। तुझे एक लोहे का डंडा ले कर लोहे के जूते पहन कर सात साल तक चलना पड़ेगा जब तक कि तू मुझे ढूँढ न ले।" यह कह कर वह गायब हो गया।

लड़की बेचारी उसके कहे अनुसार लोहे के जूते पहन कर और लोहे का एक डंडा ले कर चली। वह पहाड़ के ऊपर चढ़ी वह घाटियों में चली उसने मैदान पार किये। काफी चलने के बाद भी जब उसने पीछे देखा तो उसे लगा कि वह केवल जौ की एक बाल के बराबर ही चली है।

चलते चलते उसे एक देव स्त्री मिली जिसके सिर पर एक सींग था और बहुत बड़े पैर थे। उसने उसे सलाम किया तो वह देव स्त्री

बोली — "अगर तूने मुझे सलाम न किया होता तो मैंने तेरे टुकड़े टुकड़े कर के फेंक दिये होते।"

लड़की बोली — "अगर तूने मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया होता तो मैंने तुझे अपने लोहे के डंडे खूब मारा होता।"

देव स्त्री ने पूछा कि वह कहॉ से आ रही थी और कहॉ जा रही थी तो लड़की ने उसे सब कुछ बताया। तब देव स्त्री ने उसे बताया कि बे शाह जूसुफ अभी अभी उस जगह से हो कर गये हैं। अगर वह कुछ और आगे जायेगी तब उसे एक दूसरी देव स्त्री मिलेगी जो उसे उसके बारे में अधिक बता सकेगी।

लड़की फिर आगे बढ़ी तो उसे एक दूसरी देव स्त्री मिली जिसने उसे बताया कि बे शाह जूसुफ़ अभी कुछ ही देर पहले वहॉ से गये थे। वह और आगे चली तो उसे एक तीसरी देव स्त्री मिली जो एक गर्म ओवन साफ कर रही थी।

लड़की ने उससे पूछा कि क्या वह बे शाह जूसुफ़ के बारे में कुछ जानती थी। स्त्री ने पूछा — "तुम्हें क्या मतलब। तुम क्यों पूछती हो।" यह स्त्री बे की चाची थी।

लड़की ने उसे अपनी पूरी कहानी बतायी तो उसने कहा — "अगर तुम चाहो तो तुम मेरे पास रह सकती हो। बे शाह जूसुफ़ मेरे पास सात साल में एक बार आते हैं। इस तरह से तुम उनसे यहॉ मिल सकती हो।"

लड़की ने स्त्री का हाथ चूम लिया और वहीं रुक गयी।

पर देव स्त्री फिर बोली — "तुम इस रूप में मेरे पास नहीं रह सकतीं क्योंकि मेरे 40 बेटे हैं। अगर वे तुम्हें इस शक्ल में देखेंगे तो तुम्हें तुरन्त ही खा जायेंगे।"

यह कह कर देव स्त्री ने उसे हल्के से छुआ तो वह एक सेब बन गयी जिसे उसने आलमारी में रख दिया। रात हुई तो देव स्त्री के बेटे आये तो बोले — "मॉ हमें मनुष्य के मॉस की गंध आ रही है।

देव स्त्री बोली — "अरे यहॉ किसी मनुष्य का क्या काम।"

खैर जब उन्होंने खाना खा लिया तो देव स्त्री बोली — "अगर यहॉ कोई घूमता घामता आ जाये और मेरा हाथ चूम कर मुझसे मेरे बच्चे की तरह से मुझसे शरण देने के लिये कहे तो अगर तुम मेरी जगह हो तो तुम क्या करो।"

वे बोले — "हम उसका अपने भाई की तरह से स्वागत करेंगे और उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।"

यह सुन कर देव स्त्री ने आलमारी से सेब निकाला और उसे हल्का सी थपकी मार कर एक लड़की में बदल दिया। देव स्त्री के लड़कों ने उसका बड़े स्नेह से स्वागत किया और उसको अपने एक सम्बन्धी की तरह से रखा।

लड़की ने उनके साथ सात साल आराम से बिता दिये। सात साल पूरे हो जाने पर देव स्त्री ने लड़की से कहा — "बे शाह जूसुफ़ यहॉ बहुत जल्दी ही आने वाले हैं।

अगर वह एक गिलास पानी मॉगे तो ला देना पर जब वह तुम्हें खाली गिलास दें तो तुम उसे अपने हाथ से फिसल जाने देना और टूट जाने देना। फिर मैं तुम पर गुस्सा होने का बहाना करूँगी तब पता चलेगा कि वह तुमसे प्यार करता है कि नहीं। अगर वह तुमसे प्यार करता होगा तो वह मुझे तुम्हें पीटने नहीं देगा।"

कुछ दिन बाद बे शाह जूसुफ़ वहॉ आया। वह बहुत दुखी था और ऐसा लग रहा था जैसे बहुत दिनों से कभी किसी ने उसकी ठीक से देखभाल नहीं की थी।

आपस में एक दूसरे का हाल पूछने के बाद देव स्त्री ने उससे पूछा कि वह साधारणतया हमेशा खुश रहने की बजाय इतना दुखी क्यों था। उसने कहा — "मैं बहुत तकलीफ में हूँ इसलिये दुखी हूँ।"

देव स्त्री ने न समझने का बहाना किया। खाना आया। जब बे शाह जूसुफ़ खाना खा रहा था तो उसने एक गिलास पानी मॉगा। लड़की पानी ले कर आयी। जब वह पानी पी रहा था तो उसकी निगाह बराबर लड़की पर थी क्योंकि उसको उसकी शक्ल अपनी पत्नी से मिलती जुलती लग रही थी जिसको वह ढूँढ रहा था।

पानी पी कर खाली गिलास उसने लड़की को थमा दिया। लड़की ने यह दिखाते हुए कि वह उससे सॅभला नहीं गिलास गिरा दिया जिससे वह टूट गया। बस यह देखते ही देव स्त्री उसके ऊपर बहुत ज़ोर से गुस्सा हो गयी।

देव स्त्री कूद कर अपनी सीट से उठी और उस लड़की को बुरा भला कहने लगी। वह उसे बहुत ज़ोर से पीटने वाली थी अगर बे शाह जूसुफ़ ने बीच बचाव न किया होता तो। उसने कहा कि गलती लड़की की नहीं बल्कि उसकी अपनी थी।

यह सुन कर देव स्त्री तुरन्त ही शान्त हो गयी पर उसने लड़की को तुरन्त ही यह कह कर भगा दिया "जाओ और मेरी नजरों से दूर हो जाओ।"

बे शाह जूसुफ़ उस लड़की के बारे में सोचे बिना न रह सका। उसने अपनी चाची से पूछा कि वह लड़की उसके घर में कब आयी थी और क्या वह उस लड़की को उसे बेच देगी। पर चाची ने उसे अपने से अलग करने से मना कर दिया। उसने कहा कि वह लड़की तो उनके घर के लिये बहुत कीमती है वह उसके बिना नहीं रह सकती।

बे शाह जूसुफ़ अपनी चाची के पास कुछ दिन और रहा और फिर चला गया। पर जैसा कि उसका तरीका था कि वह अपनी चाची के पास सात साल में आता था अबकी बार वह तीन महीने में ही वापस आ गया।

उसकी चाची ने उससे हॅसी में कहा "अरे तुम इतनी जल्दी आ गये।" पर लड़की से कहा — "यह केवल तेरी वजह से आया है। अबकी बार जब तू इसके लिये खाना ले कर जाये तो बर्तनों में कुछ गड़बड़ कर देना।"

जब सब लोग खाना खाने बैठे और लड़की खाना ले कर आयी तो उसे ठोकर लग गयी। इससे वह भी गिर पड़ी और सारा खाना भी नीचे गिर पड़ा।

चाची ने बहुत गुस्से में भर कर मेहमान के सामने इस तरह की लापरवाही उसे बहुत डॉटा और उससे कहा कि अगर बे शाह जूसुफ़ ने उसकी तरफदारी नहीं की होती उसको माफ करने की विनती नहीं की होती तो उसने उसे बहुत पीटा होता। धीरे धीरे देव स्त्री शान्त हो गयी पर फिर भी उसे शान्त करने में काफी कठिनाई हुई।

बे शाह जूसुफ़ फिर से वहॉ से चला गया। जब वह वहॉ से चला गया तो देव स्त्री ने लड़की से कहा — "वह अब और ज़्यादा देर तक नहीं सह सकता। वह जल्दी ही फिर यहॉ आयेगा। अबकी बार जब वह आये तब तुम ही उसके लिये दरवाजा खोलना और उसको बताना कि तुम कौन हो। और कोई ऐसी पोशाक पहनना जो कभी तुमने उसके साथ पहनी हो और बच्चे को अपने साथ रखना।"

एक दिन लड़की खिड़की से बाहर देख रही थी तो उसने बे शाह जूसुफ़ को अपने घर की ओर आते देखा तो तुरन्त ही अपने कपड़े बदलने दौड़ी और अपने बेटे को साथ ले कर उसके लिये दरवाजा खोलने के लिये तैयार हो गयी।

उसे उसी पोशाक में देख कर जो उसने पहले कभी उसके साथ महल में पहनी थी बे शाह जूसुफ़ जान गया कि हो न हो यह उसकी

पत्नी ही है और यह लड़का जो उसके साथ है वह उसका बेटा है। शर्मा कर उसने एक बार लड़की और बेटे की ओर देखा तो लड़की ने बेटे को एक ओर छोड़ा और पति के गले से लिपट गयी।

ऑसुओं और फिर से मिलने की खुशी के बीच उसने फिर उसे इन सात सालों में उसके साथ क्या क्या हुआ था वह सब बताया। बे शाह जूसुफ़ ने अपनी चाची का हाथ चूमा और उससे विनती की कि वह उसकी पत्नी और बेटे को उसके साथ भेज दें।

देव स्त्री ने उसे उन दोनों को साथ ले जाने की इजाज़त दे दी और उससे कहा कि उन लोगों ने उसके पीछे बहुत कुछ सहा है। अब वह उनको ले जाये और खुश रहे।

तीनों खुशी के साथ अपने महल के लिये चले। जब वे वहॉ पहुँचे तो वहॉ के लोगों ने उनका बड़ी खुशी से स्वागत किया क्योंकि पिछले सात सालों से शाह अपने महल में नहीं था और बहुत मुश्किलों में पड़ा हुआ था। वह सारी दुनियॉ में ऐसे ही घूमता फिर रहा था। उनकी वापसी का उत्सव और खुशियॉ **40** दिन और **40** रात तक मनायी गयीं।

बे शाह जूसुफ़ ने अपनी पत्नी के पिता और बहनों को भी अपने ही महल में बुला लिया। फिर वे सब ज़िन्दगी भर खुशी से रहे।

39 काला ड्रैगन और लाल ड्रैगन[35]

एक बार एक बादशाह था जिसकी बदकिस्मती यह थी कि उसके सारे बच्चे जैसे ही सात साल के होने को आते थे चुरा लिये जाते थे। इस प्रकार के दुख से दुखी हो कर उसका अपना दिमाग बिल्कुल ही खो गया था।

वह सोचता था "मेरे अब तक **40** बच्चे हो चुके हैं और उन सबको किसी ने चुरा लिया है। उनमें से हर एक बच्चा पहले वाले बच्चे से अधिक सुन्दर था इसलिये मैं उन्हें प्यार करते थकता नहीं था। पर कम से कम उसे तो मेरे लिये छोड़ देना था। इससे अच्छा तो यही होता कि मेरे कोई बच्चा ही नहीं होता तो कम से कम मुझे यह दुख तो नहीं मिलता।

वह हमेशा अपने बच्चों के बारे में ही सोचता रहता और उनके खो जाने पर दुखी होता रहता। जब वह इस दुख को और अधिक नहीं सह सका तो एक रात को वह महल छोड़ कर चला गया और फिर कहॉ कहॉ घूमता रहा पता नहीं।

जब सुबह हुई तो वह अपनी राजधानी से बहुत दूर जा चुका था। वह एक सोते के पास पहुॅचा और वहॉ अपनी पार्थना कहने ही वाला था कि उसने ऊपर आसमान की ओर देखा तो उसे एक बादल जैसा कुछ नजर आया जो उसी की ओर आ रहा था।

---

[35] The Black Dragon and the Red Dragon. Tale no 39

जब वह बादल उसके कुछ और पास आया तो उसने देखा कि वह तो 40 चिड़ियों का एक दल था। वह चहचहाते हुए वहीं उसे सोते के पास आ कर बैठ गया। बादशाह डर गया था सो वह कहीं छिप गया।

जब वे चिड़ियॉ वहॉ पानी पी रही थीं तो उनमें से एक चिड़िया बोली — "मॉ का दूध तो हमारी किस्मत में था ही नहीं। हमको तो पहाड़ का पानी ही पीना पड़ा। न तो हमारी मॉ ने और न हमारे पिता ने ही हमारी कोई देखभाल की।"

दूसरी चिड़िया बोली — "अगर वे हमारे बारे में सोचते भी होंगे तो उनको तो यह पता भी नहीं होगा कि हम हैं कहॉ।" यह कह कर वे उड़ गयीं।

बादशाह सोचने लगा "ये बेचारी चिड़ियें। इतने छोटे जानवर भी अपने माता पिता की अनुपस्थिति को महसूस करते हैं और दुखी होते हैं।

जब बादशाह अपनी प्रार्थना कर चुका तब दिन अच्छी तरह से निकल आया था। बुलबुलों ने गाना शुरू कर दिया था उनके गीतों से सारा वातावरण गूँज उठा था।

वह क्योंकि सारी रात यात्रा कर के आया था इसलिये वह अपनी ऑखें और अधिक देर तक खुली नहीं रख सका और वह सो गया हालॉकि उसका दिमाग फिर भी अपने खोये हुए बच्चों के बारे में ही सोचता ही रहा।

सोते में उसने एक सपना देखा जिसमें उसने एक दरवेश को देखा जो उसी की ओर आ रहा था। उसने उसका स्वागत किया और उसे अपने पास बिठाया और उससे अपना दुखड़ा रोया।

दरवेश पहले से ही जानता था कि बादशाह के बच्चों को क्या हुआ है। वह बोला — "मेरे शाह। दुखी मत हो। चाहे तू अपने बच्चों को नहीं देख सकता पर तेरे बच्चे तुझे देख सकते हैं। जो चिड़ियें जब आयी थीं जब तू अपनी प्रार्थना कर रहा था वे ही तेरे बच्चे थे।

उनको परियों ने चुरा लिया था और वे यहॉ से एक साल की दूरी पर रहते हैं। अगर वे चाहें तो वे केवल यहीं नहीं बल्कि महल में भी उड़ कर आ सकते हैं पर वे परियों से डरते हैं। जब तू यहॉ से जायेगा तो इस सोते में से फाख्ता की तरह से पानी पीना अल्लाह तुझे तेरे बच्चे जरूर वापस कर देगा।"

बादशाह तभी अपनी नींद से जाग गया और थोड़ा सोच कर उसने सपने में देखे हुए दरवेश के शब्दों को याद किया और फिर कुँए की ओर चल दिया। वहॉ पहुँच कर उसकी ऑखों ने क्या देखा कि उस सोते से तो पानी नहीं बल्कि खून बह रहा है। यह देख कर वह तो डर गया। उसे आश्चर्य हुआ कि वह सो रहा है या जाग रहा है।

उसी समय सूरज उगने वाला हो रहा था इससे उसे लगा कि वह सपना नहीं देख रहा था। उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और अपनी

घृणा को दूर कर उसने उस खूनी सोते से खून ऐसे पिया जैसे कि वह ताजा साफ पानी पी रहा हो। पानी पी कर दॉये को मुड़ कर वह वहॉ से चला गया।

तुरन्त ही उसने देखा कि कुछ दूरी पर जैसे एक सेना लड़ने के लिये तैयार खड़ी हो। अब उसको यह तो पता नहीं था कि वे उसके दोस्त थे या दुश्मन इसलिये वह आगे बढ़ने में झिझका पर फिर उसने आगे बढ़ कर देखने का निश्चय किया कि क्या होता है।

जब वह उस सेना के पास तक पहुॅचा तो उसे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि वहॉ कोई सेना नहीं थी बल्कि वहॉ तो हर तरह के ड्रैगन खड़े हुए थे – सबसे छोटे से ले कर सबसे बड़े तक जैसे कोई ऊॅट।

वह बोला — "ओ अल्लाह। मुझे क्या पता था कि जिसे मैंने सपना समझा था वह मेरे ऊपर कोई टोना था। अब मैं क्या करूॅ? अगर मैं आगे बढ़ा तो ये मुझे निश्चित रूप से काट कर मेरे टुकड़े कर देंगे। और छिप कर मैं अब पीछे जा नहीं सकता।" उसने इस खतरे से उसे बचाने के लिये अल्लाह की प्रार्थना करनी शुरू कर दी।

अब कुछ ऐसा हुआ कि ये सब नये जन्मे ड्रैगन थे। इनमें जो सबसे बड़ा था वह अभी कुछ ही दिन का था। अभी तो किसी ने अपनी ऑख भी नहीं खोली थी। इस तरह वे सब अभी एक अन्धे की तरह से इधर उधर घूम रहे थे।

वे सब एक साथ जरूर थे पर हॉ वे अपना घर ढूँढने के लायक नहीं थे। जब बादशाह को यह पता चला तो इससे उसे बहुत तसल्ली मिली। सो वह ड्रैगन के लिये थोड़ी जगह छोड़ कर अपने रास्ते चला गया।

जब वह पहाड़ पर चढ़ा तो रात होने लगी। एक बहुत ही भयानक और तेज़ चीरती हुई आवाज उसके कानों में पड़ी। यह ड्रैगन की मॉ की आवाज थी जो वह अपने बच्चों को बुलाने के लिये लगा रही थी।

बादशाह तो डर के मारे जम सा गया जब उसके सामने वाले ड्रैगन ने कहा — "आहा। कम से कम अब तू मेरे पास है। मेरे बच्चे तो तेरे सामने बीमार थे पर तू मेरे हाथों से नहीं बच सकता। तूने मेरे हजारों बच्चे मारे हैं।"

बादशाह ने कॉपते हुए जवाब दिया कि उसने उसके बच्चे देखे तो जरूर थे पर उनको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। क्योंकि वह कोई शिकारी नहीं था इसलिये किसी को किसी तरह का कोई नुकसान पहुँचाने का उसका कोई इरादा नहीं था।

ड्रैगन मॉ ने कहा — "अगर तू सच बोल रहा है तो मुझे बता कि मेरे बच्चे किस दिशा में गये हैं।"

बादशाह ने उसे बताया कि उसने उसके बच्चों को कहॉ देखा था। यह सुनने के बाद ड्रैगन मॉ ने उसे एक तम्बाकू के डिब्बे में बदल दिया और उसे अपनी कमर की पेटी में खोंस लिया।

इस तरह वह जब अपने बच्चों को ढूँढ रही थी तो उसने बादशाह को भी अपने साथ ले लिया। कुछ देर बाद उसे अपने बच्चे बिल्कुल सुरक्षित मिल गये। ड्रैगन माँ उन सबको अपने घर ले गयी पर बादशाह अभी भी तम्बाकू के बक्से के रूप में ड्रैगन माँ की कमर की पेटी में लगा हुआ था।

धीरे धीरे वे सब एक किले की चहारदीवारी के अन्दर आये जो एक सुनसान जगह में खड़ा हुआ था। ड्रैगन माँ ने अपनी कमर से एक कोड़ा निकाला और उसे किले की दीवार पर ज़ोर से मारा जिससे वे गिर पड़ीं और उनमें से एक बड़ा सा ड्रैगन बाहर निकल आया।

जिन दीवारों को ड्रैगन माँ ने अभी तोड़ा था उनमें से तो एक बहुत सुन्दर महल निकल आया। वे सब उसके अन्दर घुसे। ड्रैगन माँ ने बादशाह को अब उसको उसके पुराने रूप में बदल दिया था। वह उसको महल के एक कमरे में ले गयी और उससे कहा — "ओ आदमी के बच्चे। तू यहाँ क्यों आया है। मुझे तेरे इरादे तो खराब नहीं लगते।"

तब बादशाह ने उसे अपनी पूरी कहानी सुनायी तो ड्रैगन माँ बोली — "यह समस्या तो बड़ी आसानी से सुलझायी जा सकती है। तेरे सारे बच्चे हायसिन्थ के घर में मौजूद हैं। यह जगह यहाँ से बहुत दूर है। अगर तू वहाँ अकेला गया तो तुझे वहाँ पहुँचने में बहुत मुश्किल होगी।

पहाड़ के उस पार जा कर तू एक रेगिस्तान में पहुँच जायेगा। वहॉ मेरा भाई रहता है। उसके बच्चे मेरे बच्चों से बड़े हैं। उनको वह जगह अच्छी तरह पता है। तू उसके पास जा और उसे मेरा सलाम कहना और उससे कहना कि वह तुझे हायसिन्थ के घर तक ले कर जाये।"

यह कह कर ड्रैगन मॉ ने उससे विदा ली और बादशाह उस रास्ते पर चल पड़ा।

पहाड़ पार करने में बादशाह को बहुत देर लगी पर उसे पार करने के बाद वह एक रेगिस्तान में आ गया। रेगिस्ताान पार कर के वह एक बहुत बड़े महल में पहुँच गया। यह महल पहले वाले कही अधिक बड़ा था।

इसके दरवाजे पर एक ड्रैगन खड़ा था जो दूसरे वाले ड्रैगन से दोगुना बड़ा था। एक हजार कदम की दूरी से उसकी ऑखें बन्द लग रही थीं पर उसकी ऑखों के ऊपरी और नीचे की पलकों के बीच में जो झिरी थी उससे जो आग की लपटें निकल रही थीं वे किसी भी आदमी को झुलसाने की ताकत रखती थीं।

जब बादशाह ने यह देखा तो उसको लगा कि बस अब तो उसका अन्तिम समय आ गया। उतनी ही दूर से उसने उसको उसकी बहन का सलाम कहा। यह सुन कर उस बड़े जानवर ने अपनी ऑखें खोलीं तो ऐसा लगा जैसे सारा क्षेत्र आग की लपटों से भर गया।

बादशाह उसकी इस दृष्टि को सह न सका और पीछे दौड़ गया। ड्रैगन को तो वह एक पिस्सू की तरह ही लग रहा था सो उसने उसकी कोई परवाह नहीं की।

बादशाह ड्रैगन मॉ के पास वापस गया और उससे अपना डरावना अनुभव बताया। वह बोली — "मैं तुझसे कहना भूल गयी कि मुझे काले ड्रैगन के नाम से जाना जात है और मेरे भाई को लाल ड्रैगन के नाम से जाना जाता है। तू वापस जा और उससे कहना कि तेरी बहन काली ड्रैगन ने तुझे सलाम भेजा है।

क्योंकि मेरा नाम और कोई नहीं जानता इससे वह तुझे पहचान जायेगा कि तुझे मैंने भेजा है। फिर तू उसके पास बिना किसी खतरे के जा सकता है। पर उसके सामने जाने से बचना नहीं तो उसकी ऑखों की लपटें तुझे जला देंगी।"

सो बादशाह लाल ड्रैगन के पास जाने के लिये पलटा। वहॉ पहुॅच कर उसने बहुत ज़ोर से आवाज लगायी — "तेरी बहन काली ड्रैगन ने तुझे सलाम भेजा है।"

यह सुन कर उस जानवर ने उसकी ओर अपनी पीठ कर ली। बादशाह उसके पास तक जा पहुॅचा और उससे उसने विनती की कि वह हायसिन्थ घर तक जाना चाहता है।

ड्रैगन ने अपनी कमर से एक कोड़ा निकाला और उसे धरती पर इतनी ज़ोर से मारा कि बादशाह को लगा कि जैसे पहाड़ दो हिस्सों में टूट गया। कुछ ही पल में बादशाह ने देखा कि एक और ड्रैगन आ

रहा था। जैसे ही वह बादशाह के पास आया तो उसने उसकी गर्मी महसूस की।

इस ड्रैगन ने भी अपनी पीठ बादशाह की ओर कर ली और बोला — "मेरे बेटे। अगर तुम हायसिन्थ घर जाना चाहते हो तो उसमें घुसने से पहले ज़ोर से चिल्लाना "मुझे लाल ड्रैगन ने भेजा है।" यह सुन कर तुम्हारे सामने पंखे के होठ वाला एक अरब आयेगा। यह वही परी होगा जिसने तुम्हारे बच्चों को चुराया है।

जब वह तुमसे पूछे कि तुम्हारी क्या इच्छा है तो तुम कहना कि बड़ा ड्रैगन चुराये हुए बच्चों में से सबसे बड़े बच्चे को चाहता है। अगर वह मना कर दे तो उससे कहना कि अगर वह बड़े को नहीं देना चाहता तो सबसे छोटे को दे दे।

अगर वह इसको भी मना कर दे तो उससे कहना कि लाल ड्रैगन तुझे चाहता है। इसके बाद उससे कुछ मत कहना और शान्ति से वापस आ जाना।"

बादशाह उस ड्रैगन की पीठ पर चढ़ा जिसे लाल ड्रैगन ने बुलाया और हायसिन्थ घर की ओर चल दिया। बादशाह ने हायसिन्थ घर देखा तो दूर से ही इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसने जमीन आसमान एक कर दिया "लाल ड्रैगन का सलाम"।

तुरन्त ही पंखे की शक्ल जैसे होठ वाला अरब वहॉ प्रगट हो गया। उसके हाथ में एक बहुत बड़ा डंडा था। खुली हवा में आते हुए उसने पूछा "क्या बात है।"

बादशाह बोला — "लाल ड्रैगन को चुराये हुए बच्चों में से सबसे बड़ा बच्चा चाहिये।"

परी बोला — "सबसे बड़ा बच्चा बीमार है।"

"तो सबसे छोटे वाले को भेज दो।"

"वह पानी लाने गया है।"

"अगर ऐसा है तो लाल ड्रैगन को तू चाहिये।"

"मैं घर में जा रहा हूँ।" यह कह कर अरब गायब हो गया।

बादशाह बेचारा लाल ड्रैगन के पास लौट आया और उसको अपनी यात्रा का सारा हाल बताया। इस बीच अरब अपने दोनों हाथों में डंडे ले कर बाहर आया। उसके पैरों में तीन फीट लम्बे जूते थे। उसके सिर पर मीनार जितनी ऊँची एक टोपी थी।

उसको देख कर लाल ड्रैगन बोला — "सो ओ मेरे हायसिन्थ में रहने वाले। तेरे पास इस बादशाह के बच्चे हैं। तू एक भले आदमी की तरह से इसके बच्चे वापस कर दे।"

अरब बोला — "मेरी एक विनती है। अगर बादशाह मेरी उस विनती को स्वीकार कर लें तो तुरन्त ही उनके बच्चे वापस कर दूँगा। दस साल पहले मैंने एक बादशाह का बेटा चुराया था। जब वह **12** साल का हुआ तो उसे पोरसुक[36] नाम की एक देव स्त्री ने चुरा लिया।

[36] Porsuk named Dev woman

वह स्त्री रोज उसे राख की रोटी दे कर एक सोते पर पानी लाने के लिये भेजती है और उसे एक गिलास मनुष्य का खून पीने के लिये बाध्य करती है। अगर मुझे वह नौजवान अपने पास रखने को मिल जाये तो मुझे इस दुनियॉ में कुछ नहीं चाहिये क्योंकि उतना सुन्दर नौजवान मैंने कहीं नहीं देखा।

इस पोरसुक के एक बेटा भी है जो मुझे बहुत प्यार करता है। क्योंकि मैंने उसे चुराये हुए लड़के की जगह गोद नहीं लिया इसलिये मेरे साथ यह बुरा किया गया।

मैं जानता हूॅ कि इस बादशाह के बच्चे बहुत बहादुर और सुन्दर हैं मैंने उन्हें केवल अपना दुख कम करने के लिये ही चुराया। वह अगर मेरी इच्छा पूरी कर देगा तो मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूॅगा।"

यह कह कर अरब चला गया।

लाल ड्रैगन ने कुछ देर विचार किया फिर बादशाह से बोला — "मेरे बेटे। तू डर नहीं। यह पोरसुक कोई बहुत ज़्यादा बहादुर तो नहीं है पर यह जादू करने में बहुत होशियार है। इसे जादू से नहीं हराया जा सकता।

पर इसका एक नियम है कि यह साल में एक दिन जादू नहीं करती। इसलिये इसे उस दिन जीता जा सकता है। तू एक महीना इन्तजार कर तब तक मैं उसका वह एक दिन पता लगाता हूॅ और फिर तुझे बताता हूॅ।"

बादशाह इस बात पर तैयार हो गया।

लाल ड्रैगन ने पोरसुक का वह दिन पता लगाने के लिये अपने बेटों को भेज दिया जिस दिन वह जादू नहीं करती थी। जैसे ही वे इस दिन का पता लगा कर आये तो बादशाह को वह दिन बता दिया गया। साथ में उसको यह भी बताया गया कि उस दिन देव सोते थे।

लाल ड्रैगन ने बादशाह को सलाह दी कि जब तू वहॉ पहुँचेगा और वह लड़का सोते पर पानी भरने आयेगा तू उसकी टोपी उतार कर अपने सिर पर रख लेना इससे वह अपनी जगह से हिल भी नहीं पायेगा और फिर तू उसके साथ जो चाहे कर सकता है।"

उसके बाद लाल ड्रैगन ने अपने बेटों को बुलाया और उनसे कहा कि वे पोरसुक के सोते तक बादशाह के साथ जायें और जब तक यह अपना काम पूरा न कर ले उसके साथ ही रहें।

सोते के पास पहुँच कर सब एक जगह छिप गये जब तक उनको वह नौजवान सोते के पास नजर नहीं आया। जब वह अपनी बोतल में पानी भर रहा था तो अचानक बादशाह अपने छिपने की जगह से निकला और नौजवान के सिर की टोपी अपने सिर पर रख ली और फिर तुरन्त ही जा कर अपने छिपने की जगह जा कर छिप गया।

नौजवान ने इधर उधर देखा तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया सो वह सोच ही नहीं सका कि क्या हुआ। तब ड्रैगन के बेटे उसके ऊपर कूद पड़े। उसे पकड़ कर और बादशाह को साथ ले कर वे

सब लाल ड्रैगन के पास लौट चले। जमीन पर कोड़ा मार कर लाल ड्रैगन ने हायसिन्थ अरब को अपने सामने बुलाया।

जैसे ही उसने लड़के को देखा उसने उछल कर उसे पकड़ लिया और चूम लिया। उसने उसको लाने वाले का बहुत आभार प्रगट किया।

अब उसने अपनी ताली बजायी और धरती पर अपना पैर पटका तो **40** चिड़ियें खुशी से गाती हुई और अपने पंख फड़फड़ाती हुई वहॉ आ पहुॅचीं।

उसने अपनी कमर से एक बोतल निकाली और उसमें से कोई द्रव उनके ऊपर छिड़क दिया जिससे वे सब **40** राजकुमारियों और राजकुमारों में बदल गयीं। वे सब लाइन में और सावधान स्थिति में खड़े हो गये।

तब अरब बादशाह से बोला — "बादशाह अपने बच्चों को देखो। इन्हें ले जाओ और खुश रहो। मुझे उस दुख के लिये क्षमा करो जो तुमने मेरी वजह से सहा।"

बादशाह उस समय अपने बच्चों को देख कर इतना खुश था कि अगर उस समय कोई उसका सबसे कीमती खजाना भी मॉग लेता तो वह उसे खुशी से दे दिया जाता। उसने बड़ी खुशी से हायसिन्थ को क्षमा कर दिया और उसने उसे वह भी देने के लिये कहा अगर उसे किसी चीज़ की जरूरत हो तो। बादशाह ने लाल ड्रैगन से विदा ली और अपने घर जाने की इजाज़त मॉगी।

लाल ड्रैगन ने उसे खुशी खुशी विदा किया पर जाने से पहले उसने अपने कान के पीछे से एक बाल तोड़ा और उसे बादशाह को देते हुए कहा — "यह बाल ले। अगर तू किसी भारी मुसीबत में पड़े तो इस बाल को दो हिस्सों में तोड़ देना तो मैं तेरी सहायता के लिये तुरन्त ही चला आऊॅगा।"

बादशाह उस बाल और अपने बच्चों को ले कर वहॉ से चल दिया। एक ही बार में वह काली ड्रैगन के पास आया। उसने भी अपने कान के पीछे से एक बाल तोड़ा और बादशाह को देते हुए कहा — "तू अपने बच्चों की शादियॉ तुरन्त ही कर देना। और अगर तू उनकी शादी के दिन यह बाल जला देगा तो सारी ज़िन्दगी इन्हें काली ड्रैगन की सहायता मिलती रहेगी।"

बादशाह ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया काली ड्रैगन से दिल से विदा ली और फिर सब अपने घर चल दिये। रास्ते में बादशाह ने अपने बच्चों को अपनी इस यात्रा की कहानियॉ सुनायीं साथ में अपने बेटों और बेटियों की कहानियॉ भी सुनी।

अचानक एक भयावना तूफान उठा। उन सबमें से किसी को नहीं पता था कि उनका भाग्य किसका इन्तजार कर रहा था फिर भी वे सब कॉपते हुए कुछ अनहोनी घटने का इन्तजार कर रहे थे।

आखिर एक लड़की बोली — "मेरे प्यारे पिता और शाह। मैंने अरब को यह कहते हुए सुना कि जब भी पारसुक पास से जाती है

तो वह अपने साथ तूफान ले जाती है। तो मुझे ऐसा लग रहा है कि इस समय वह यहॉ से जा रही है।"

बादशाह ने अपनी हिम्मत बटोरी और लाल ड्रैगन का बाल दो हिस्सों में तोड़ दिया। पोरसुक देव तुरन्त ही एक बहुत बड़ी आवाज के साथ आसमान से नीचे गिर पड़ी।

उसी समय लाल ड्रैगन भी अपना कोड़ा फटकारता हुआ वहॉ आ पहुॅचा। नीचे गिरने से पोरसुक की बॉह टूट गयी थी और नाक कुचली गयी थी इसलिये वह अब किसी को परेशान नहीं कर सकती थी।

लेकिन बादशाह बहुत डर गया था कि कहीं वह अपना कोई बच्चा फिर से न खो दे। पर लाल ड्रैगन ने उसे तसल्ली दी कि — "अब तू चिन्ता मत कर। यह कोड़ा ले।"

बादशाह ने कोड़ा ले लिया और जैसे ही उसने उसे धरती पर मारा तो उसने महसूस किया कि वह हवा में ऊपर उठ रहा है। और फिर जब उसने धरती पर कदम रखा तो वह अपनी राजधानी में था। लाल ड्रैगन बोला "अब तू बिकुल सुरक्षित है।" कह कर वह वहॉ से गायब हो गया।

अपनी जन्म भूमि के गुम्बद मीनारें और दीवारें देख कर सब अपने घुटनों पर बैठ गये और खुशी से रो पड़े। जबसे बादशाह ने अपना महल छोड़ा था सारे महल में अक्सर ही दुख छाया रहता थे और लोग रोते रहते थे।

पर अब बादशाह के आने के बाद सारे बे और पाशा अपने बादशाह और उसके बच्चों को मिलने के लिये आये। सुलताना तो बहुत ही खुश हो गयी। उसने अपने सभी बच्चों को गले से लगाया और चूमा। बादशाह ने भी इस खुशी के मौके को मनाने के लिये सात दिन दिये।

इस खुशी को मनाने के बाद बादशाह ने उन सबकी शादी का इन्तजाम किया। शादी को मनाने के लिये **40** दिन और **40** रात रखी गयीं।

बदकिस्मती से शादी के दिन बादशाह काली ड्रैगन का दिया हुआ बाल जलाना भूल गया। उसका फल यह हुआ कि जैसे ही शादी की रस्में पूरी हुईं इतनी बारिश हुई कि बाढ़ सी आ गयी और हवा भी इतनी तेज़ चली कि उसकी तेज़ी के सामने कुछ भी खड़ा नहीं रह सका।

पहले तो बादशाह ने सोचा कि शायद यह कोई बड़ा तूफान होगा पर बाद में उसे पोरसुक देव की याद आयी तो वह डर के मारे बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़ा।

उसकी चीख पुकार सुन कर महल के सारे लोग और नये शादीशुदा जोड़े सभी वहॉ यह देखने के लिये इकट्ठे हो गये कि देखें वहॉ क्या हो गया।

डरे हुए बादशाह ने काली ड्रैगन का बाल वज़ीर को दिया और उससे उसे तुरन्त ही जलाने के लिये कहा।

कोई उसके आदेश को नहीं समझ सका बल्कि वे सब यह समझे कि लगता है कि बादशाह कुछ पागल सा हो गया है। फिर भी उसके आदेश का पालन किया गया और बाल को तुरन्त ही जला दिया गया।

इसके तुरन्त बाद ही बाहर के बागीचे से एक भयानक चिंघाड़ सुनी गयी और पोरसुक देव बड़ी ज़ोर की आवाज में चिल्लायी — "ओ बादशाह तूने मुझे जला दिया इसलिये अब तेरे बागीचे घास का कभी एक पत्ता भी नहीं उगेगा।"

अगले दिन सुबह देखा गया कि बादशाह के बागीचे एक भी फूल पेड़ और घास का पत्ता भी नहीं था जैसे किसी के गुस्से ने उसे जला दिया हो।

पर बादशाह को अपने इस नुकसान से कोई ज़्यादा अन्तर नहीं पड़ा। उसके सारे बच्चे उसके पास थे इस बात की खुशी से उसके दूसरी तकलीफों को ग्रहण लग गया था। वे अब उसे महसूस ही नहीं हो रही थीं।

उसने अपने सब लोगों को सब कहानी बतायी तो वे आश्चर्य में पड़ गये। अब और कोई खतरा नहीं था। अब बादशाह और उसका सारा परिवार ज़िन्दगी भर सुख से रहे।

40 मजून[37]

एक बार की बात एक नौजवान था जो गंजा था। उसकी मॉ काफी बूढ़ी थी। उसकी मॉ चाहती थी कि वह कोई काम सीख ले पर इस बात का कोई मतलब नहीं था कि उसने सीखने के लिये उसे कहॉ भेजा पर वह जहॉ भी उसे भेजती थी वह वहीं से भाग आता था।

एक दिन उसने सुलतान की बेटी की एक झलक देख ली। बस उस पल से अब उसे उसके सिवा कुछ सूझता ही नहीं था। एक दिन वह अपनी मॉ के पास गया और उससे कहा कि वह बादशाह के पास जाये और उससे उसके लिये उसकी बेटी का हाथ मॉगे।

यह सुन कर उसकी मॉ तो हक्का बक्का रह गयी। वह बोली "यह तुम क्या कह रहे हो। तुम्हारे पास तो पॉच पैसे भी नहीं और तुम कोई काम भी नहीं जानते। क्या तुम यह सोचते हो कि बादशाह तुम जैसी औंधी खोपड़ी को अपनी बेटी देगा।"

पर फिर भी जब नौजवान ने अपनी मॉ से जिद की तो बुढ़िया को लगा कि उसका बेटा उसे बादशाह के पास भेजे बिना मानेगा नहीं। सो वह उसकी जगह बादशाह के पास चली गयी।

जब वह बादशाह के सामने पहुॅची तो वह बोली — "ओ माई लौर्ड। मेरे एक बेटा है जो मुझे यह कह कह कर रोज तंग करता है कि मैं आपके पास आऊॅ और उससे शादी के लिये आपकी बेटी का

[37] The Madjun. Tale No 40

हाथ मॉगूँ। मैं उसकी ये बेकार की बातें बहुत देर तक नहीं सह पायी तो मैं यहॉ चली आयी। आप चाहें तो मुझे मार दें या फॉसी पर लटका दें या फिर वह करें जो आपको अच्छा लगे।"

बादशाह बोला — "अपने बेटे को मेरे पास भेजो।"

बुढ़िया घर गयी और जा कर अपने बेटे को सब बताया और उससे कहा कि उसे बादशाह ने बुलाया है। जब वह नौजवान बादशाह के महल में पहुँचा तो बादशाह ने उसे मना करने की दृष्टि से देखा क्योंकि वह गंजा था।

उससे बचने के लिये उसने नौजवान से कहा — "मैं तुम्हें अपनी बेटी दे दूँगा अगर तुम दुनियॉ भर की चिड़ियों को यहॉ बुला दो।"

नौजवान यह सुन कर कुछ परेशान सा हुआ और घर चला गया। वह दुखी दुखी घर जा रहा था। वह सोचता जा रहा था कि बादशाह उसे कहीं मौत की सजा न दे दें सो उसने वहॉ से जाने की सोची।

जंगलों में बहुत दिनों तक घूमने के बाद उसको एक दरवेश मिला। उसने उससे अपनी तकलीफ कही। दरवेश ने उसकी शिकायत को धैर्यपूर्वक सुना और बोला — "देखो तुम फलॉ फलॉ जगह चले जाओ वहॉ एक बहुत ऊँचा साइप्रस का पेड़ खड़ा है। तुम उसके नीचे बैठ जाना।

उस पेड़ पर दुनियॉ भर की चिड़ियें आ कर बैठती हैं। तुमको वहॉ पहुँच कर केवल एक शब्द कहना है "मजून"। इस शब्द को

बोलने के साथ ही वे सारी चिड़ियें उस पेड़ से चिपक जायेंगी। तब तुम उन सब चिड़ियों को इकट्ठा कर लेना और बादशाह के पास ले जाना।"

उसकी इस उपयोगी सलाह के लिये उसको धन्यवाद दे कर नौजवान उस पेड़ की ओर चल दिया। वहॉ पहुँच कर उसे वह पेड़ मिल गया और वह उस पेड़ के नीचे जा कर बैठ गया। वह वहॉ तब तक बैठा रहा जब तक उस पर दुनियॉ भर की चिड़ियें आ कर नहीं बैठ गयीं।

तब वह बोला "मजून" और उसके बाद तो कोई भी चिड़िया वहॉ से नहीं उड़ पायी। उनको इकट्ठा कर के वह घर लौट गया। अगले दिन वह उनको ले कर बादशाह के पास गया।

बादशाह तो उसके इस काम से बिल्कुल भी खुश नहीं था कि इतना असम्भव काम वह नौजवान इतनी आसानी से कर लाया था सो उसने उससे कहा — "जाओ और अपने गंजे सिर को ढकने के लिये बाल ले कर आओ तब मैं तुम्हारी शादी अपनी बेटी से कर दूँगा।"

अब तो नौजवान बिल्कुल ही निराश हो चुका था यह वह कैसे कर सकता था। वह फिर बाहर निकल गया और गहरी सोच में डूब गया कि अब वह क्या करे।

इस बीच बादशाह ने अपनी बेटी की शादी अपने एक वज़ीर के बेटे से तय कर दी और शादी की तैयारियॉ भी बहुत जल्दी जल्दी शुरू कर दीं।

जब नौजवान ने यह सुना तो वह शादी की रात को महल में गया और उस कमरे की छत पर छिप कर बैठ गया जिस कमरे में वज़ीर का बेटा और राजकुमारी सोने वाले थे।

जैसे ही वे अपने कमरे में घुसे तो वह बोला "मजून"। इससे वे दोनों वहीं के वहीं खड़े रह गये। एक इंच भी न हिल सके। रात बीत गयी और दिन निकला। नया शादीशुदा जोड़ा बाहर नहीं आया तो एक दासी को उनको देखने के लिये भेजा गया।

दासी ने आ कर दरवाजे की झिरी में से कमरे में झॉक कर यह देखने की कोशिश करने लगी कि वहॉ क्या हो रहा था। यह देख कर गंजा नौजवान फिर बोला "मजून" और वह दासी भी वहीं चिपक कर रह गयी। वह अपना हाथ या पैर कुछ भी नहीं हिला सकी।

धीरे धीरे वहॉ बहुत सारे लोग आ कर जमा हो गये। तब गंजे नौजवान ने फिर बोला "मजून"। और सब वहीं की वहीं जम कर रह गये।

बादशाह की समझ में कुछ नहीं आया कि क्या हो रहा था सो उसने होजा को बुलवाया जो उसके विचार में इस समस्या का हल जरूर ही बता सकेगा।

नौजवान अपनी ऊॅची जगह से छत पर नीचे आया और बादशाह के दूतों के पीछे पीछे चल दिया। रास्ते में वे दूत मॉस खरीदने की इच्छा से एक कसाई की दूकान में घुसे।

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने मॉस के एक टुकड़े पर हाथ रखा जिसे वे खरीदना चाहते थे। गंजा नौजवान भी वहॉ पहुॅच गया और बोला "मजून"। यह कहते ही वे उस मॉस से चिपक गये।

इस बीच बादशाह अपने दूतों का बेचैनी से इन्तजार कर रहा था। वह उनके जल्दी न आने पर बहुत गुस्सा था। आखिर जब वह और नहीं सह सका तो वह खुद उनके पीछे पीछे गया। रास्ते में उसने देखा कि एक कसाई की दूकान पर वे एक मॉस के टुकड़े से चिपके खड़े थे।

यह देख कर बादशाह बोला — "ओ अल्लाह। यह सब क्या है।" कहते हुए वह खुद ही होजा को बुलाने के लिये ही दौड़ पड़ा।

जब बादशाह होजा के पास पहुॅचा तो होजा बोला — "माई लौर्ड। आपने अपनी बेटी की शादी किसी गंजे नौजवान से करने का वायदा किया था और क्योंकि आपने अपना किया वायदा पूरा नहीं किया इसलिये वही ऐसा कर रहा है।"

बादशाह ने पूछा — "तो फिर अब मैं क्या करूॅ?"

होजा बोला — "आप कुछ नहीं कर सकते सिवाय अपनी बेटी की शादी उस गंजे नौजवान से करने के।"

यह सुन कर बादशाह महल लौटा और उसने गंजे नौजवान को अपने सामने बुला भेजा। जब गंजे नौजवान ने देखा कि बादशाह के नौकर उसे ढूँढ रहे हैं तो वह जल्दी से अपने घर लौट गया।

घर पहुँच कर वह अपनी मॉ से कहा — "अगर कोई मुझे पूछने के लिये आये तो कह देना कि मैं घर पर नहीं हूँ और आपने मुझे बहुत दिनों से नहीं देखा है। अगर वे पूछें कि मैं कहॉ मिलूँगा तो कहना कि आपको मुझे ढूँढने के लिये इतनी सोने की मुहरें चाहिये।"

बस वह अभी यह अपनी मॉ से कह कर ही चुका था कि दरवाजे पर खटखटाहट हुई। बुढ़िया ने दरवाजा खोला तो लोगों ने उससे पूछा कि "क्या गंजा नौजवान घर पर था।" उसने वही जवाब दिया जो उसके बेटे ने उससे कहने के लिये कहा था।

दूतों ने उससे पूछा कि वे उसे कहॉ ढूँढें क्योंकि बादशाह ने उससे खुद वहॉ आने के लिये कहा है ताकि वह राजकुमारी की शादी उससे कर सकें।

यह सुन कर बुढ़िया की रुचि उनमें कुछ बढ़ सी गयी। वह बोली — "मुझे पता नहीं वह कहॉ गया है पर आप मुझे **1000** सोने के सिक्के दें तो मैं उसे ढूँढने जा सकती हूँ।"

बुढ़िया का मॉगा हुआ धन उसे दे दिया गया। बादशाह के नौकरों ने कहा — "जाओ और उसे ले कर आओ। जब तुम उसे ले कर आओगी तब तुम्हें और पैसे मिलेंगे।"

कुछ दिन बाद गंजा नौजवान महल गया उसको तुरन्त ही बादशाह के सामने ले जाया गया। उसे देखते ही बादशाह ने उसका बड़े प्रेम से स्वागत किया।

वह बोला — "मेरे प्यारे बेटे। मैं तुम्हारा कबसे इन्तजार कर रहा था। तुम इस सारे समय कहॉ थे।"

इस सवाल के जवाब में गंजा नौजवान बोला — "बादशाह जी। मैंने आपसे आपकी बेटी मॉगी थी पर आपने मुझे उसे नहीं दिया इसलिये मैं दुनियॉ में घूमने चला गया।"

तुरन्त ही वज़ीरों को बुलवाया गया राजकुमारी को बुलवाया गया और फिर राजकुमारी की शादी की रस्में पूरी की गयीं। तब गंजा नौजवान अपना उद्देश्य पूरा होने के बाद उन लोगों के पास गया जिन पर उसने जादू डाल कर उन्हें चिपका दिया था।

वहॉ जा कर उसने कहा "मजून के जादू से मुक्त हो जाओ।" और फिर सब वहॉ से हिलने डुलने लगे। जहॉ तक वज़ीर के बेटे का सवाल था जिसकी शादी राजकुमारी से हुई थी वह भी जादू से छूटते ही भाग गया और फिर कभी नहीं देखा गया।

राजकुमारी की शादी गंजे नौजवान से हो गयी और फिर वे दोनों ज़िन्दगी भर खुशी खुशी रहे।

41 अनाथ राजकुमारी[38]

एक बार एक बादशाह था जिसके एक बेटी थी वह उसका अकेला बच्चा थी इसलिये वह उस पर अपना पूरा प्यार बरसाता था। वह हमेशा उसको अपने पास ही रखता था। जब वह उसके पास नहीं होती थी तब वह दुखी हो जाता था।

एक दिन जब वह **15** साल की हो गयी तो बादशाह ने उससे पूछा — "बेटी। क्या कोई ऐसी चीज़ है जो तुम्हें मुझसे चाहिये।"

लड़की बोली — "हॉ पिता जी। मेरी इच्छा है कि जब मैं सुबह सुबह अपने हाथ मुँह धोऊँ तो रोज मेरी मॉ मेरा बेसिन पकड़े। और आप मेरे लिये तौलिया ले कर तैयार खड़े रहें।"

बादशाह तो ऐसी इच्छा की कल्पना भी नहीं कर सकता था सो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने तुरन्त ही राजकुमारी को मारने का आदेश दे दिया। मारने वालों ने उस पर दया दिखायी और बजाय उसका सिर काटने के वे उसको पहाड़ों पर ले गये और वहॉ छोड़ आये।

इस प्रकार छोड़ी हुई लड़की पहले तो चारों ओर देखती रही फिर किसी एक दिशा में चल दी। वह बहुत दिनों तक पहाड़ के ऊपर नीचे घाटियों में और मैदानों में चलती रही जब तक कि वह एक दूसरे पहाड़ पर नहीं पहुँच गयी।

---

[38] The Forlorn Princess. Tale No 41

उस पहाड़ पर उसने एक महल देखा। वह महल की ओर चल पड़ी और वहॉ पहुँच कर उसका दरवाजा खोला। अन्दर घुसी तो उसे वहॉ कोई दिखायी नहीं दिया। वह उस महल के रसोईघर में चली गयी तो उसने वहॉ दीवार पर एक भेड़ टॅगी देखी।

यह देख कर लड़की ने सोचा "इसे देख कर तो यह लगता है कि यहॉ कोई तो रहता है क्योंकि यह भेड़ तो खाने के लिये ही है।"

उसने भेड़ काटी और उसे ओवन में भुनने के लिये रख दिया। जब वह भुन गयी तो उसने उसे बर्तनों में रखा और वे बर्तन आलमारी में रख दिये। यह कर के उसने अपना ध्यान कमरे की ओर लगाया। कमरे की सब चीज़ों को तरतीब से रखा कौफ़ी बनायी मेज लगायी।

जब रात होने वाली हुई तो उसने किसी के आने की कदमों की आहट सुनी। इससे पहले कि महल का दरवाजा खोल कर कोई अन्दर आता वह छिप गयी। उसने देखा कि एक आदमी जो आधे देव और आधे आदमी की शक्ल का था महल के अन्दर घुसा।

उसको देख कर तो वह इतना डर गयी कि उसकी ऑखें उस पर से हट ही नहीं रही थीं। वह सीधा रसोईघर में गया तो देखा कि उसकी भेड़ तो पकायी जा चुकी थी और वह आलमारी में रखी थी।

फिर उसने अपना कमरा देखा तो देखा कि अंगीठी में आग जली हुई है और उसका हुक्का और कौफ़ी उसका इन्तजार कर रही

है। कमरे की हर चीज़ इतनी तरतीब से रखी हुई थी कि उसको उसका वह इन्तजाम बहुत अच्छा लगा।

वह देव बहुत बूढ़ा था सो जब उसने यह सब देखा तो उसके मुँह से उसके लिये आशीर्वाद निकल पड़ा जिसने भी उसके लिये यह सब किया था। चाहे वह कोई भी होता।

आराम से बैठ कर उसने अपना हुक्का जलाया कौफ़ी पी और ज़ोर ज़ोर से बोल कर सोचने लगा "यहा जो कोई भी आया है और है अगर वह आदमी है तो वह मेरा बेटा होगा और अगर कोई स्त्री है तो वह मेरी बेटी होगी। वह बाहर आये मैं उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।

यह सुन कर लड़की अपने छिपने की जगह से बाहर आ गयी और सकुचाती हुई देव के पास पहुँची। देव ने उसे देखा तो मुस्कुराते हुए कहा — "तुम्हें मेरा आशीर्वाद है बेटी। तुम कौन हो? तुम कहॉ से आयी हो और कहॉ जा रही हो?"

लड़की बोली — "मैं दुनियॉ में अकेली हूँ। पहाड़ों में घूमते घूमते इत्तफाक से मैं इस जगह आ पहुँची हूँ।"

देव बोला — "तुम हमेशा मेरी बेटी रहोगी। मैं बूढ़ा हूँ और यहॉ अकेला ही रहता हूँ। यह महल अब तुम्हारा है। तुम यहॉ डरो नहीं और अपना रोज का काम करो और शाम को आनन्द करो।"

फिर वे कुछ देर तक पास पास बैठे रहे। उसके बाद सोने चले गये।

अगली सुबह लड़की समय से पहले ही उठ गयी। जब देव ने अपनी कौफ़ी और हुक्का पी लिया खाना खा लिया तो वह लड़की से बोला — "मेरी बच्ची। अब मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ। यह चाभी लो और वह कमरा खोलो। उस कमरे में एक अरब है। उससे कहो कि तुम्हारे कपड़े गन्दे हैं वह तुम्हे साफ सुथरे कपड़े दे देगा। तुम उन्हें पहन लेना और आराम से रहो।" यह कह कर वह चला गया।

लड़की ने चाभी से उस कमरे को खोला जिसे देव ने खोलने के लिये कहा था और पुकारा — "डैडी।" तुरन्त ही वहॉ एक अरब प्रगट हो गया।

जैसे ही उसने उसे अपनी इच्छा बतायी कि तुरन्त ही अरब उसके लिये साफ सुथरे कपड़े ले आया। लड़की ने उन्हें उससे ले कर तुरन्त ही पहन भी लिये। जाने से पहले अरब ने कहा — "जब भी तुम अपने आपको थका हुआ महसूस करो तो बागीचे में घूम लेना।"

जब लड़की का काम खत्म हो गया तो वह बागीचे में घूमने चली गयी। उसने देखा कि बागीचे में एक तालाब था। उस तालाब में एक बतख तैर रही थी जिसके सिर और पंख हीरे के थे।

जैसे ही बतख ने लड़की को देखा तो वह बड़े ज़ोर से चीखी — "ओ बेशर्म। क्या तू मेरे शाहज़ादे को लेने आयी है?"

कह कर उसने अपने पंख इतनी ज़ोर से फड़फड़ाये कि उसका एक पंख तो टूट ही गया।

यह सुन कर लड़की बोली — "मुझे दुख है। पर मैं यहॉ क्यों आयी। जब देव पिता मुझे यहॉ देखेंगे तो वह जरूर ही मुझे मार डालेंगे।" यह कह कर वह महल में भाग गयी।

शाम को देव लौटा तो दोनों ने मिल कर खाना खाया और शराब पी। यह साफ था कि देव को उस समय तक पता नहीं था कि दिन में बागीचे में क्या हुआ था सो जब सोने का समय हुआ तो वे दिन की घटना को बिना कहे और बिना जाने अपने अपने सोने के कमरों में चले गये।

अगले दिन देव पिता ने लड़की से फिर से नये कपड़े मॉगने के लिये कहा। यह काम उसने देव के जाने के बाद ही किया। जब वह डैडी के पास कपड़े मॉगने गयी तो डैडी ने फिर से उससे बागीचे में जाने के लिये कहा।

लड़की फिर से बागीचे में गयी। जैसे ही बतख ने उसे देखा तो वह फिर से चिल्लायी — "क्या तू मेरे शाहज़ादे को लेने के लिये सजी है?" इस बार भी उसने यह इतनी ज़ोर से चिल्ला कर कहा कि उसका दूसरा पंख भी टूट गया।

देव पिता के गुस्से को सोच कर लड़की जितनी जल्दी वहॉ से भाग सकती थी महल में भाग गयी। रोज की तरह शाम को देव आया। दोनों ने मिल कर खाया पिया और रोज की तरह ही जब

सोने का समय हुआ तो दोनों अपने अपने कमरों में सोने चले गये। आज भी बतख के बारे में कोई बात नहीं हुई।

अगले दिन देव पिता फिर से बाहर गया तो लड़की ने अपने कपड़े बदले और फिर से बागीचे में गयी। इस बार जब बतख ने लड़की को देखा तो इतने ज़ोर से चीख मारी कि उसका सिर ही टूट गया और वह मर गयी।

अब यह बतख देव पिता की बेटी थी। एक बादशाह का बेटा इससे बहुत ज़्यादा प्यार करता था। यह बेटा अपने एक महल में आया करता था जिसका बागीचा देव पिता के बागीचे के बराबर में ही था। इस तरह उस शाहज़ादे ने इस लड़की को देखा जो अपने व्यक्तिगत कारणों से उसे फिर कभी देखना नहीं चाहती थी सो उसने अपने आपको एक बतख में बदल लिया और तालाब में तैरने लगी।

राजकुमार इस घटना का गवाह था जो अब तक हुआ था। उसने यह सब देखा था और सुना था। उसने देखा कि यह लड़की देव की लड़की से अधिक सुन्दर है। वह उसे दिल से प्यार करने लगा था।

उधर लड़की को यह पता नहीं था कि वह बतख कौन थी। उसको लग रहा था कि वह देव पिता की बतख थी और जब देव पिता को इस बात का पता चलेगा तो देव पिता बहुत गुस्सा होगा और उसे बड़ी निर्दयता से मार देगा।

पर जब लड़की को यह पता चला कि देव ने उसके बारे में कोई बात ही नहीं की तो उसकी हिम्मत बढ़ गयी।

फिर भी जब देव पिता रोज बाहर चला जाता तो उसे एक डर आ कर घेर लेता कि अगर कहीं देव पिता को इस बात का पता चल गया तो और वह अपना गुस्सा उसके ऊपर उतारे तो।

इस बीच शाहज़ादा अपने पिता के पास गया और बोला — "पिता जी और शाह। फलॉ फलॉ देव के एक बहुत सुन्दर लड़की है जिससे में मैं बहुत अधिक प्यार करता हूॅ। आप मेरी उससे शादी करा दें नहीं तो मैं ज़िन्दा नहीं रह पाऊॅगा।"

सो उसके पिता ने इस बारे में देव को एक पत्र लिखा और उसे एक नौकर के हाथ भेजा। देव ने उस पत्र को पढ़ने के बाद उस नौकर से कहा — "बादशाह से कहना कि मेरी बेटी तुम्हारी है पर मैं बहुत गरीब हूॅ इसलिये मेरी बेटी से अधिक वह मुझसे कुछ और की आशा न करें। अगर वह इस बात पर राजी हैं तो शादी अगले हफ्ते हो जायेगी।

इसके अलावा क्योंकि मैं बहुत गरीब हूॅ तो वह बरात में भी 1000 लोग से अधिक न लायें क्योंकि में मैं केवल इतने ही लोगों का स्वागत कर सकता हूॅ।"

बादशाह का नौकर इस सन्देश के साथ लौट गया और यह सन्देश जा कर बादशाह को सुनाया।

जिस दिन शादी होने वाली थी उस दिन देव ने लड़की को कुछ चाभियॉ दी और उनसे कुछ कमरे खोलने के लिये कहा। उसने कहा — "ताली बजाना और बहुत सारे दास प्रगट हो जायेंगे। तुम उनसे डरना नहीं।" उसने वैसा ही किया तो अब लड़की के आस पास बहुत सारे और बहुत तरीके के दास खड़े हुए थे – काले सफेद पुरुष स्त्री। उन्होंने उसके कपड़े का किनारा चूमा और उसे आदरपूर्वक सलाम किया।

वह उन सबको ले कर देव के पास गयी तो देव ने हर एक को उसका काम बताया। महल के दरवाजे खोल दिये गये। बादशाह और उसके **1000** लोग उसके बेटे की शादी के लिये वहॉ आये। रस्म पूरी की गयी। दावत खायी गयी। उसके बाद शाही मेहमान वहॉ से चले गये।

जाते समय देव पिता ने बादशाह से कहा — "जब आप दुलहिन को भेजें तो केवल **500** गाड़ियॉ ही भेजें क्योंकि मैं उसे इससे अधिक देने में असमर्थ हूँ।" सब लोगों को विदा में उसने एक एक बहुत ही कीमती सूट दिया।

एक हफ्ते बाद बादशाह ने लड़की के दहेज के लिये **500** गाड़ियॉ भेजीं और उनके साथ बादशाह का अपना कोचवान दुलहिन को लेने के लिये आया।

देव पिता को वह गाड़ी अच्छी नहीं लगी सो उसने अपने दासों को आदेश दिया कि वे उसकी गोद ली हुई बेटी के लिये बहुत ही

सादी सी गाड़ी ले कर आयें। इतनी बढ़िया गाड़ी तो बादशाह के महल में कभी नहीं देखी गयी थी। वहॉ शादी बहुत धूमधाम से हुई और इसकी दावतें और आनन्द **40** दिन और **40** रात मनाया गया।

खुश खुश जोड़े का समय आनन्द से बीतता रहा। वे बहुत ही खुश थे कि एक दिन शाहज़ादा एक लम्बी यात्रा पर गया। उसके जाने के बाद लड़की बीमार हो गयी। नौकरों को डाक्टरों की खोज में चारों ओर भेजा गया।

उनमें से कोई भी डाक्टर लड़की का इलाज ठीक से नहीं कर सका। तीन दिन और रात वह इतनी ज़ोर का दर्द सहती रही कि इस खबर को उसके पिता देव पिता को भेजना उचित समझा गया। देव पिता अपनी बेटी को देखने के लिये तुरन्त ही भागा चला आया।

उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी मेरी बॉह पकड़ो।"

और लो जैसे ही उसने उसकी बॉह पकड़ी तो वह तो ऐसे टूट गयी जैसे किसी बहुत ही नाजुक चीज़ की बनी हो और देव कराह उठा। लड़की बोली — "मुझे बहुत अफसोस है पिता जी आपकी तो बॉह ही टूट गयी।"

देव ने उसे तसल्ली दी कि उसे इस बारे में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। फिर उसने अपने एक दास से कहा कि वह उसकी

बॉह को ले जा कर एक कोने में रख दे। जैसे ही यह किया गया कि उसकी बॉह एक हीरे के पेड़ में बदल गयी।

फिर देव ने लड़की से अपनी दूसरी बॉह पकड़ने के लिये कहा और उसने वैसा ही किया तो वह भी टूट गयी। देव ने उसे भी अपने दास से कह कर उसे एक और कोने में रखवा दिया तो वह भी एक और हीरे के पेड़ में बदल गयी।

इसके बाद देव ने उससे अपनी टॉग पकड़वायी तो वह भी टूट गयी। देव ने उसे भी एक कोने में रखवाया तो वह एक सोने का स्टूल बन गया। यही हाल उसकी दूसरी टॉग का हुआ। उसकी दूसरी टॉग भी सोने का स्टूल बन गयी।

बिना बॉहों और टॉगों के देव ने अबकी बार लड़की से अपना सिर पकड़ने के लिये कहा। जैसे ही लड़की ने देव का सिर पकड़ा वह उसके हाथ में आ गया। यह देख कर तो लड़की चिल्ला पड़ी "देव पिता जी। आपका तो सिर भी गिर पड़ा।"

देव बोला — "कोई बात नहीं बेटी।" फिर उसने अपने सिर को कमरे के बीच में रखने के लिये कहा। दासों ने वह भी कर दिया तो लो वह तो दुनियॉ के एक सबसे सुन्दर पलंग में बदल गया।

अब देव का धड़ फर्श पर नीचे गिर पड़ा और उसके गिरते ही वह एक बहुत सुन्दर कालीन बन गया। लड़की को उस पलंग पर लिटा दिया गया। इन सब बातों की खबर तो तुरन्त ही चारों ओर

फैल गयी। बहुत सारे लोग मीलों दूर से इस दृश्य को देखने के लिये वहॉ आये।

इन आने वालों में लड़की के माता पिता भी थे पर उनको यह पता नहीं था कि यह सब उनकी अपनी बेटी के साथ हुआ था। जब वे लोग आये तो लड़की और शाहज़ादा अपने कमरे में खाना खाने के लिये बैठे थे। लड़की ने तो अपने माता पिता को तुरन्त पहचान लिया हालॉकि वे उसे नहीं पहचान सके।

पर बूढ़े बादशाह की निगाह बराबर अपनी बेटी के चेहरे पर ही लगी हुई थी जिसके चेहरे की वह प्रशंसा किये बिना न रह सका। बहुत सारे दास लड़की के आसपास खड़े हुए थे।

बूढ़े बादशाह ने एक पानी का जग लिया और एक तौलिया लिया और अपनी पत्नी से कहा — "सुलताना। चलो इन दासों के पास तक चलते हैं। मैं यह तौलिया पकड़ता हूॅ तुम पानी का जग पकड़ लो ताकि हम राजकुमारी के और पास तक पहुॅच सकें और उसे और पास से देख सकें।"

शाहज़ादा और लड़की का खाना खत्म हुआ और लड़की के माता पिता तौलिया और पानी ले कर आगे बढ़े। बहुत सारे दास भी इसी काम के लिये आगे बढ़े।

जब वे शाहज़ादे और लड़की के हाथ धुला रहे थे तो लड़की ने कहा — "आदरणीय पिता जी। जब आपने मेरी इच्छा पूछी थी तो मैंने कहा था कि मेरी इच्छा है कि मेरी मॉ मेरे हाथ धुलाने के लिये

बेसिन पकड़े और आप तौलिया ले कर खड़े हों तो आप गुस्सा हो गये थे और आपने मुझे मरवाने का आदेश दे दिया था।

अब देखिये कि वही काम करने के लिये आप यहॉ कितनी बड़ी यात्रा कर के यहॉ आये हैं। इससे यह साफ समझ में आता है कि यह इच्छा मेरी खुद की नहीं थी इसी लिये आपका मुझे राज्य से निकलवाना गलत था।

बादशाह बोला — "मैं गलत था बेटी। अल्लाह मेरे पाप को क्षमा कर दे और तू भी मुझे क्षमा कर दे। अब तो तेरी इच्छा पूरी हो गयी"

इस प्रकार माता पिता और बेटी में फिर से सुलह हो गयी। इस खुशी के मौके को फिर **40** दिन और **40** रात तक खा पी कर और आनन्द कर के मनाया गया।

42 सुन्दर हलवा लड़की[39]

एक बार एक गरीब कंघी बनाने वाला था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे कुछ पैसे दो तो मैं अपनी कुछ कंघियॉ किसी कौफ़ी की दूकान पर ले जाऊॅगा। हो सकता है कि मैं वहॉ उन्हें कुछ पैसों की बेच पाऊॅ और उससे आया पैसा घर ला सकूॅ।"

उसकी पत्नी ने उसे कुछ पैसे दे दिये और वह अपनी कंघियॉ ले कर एक कौफ़ी की दूकान पर चला गया। वहॉ पहुॅच कर वह बैठ गया और कौफ़ी पीने लगा। जब कि वह कौफ़ी पी रहा था और अपनी इस विशिष्ट परिस्थिति के बारे में सोच रहा था कई कंघी के व्यापारी वहॉ आये और कंघी बनाने वाले के बारे में पूछने लगे।

यह सुन कर कंघी बनाने वाला अपनी जगह से उठा और उन्हें अपनी कंघियॉ दिखाने लगा। उसकी कंघियॉ बहुत पसन्द की गयीं क्योंकि उसने जो वह कंघियॉ ले गया था वे तो उसकी सब बिक ही गयीं साथ में उसे हजार और कंघियों का और्डर भी मिल गया।

अपनी इस किस्मत पर खुश हो कर कंघी बनाने वाला घर चला गया और एक दो महीनों ही हजारों कंघे उसके पास व्यापारियों को देने के लिये तैयार थे। फिर वह उन्हें व्यापारियों के पास ले गया और उन्हें निश्चित दामों पर दे दिये और बहुत अच्छा फायदा कमाया।

---

[39] The Beautiful Helwa Maiden. Tale No 42

कंघी बनाने वाला अब घरीब आदमी नहीं रह गया था वह तो अब एक अमीर आदमी हो गया था सो एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा कि अब उनको हज करने जाना चाहिये। पत्नी ने कहा कि उन्हें हज करने जरूर ही जाना चाहिये पर हम अपनी बेटी को वहॉ साथ नहीं ले जा सकते।

कंघी बनाने वाला बोला — "हम उसे होजा की देखभाल में छोड़ जायेंगे। वह एक अच्छी हैसियत वाला आदमी है।"

इस तरह यह मामला तय हो गया और उन्होंने अपनी लम्बी यात्रा की तैयारी करनी शुरू कर दी। वे अपने छोटे बेटे को अपने साथ ले गये थे और अपनी बेटी को होजा की निगरानी में छोड़ गये जिस पर उनको पूरा विश्वास था।

अब ऐसा हुआ कि होजा का परिवार जिसके घर में वे अपनी बेटी को छोड़ कर गये थे कंघी बनाने वाले की किस्मत से बहुत जलता था और अन्दर ही अन्दर उसको नुकसान पहुॅचाने की ताक में लगे थे।

जब कंघी बनाने वाला हज पर चला गया तो होजा ने उसकी बेटी को मार डालने की सोचा पर उसकी इच्छा यह थी कि वह उसकी मौत को एक दुर्घटना दिखाये ताकि उस पर कोई ऑच न आये।

उस देश का यही रिवाज था कि लोग रोज शहर में बने नहानघरों में नहाने जाया करते थे। उसने सोचा कि यही अच्छा

रहेगा कि एक दिन वह उसे नहानघर ले जायेगा और वहॉ उसे डुबो देगा। सो जब वह नहानघर गया तो उसने एक दो सोने के सिक्के वहॉ की एक स्त्री के हाथ में रखे और उससे कहा कि वह उस लड़की को वहॉ नहाने के लिये प्रेरित करे।

इस योजना के अनुसार अगले दिन नहानघर की स्त्री होजा के घर आयी और उसने लड़की से कहा कि वह नहानघर में नहाने क्यों नहीं आती थी। लड़की ने कहा "क्योंकि मेरे साथ जाने के लिये कोई है ही नहीं।"

स्त्री बोली — "तब तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारी सहायता करूॅगी।" इस प्रकार वे दोनों एक साथ नहानघर चली गयीं।

स्त्री लड़की को भाप नहान के लिये ले गयी और फिर उसने होजा को वहॉ बुला लिया। लड़की ने जब होजा को देखा तो उसको लगा कि वह होजा के किसी जाल में फॅस गयी है। पर उसने यह दिखाया नहीं और होजा से कहा — "मुझे खुशी है कि आप यहॉ हैं लाइये मैं आपका सिर धोने में आपकी सहायता करूॅगी।"

कह कर उसने उसके सिर में साबुन ऐसे लगाया जिससे उसका सारा सिर ढक गया और अब उसका सिर दिखायी भी नहीं पड़ रहा था। फिर उसने अपने भारी भारी लकड़ी के लट्ठे उतारे उनको नहाने के तौलिये से बॉधा और उससे होजा को इतनी निर्दयता से मारा कि अपने घावों की वजह से हिल भी न सका।

यह कर के लड़की वहॉ से जल्दी से बच कर अपने माता पिता के घर भाग गयी।

धीरे धीरे होजा होश में आया तो उसने अपने सिर से साबुन धोया कपड़े पहने और घर चला गया। एक सप्ताह के बाद से भी ज़्यादा दिनों तक वह अपनी सजा को महसूस करता रहा।

फिर बदला लेने के विचार से उसने लड़की के माता पिता को एक पत्र लिखा जिसमें उसने लिखा कि वह घर से उसके पैसे चुरा कर भाग गयी है।

जब माता पिता को यह पत्र मिला तब उन्हें बड़ा धक्का लगा और वे गुस्सा भी हुए। उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह तुरन्त ही घर लौटे और उस बेईमान लड़की को किसी पहाड़ की चोटी पर ले जा कर मार डाले और खून से सने हुए उसके कपड़े ला कर उसे दिखाये ताकि उसे यह विश्वास हो जाये कि उसे मार दिया गया है।

उनका बेटा तुरन्त ही घर लौटा अपनी बहन को पकड़ा और उसे एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। पर उसका दिल उसे मारने का नहीं किया। उसने छोड़ दिया और कहा कि वह जहॉ भी चाहे चली जाये।

अपने आपको बचाने के लिये उसने अपना पैर काटा और अपने खून को अपनी बहन के कपड़ों पर लगा दिया। ये कपड़े वह अपने माता पिता के पास उन्हें यह दिखाने के लिये ले गया कि उसने अपनी बहिन को मार दिया है।

भाई के जाने के बाद लड़की वहॉ से और आगे चल दी। पहाड़ों के ऊपर चढ़ती हुई घाटियों में घूमती हुई मैदानों को पार करती हुई वह एक सोते के पास आ निकली।

पानी पी कर वह आराम करने लगी। तभी उसने देखा कि वहॉ का बादशाह अपने वज़ीर के साथ शिकार पर निकला हुआ है। वह उन्हें देख कर डर गयी और वहीं पास के एक पेड़ पर चढ़ गयी और पत्तों में छिप कर बैठ गयी।

दोनों शिकारी वहॉ तक आये तो बादशाह ने अपने वज़ीर से कहा — "मैं यहॉ थोड़ा आराम करूँगा और प्रार्थना करूँगा।"

जब बादशाह प्रार्थना कर रहा था तो उसने अपना सिर उठाया तो देखा कि पेड़ पर तो एक लड़की बैठी थी। वह उसको इतनी सुन्दर लगी जैसे दोपहर का सूरज।

जब उसने अपनी प्रार्थना खत्म कर ली तो अपने वज़ीर से कहा — "मैंने तो अपनी खान खोद ली है।"

फिर उसने ऊपर की ओर देखते हुए कहा — "तुम इन हो या जिन?"

लड़की बोली — "न तो मैं इन हूँ और न ही कोई जिन। मैं तो इसी मिट्टी का बच्चा हूँ जैसे आप हैं।"

तब बादशाह ने उससे नीचे उतरने के लिये कहा। वह नीचे उतर आयी और वे सब एक साथ महल आ गये जहॉ तीन दिन और तीन रात तक खुशियॉ मनाने के बाद वे दोनों पति पत्नी बन गये।

एक दिन बादशाह को उसने अपने जीवन की कहानी बतायी और साथ में यह भी कहा कि वह अपने माता पिता और भाई को एक बार फिर से देखना चाहती थी।

बादशाह ने उसके साथ अपनी सहानुभूति जतायी और उसकी यात्रा का इन्तजाम करने का आदेश दे दिया। उसने उसे अपने वज़ीर की देखरेख में भेजा और साथ में उससे यह भी कहा कि अगर सुलताना के माता पिता यहॉ आना चाहें तो वह उनको अपने साथ ले कर आये।

निश्चित दिन सुलताना वज़ीर और बहुत सारे सिपाहियों की देखरेख में अपने माता पिता के घर चली। कई दिनों की यात्रा के बाद वे एक पहाड़ की तलहटी में पहुँचे। वहॉ रात को ठहरने के लिये टैन्ट लगाये गये।

आधी रात को वज़ीर सुलतान के टैन्ट में घुसा और उसने सुलताना से कहा — "तुम जितनी बादशाह की हो उतनी ही मेरी भी क्योंकि हम दोनों ने तुम्हें पाया है। क्योंकि तुमने मेरी बजाय बादशाह से शादी कर ली है इसलिये मैं तुम्हें मार दूँगा।"

बेचारी सुलताना ने उससे विनती की कि वह उसे मारने से पहले उसे अल्लाह की प्रार्थना करने के लिये कुछ पल दे दे जो उसने उसे दे दिये। लेकिन वह कहीं भाग न जाये इसलिये उसकी कमर में रस्सी बॉध दी।

रस्सी बॅधे बॅधे वह टैन्ट के दूसरे हिस्से में चली गयी जहॉ वह अल्लाह की कृपा से रस्सी खोलने में सफल हो गयी और वहॉ से भाग गयी।

इस बीच वज़ीर उसका इन्तजार करते करते थक गया तो वह भी उसके पीछे पीछे उसे ढूॅढते हुए टैन्ट के उसी हिस्से में गया तो उसने देखा कि रस्सी एक पत्थर से बॅधी थी और सुलताना का कोई पता नहीं था।

उसने सिपाहियों को नींद से उठाया और उनसे कहा कि वे यह कहें कि सुलताना उसे मारना चाहती थी और भाग गयी। फिर यह तय किया गया कि अब टैन्टों को उखाड़ा जाये और अपने देश वापस चला जाये।

भागते भागते सुलताना अपने माता पिता के घर चली गयी। रास्ते में उसे एक गड़रिया मिला उसने उसके कपड़ों से अपने कीमती कपड़े बदल लिये। गड़रिये को इस सौदे में भला क्या ऐतराज हो सकता था।

अब एक नौजवान के वेश में सुलताना एक दूकान में घुसी जहॉ हलवा बनता था और बेचा जाता था। उसने वहॉ एक नौकरी की मॉग की जो उसे सुन्दर होने की वजह से तुरन्त ही मिल गयी। बहुत जल्दी ही सब जगह यह खबर फैल गयी कि हलवे की दूकान पर एक बहुत ही सुन्दर काम करने वाला आया है जो बहुत अच्छा हलवा बनाता है।

सुलताना के पिता ने अब कंघी बनाने के काम से अवकाश ले लिया था और अपनी एक कौफ़ी की दूकान खोल ली थी। वह उनमें से एक थे जो उस हलवे की दूकान पर केवल उस नये हलवा बनाने वाले को ही देखने आते थे। हलवा बनाने वाले ने अपने पिता को पहली ही बार में पहचान लिया था पर यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि पिता अपनी बेटी को नहीं पहचान पाया।

अब हम बादशाह यानी लड़की के पति के पास चलते हैं। वज़ीर वापस लौट आया था और उसने अपनी बनी हुई कहानी उसे सुना दी थी। तबसे बादशाह को बिल्कुल भी शान्ति नहीं थी। वह अपनी खोयी हुई पत्नी के बारे में ही सोचता रहता आहें भरता रहता रोता रहता।

एक दिन उसने अपने वज़ीर से कहा कि उसे अपनी पत्नी चाहिये। मुझे उसे जरूर ढूँढना चाहिये वरना मैं मर जाऊँगा। वजीर ने उसके इस काम का बहुत विरोध किया पर सब बेकार। बादशाह ने वज़ीर को साथ लिया महल छोड़ा और सुलताना की खोज में चल दिया।

बहुत इधर उधर घूमने के बाद वे उसी जगह पहुँच गये जहॉ सुलताना वास्तव में रह रही थी। वे लोग भूखे थे और बहुत थके हुए थे सो उन्होंने उससे किसी सराय के बारे में पूछा।

वहॉ उनको पता चला कि वहॉ तो कोई सराय नहीं थी पर वहॉ एक बहुत बढ़िया हलवे की दूकान थी जहॉ एक नौजवान बहुत ही

बढ़िया हलवा बेचता था। सो बादशाह और वज़ीर ने सोचा कि चलो उसी प्रसिद्ध हलवे वाली दूकान पर चलते हैं और वे उस ओर चल दिये।

जैसे ही वे हलवे की दूकान पर पहुँचे नौजवान ने उन दोनों को पहचान लिया पर वे सुलताना को उस रूप में नहीं पहचान सके। बादशाह ने उसे कुछ पैसे दिये और बोले — "ओ नौजवान। थोड़ा सा हलवा हमको भी दो। हम भी चख कर देखें।"

नौजवान बोला — "जनाब। अगर आप यहॉ सारी रात रुकें तो मैं आपको बहुत बढ़िया हलवा बना कर खिला सकता हूँ। और साथ में एक बढ़िया कहानी भी सुनाऊँगा।"

स्वाभाविक रूप से उस नौजवान की ओर आकर्षित होने की वजह से बादशाह उसकी इस बात को मान गये कि वह रात भर वहीं रहें और उसकी कहानी सुनें।

शहर में पहले से ही एक "हलवा शाम" का इन्तजाम किया गया था और होशियार नौजवान हलवा बनाने वाले को खाना बनाने के लिये बुलवाया गया था। नौजवान ने कहा — "मैं बहुत खुशी से आता पर आज मेरे यहॉ कुछ मेहमान हैं।"

अब क्योंकि नौजवान ने उनके बुलावे को मना नहीं किया था तो उससे कहा गया कि वह अपने मेहमानों को भी ला सकता है। वे सब उनका अपने बीच स्वागत कर के बहुत खुश होंगे और उनका ठीक से सम्मान करेंगे।

यह तय होने पर शाम को तीनों उस हलवा शाम में शामिल होने के लिये चल दिये। उनके लिये जगह चुनी गयी जहॉ उनको सम्मान से बिठाया गया। कुछ देर के लिये नौजवान वहॉ से रसोईघर में खाना बनाने चला गया। कुछ देर बाद ही वह वहॉ से खाना ले कर बाहर आया और मेहमानों की ओर चला गया।

उसने वहॉ इकट्ठा हुए लोगों में बादशाह वज़ीर अपने पिता अपने भाई और होजा को पहचान लिया था।

हलवा बॉटते हुए वह बोला — "अब हम लोग यहॉ आनन्द मनाने के लिये हैं तो हममें से हर एक को अपने अपने जीवन की कोई एक मजेदार कहानी सुनानी चाहिये।"

इस तरह से बातचीत शुरू हुई और कई लोगों ने अपने अपने जीवन की घटनाऐं सुनायीं। इसके बाद हलवा बनाने वाले की बारी आयी तो उसने अपनी कहानी सुनाने से पहले एक शर्त रखी कि जब तक वह अपनी कहानी पूरी न सुना ले कोई वहॉ से उठ कर नहीं जायेगा।

दरवाजा बन्द कर दिया गया और वह उसके सामने बैठ गया। फिर उसने नहानघर जाने से अपनी कहानी शुरू की। यह कहानी सुनते ही होजा बोला कि उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही थी सो उसे ताजा हवा के लिये बाहर जाना चाहिये। कहानी कहने वाले ने उससे डॉट कर कहा "तुम यहीं बैठे रहो।"

फिर उसने वज़ीर के अत्याचार की कहानी सुनायी। बादशाह उस कहानी को मोहित हुआ सा सुनता रहा। फिर उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे क्योंकि वह और उसका वज़ीर लड़की के पिता और भाई और होजा सभी उस कहानी को समझ गये थे।

उसने कहानी का अन्त सबकी गलतियॉ बताते हुए करते हुए सबसे कहा — "ये होजा और वज़ीर मेरे दुश्मन हैं और ये दोनों ही इस समय यहॉ हैं। मेरे बादशाह पति भाई और पिता भी यहीं हैं।" यह कह कर वह अपने पति की ओर दौड़ गया जिसने खुशी के ऑसू बहाते हुए उसे अपनी बॉहों में ले लिया।

अगले दिन बादशाह ने होजा और वज़ीर को अपने सामने बुलवाया और उनसे पूछा कि उन्हें **40** खच्चर चाहिये या फिर **40** चाकू चाहिये।

उन्होंने कहा — "**40** चाकू हमारे दुश्मनों के लिये **40** खच्चर हमारे लिये।"

सो उनको **40** खच्चरों से कस कर बॉध दिया गया जो उनको ले कर भाग गये। इस प्रकार उनका अन्त हुआ।

लड़की के अपने पुराने घर में अपने माता पिता और भाई से मिलने के बाद वह बादशाह के साथ एक नये सिरे से अपनी जिन्दगी शुरू करने अपने महल लौट गयी।

43 ज्योतिष विद्या[40]

एक बार की बात है कि एक गड़रिया था जिसके एक पत्नी थी और दो बेटे थे। गड़रिया रोज पड़ोस की भेड़ों को इकट्ठा करता और उनको पास के घास के मैदान में चराने के लिये ले जाता जो दो पहाड़ों के बीच में था।

जब शाम हो जाती तो वह उनको फिर से इकट्ठा कर के उनके मालिकों के घर छोड़ आता। इस काम के लिये उसे उनसे **5–10** पैसे तक मिल जाते थे। इसी पैसे से उसे अपना और अपने परिवार का काम चलाना पड़ता।

एक दिन गड़रिया मर गया तो अब उसका काम उसके बड़े बेटे ने सॅभाल लिया। अभी वह इस दुख से सॅभल भी नहीं पाया था कि उसकी मॉ भी मर गयी। इन दोनों दुखों ने छोटे बेटे पर इतना असर किया कि वह घर में ही नहीं रह सका। वह घर छोड़ कर चला गया।

कई सप्ताहों तक वह इधर उधर घूमता रहा – कभी पहाड़ियो पर तो कभी घाटियों में तो कभी घास के मैदानों में। जब तक कि उसे बगदाद की मीनारें नजर नहीं आ गयीं।

[40] Astrology. Tale No 43

वहॉ की सड़कों पर घूमते हुए एक दिन वह एक आदमी से मिला जिसने उससे कहा — "तुम कहॉ से आ रहे हो बेटे? तुम यहॉ क्या कर रहे हो और तुम्हारा नाम क्या है?"

नौजवान बोला — "मैं एक विदेशी हूॅ और कोई काम ढूॅढ रहा हूॅ। मेरा नाम मुहम्मद है।"

उस आदमी ने मुहम्मद को अपनी सेवा में रख लिया। नौजवान भी राजी हो गया। वह अजनबी के साथ उसके घर चला गया। मुहम्मद वहॉ रोज उसके घर की साफ सफाई करता और अपने मालिक को खुश रखने के लिये सब कुछ करता। इस प्रकार उसने अपने मालिक का विश्वास जीत लिया।

एक दिन उसके मालिक ने उससे कहा कि यह रस्सी और थैला लो और अब हम यहॉ से चलते हैं। वे लोग बहुत दूर तक चलते रहे जब तक वे एक पहाड़ की तराई में नहीं आ गये।

यहॉ वे एक कुॅए के पास पहुॅचे। वह कुॅआ कुछ बड़े पत्थरों से ढका हुआ था। उन्होंने उस कुॅए पर से वे पत्थर हटाये तो मालिक बोला — "मुहम्मद मेरे बेटे अब तुम मेरी बात सुनो। मैं इस रस्सी के सहारे तुम्हें इस कुॅए में उतार दूॅगा। फिर तुम्हें जो कुछ भी इसकी तली में मिल जाये तुम उससे अपना यह थैला भर लेना और इसे रस्सी से बॉध देना और मैं उसे ऊपर खींच लूॅगा।

उसके बाद फिर मैं यह रस्सी दोबारा नीचे फेंक दूॅगा ताकि तुम ऊपर आ सको।"

मुहम्मद राजी हो गया। उसकी कमर में रस्सी बॉध दी गयी और वह थैला ले कर रस्सी के सहारे नीचे कुॅए में उतार दिया गया। जब वह कुॅए में नीचे पहुॅचा तो वहॉ का दृश्य देख कर तो उसकी ऑखें चकाचौंध हो गयीं। वहॉ तो सोना चॉदी हीरे मोतियों के ढेर लगे पड़े थे। उसने तुरन्त ही उन चीज़ों से अपना थैला भरा और रस्सी से बॉध दिया।

उस थैले को ऊपर खींच लिया गया। जब वह थैला उसकी ऑखों से ओझल हो गया तब उसे यह देख कर बहुत दुख हुआ कि उसके मालिक ने उसे कुॅए में से निकालने के लिये कोई रस्सी नहीं फेंकी बल्कि वह उस कुॅए पर पत्थर ढक कर चला गया। बेचारा मुहम्मद उसको अपनी किस्मत पर वहीं कुॅए में छोड़ दिया गया था।

वह बेचारा यह सोच कर कि अब उसका क्या होगा वहीं कुॅए में ही इधर उधर चक्कर काटने लगा। तभी उसको उस कुॅए में एक छोटा सा रास्ता दिखायी दिया। वह तुरन्त ही उसी दिशा में चल दिया। काफी चल कर जब वह थक गया तब वह एक घाटी की सीमा पर जा निकला।

यहॉ वह सुस्ताने के लिये थोड़ी देर के लिये बैठ गया। वहॉ बैठे बैठे वह कोई तरकीब सोचने लगा जिससे वह उस आदमी से बदला ले सके जिसकी उसने इतनी वफादारी से सेवा की थी।

कुछ देर बाद जब वह सुस्ता लिया तो वह वहॉ से उठा रास्ते में अपने कपड़े बदले और चलते चलते एक शहर में पहुॅच गया। वह वहॉ उस शहर में बिना किसी उद्देश्य के घूमता रहा।

घूमते घूमते तो उसे फिर वही आदमी मिल गया जिसने उसे कुॅए पर धोखा दिया था। अब मुहम्मद क्योंकि दूसरे कपड़े पहने था इसलिये वह उसे पहचान नहीं पाया।

उसने फिर उस नौजवान से पूछा — "तुम कहॉ से आ रहे हो बेटा?"

मुहम्मद बोला — "मैं फलॉ फलॉ शहर में एक व्यापारी था। वहॉ मेरा सब कुछ लूट लिया गया तो अब मैं किसी नौकरी की तलाश में हूॅ।"

आदमी ने पूछा कि क्या वह उसके साथ काम करेगा। मुहम्मद बोला "खुशी से।" और उसने उसे अपना नाम हसन बताया। दोनों उस आदमी के घर चल दिये।

करीब करीब दस दिन बीत गये तो एक दिन मालिक ने अपने नौकर को बुलाया — "हसन। लो यह रस्सी और थैला लो चलो यहॉ से कहीं और चलते हैं।"

वे वहीं पहुॅचे जहॉ वे पहले गये थे। मालिक ने उससे फिर वही कहा जो उसने पहले कहा था — "मैं तुमको इस कुॅए में नीचे उतारता हूॅ। जब तुम इस कुॅए की तली में पहुॅच जाओ तो तुम्हें वहॉ

जो कुछ दिखायी दे उससे इस थैले को भर कर इस रस्सी में बॉध देना... ।"

पर मुहम्मद ने उसे इससे आगे बोलने नहीं दिया क्योंकि मुहम्मद उस पर बड़े ज़ोर से गुस्सा हो कर बोला — "ओ नीच। तू मुझे एक बार धोखा दे चुका है और अब तू मुझे इस कुॅए में दोबारा भी छोड़ना चाहता है।"

कह कर वह उसके ऊपर चाकू ले कर कूद पड़ा। उसने उसका सिर काट कर उसी कुॅए में फेंक दिया। पत्थरों से कुॅए को ढक कर वह शहर वापस चला गया।

वहॉ पहुॅच कर उसने एक घर खरीदा और उसे बहुत अच्छी तरह से सजाया और आनन्द से उसमें रहने लगा। अब वह आराम से खर्च करता था। वह उस गुप्त रास्ते से उस कुॅए की तली में जाता था जिसे उसने ढूॅढा था और वहॉ से जितना चाहे खजाना ले आता था। अब वह सारे राज्य में सबसे अमीर आदमी हो गया था।

अब ऐसा हुआ कि बादशाह ने पड़ोसी राज्य से लड़ाई छेड़ दी पर क्योंकि उसके पास पैसा बहुत नहीं था तो खर्चे के लिये चारों ओर से सोना इकट्ठा किया जाने लग।

मुहम्मद के पास तो बहुत पैसा था सो उसने बहुत सारा सोना बादशाह को दिया जिससे बादशाह अपने पड़ोसी राज्य पर विजय प्राप्त कर सका। पर शान्ति पत्र पर हस्ताक्षर करने से पहले ही बादशाह मर गया।

राज्य के बड़े बड़े लोग आपस में मिले और क्योंकि मुहम्मद ही उस समय राज्य में सबसे अधिक अमीर था तो सबकी राय से वही बादशाह चुन लिया गया। काफी बहस करने के बाद यह भी निश्चय किया गया कि क्योंकि बादशाह न पढ़ना जानता था न लिखना से एक होजा को उसे यह सब सिखाने के लिये रख दिया जाये। एक ठीक से होजा को बुलवा लिया गया और वह उसे पढ़ाने आने लगा।

एक रात होजा ने अपने मालिक से कहा जो उसका शिष्य था — "मुझे आपको ज्योतिष भी सिखानी चाहिये।"

बादशाह ने पूछा — "यह क्या होता है और इसका क्या फायदा है। हम कुछ और क्यों न सीखें।"

होजा बोला — "सीढ़ियों के पास एक किताब रखी है आप उसे उठा लायें तब मैं आपको समझाता हूँ कि ज्योतिष क्या होती है।"

सो बादशाह ने मोमबत्ती तो फर्श पर रख दी और वह किताब उठा ली। वह उसे उठा कर बस अपने कमरे में लौटने वाला ही था एक बहुत बड़ी चिड़िया ने उसे पकड़ लिया और उसे ले कर उड़ गयी।

वह उसको ले कर काफी दूर चली गयी और फिर एक अनजानी जगह पर ले जा कर उसे उतार दिया और वहीं छोड़ दिया। अब क्योंकि काफी अँधेरा था सो बादशाह वहीं खड़ा रहा

जब तक कि सुबह हुई। सुबह होने पर उसने इधर उधर देखा तो देखा कि वह तो एक कब्रिस्तान में खड़ा हुआ था।

सुबह होने पर वह वहॉ से पास के शहर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने आते जाते लोगों से पूछा कि बगदाद वहॉ से कितनी दूर है। कोई भी उसे यह नहीं बता सका। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उस शहर का नाम पहले कभी नहीं सुना था। सो वह आगे चलता रहा।

आगे चलते हुए वह लोगों से पूछता ही रहा कि एक बूढ़े ने उससे कहा — "मैं नहीं जानता कि बगदाद कहॉ है पर **200** साल पहले मेरे बाबा के पिता वहॉ थे। यह बात मैंने अपने पिता से सुनी थी। पर वह यहॉ से वह कितनी दूर है यह मुझे नहीं पता।"

यह सुन कर बादशाह ने एक गहरी आह भरी क्योंकि उसे लगा कि अब वह बगदाद कभी नहीं पहुँच पायेगा। धीरे धीरे उसने अपने आपको अपनी किस्मत पर छोड़ दिया। फिर वह एक कौफ़ी की दूकान में घुस गया और वहॉ बैठ कर कौफ़ी और चिलम पीने लगा।

जब वह कौफ़ी पी कर उठा और पैसे देने के लिये गया तो उसने देखा कि उसका बटुआ तो उसके पास था ही नहीं। वह कहीं खो गया था। उसने कौफ़ी की दूकान के मालिक को अपनी समस्या बतायी और इस आशा में कब्रिस्तान लौट गया कि शायद उसको अपना बटुआ वहॉ मिल जाये।

वहॉ उसकी खोज बेकार रही। वह निराश हो कर फिर से कौफ़ी की दूकान के मालिक के पास गया तो उसने उसे बताया कि बाजार में फलॉ आदमी उसका बटुआ ढूँढने में उसकी सहायता कर सकता है।

सो वह उस आदमी की खोज में चल दिया। आदमी के मिल जाने के बाद बादशाह ने उसे अपनी समस्या बतायी।

आदमी ने उससे पूछा कि उसका बटुआ कैसा था। बादशाह बोला — "नीला और काला।"

उस आदमी ने एक आलमारी खोली और उसे वैसा ही एक बटुआ दिखा कर पूछा "क्या यही आपका बटुआ है?"

बादशाह बोला — "हॉ यही मेरा बटुआ है।" उसे आश्चर्य तो इस बात का था कि उसका बटुआ इस आदमी के पास किस आश्चर्यजनक तरीके से आया। खैर वह अपना पैसा पा कर बहुत खुश हुआ। क्योंकि उसको वह शहर अच्छा लगा सो उसने कुछ समय के लिये वहीं रहने का निश्चय किया।

कुछ दिन बाद वह फिर से उसी कौफ़ी की दूकान पर गया और उसके मालिक से कहा कि वह शादी करना चाहता था। क्या वह कोई लड़की उसके लिये बता सकता था।

कावेदजी बोला — "आपको कैसी लड़की चाहिये – कुँआरी या विधवा।"

बादशाह बोला — "कैसी भी हो। इससे मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता बस वह ईमानदार और समाज में इज़्ज़तदार होनी चाहिये।"

यह सुन कर कावेदजी ने उसे फिर से बाजार भेजा जहॉ उसे एक आदमी मिलेगा जो उसके लिये उसकी इच्छानुसार लड़की ढूँढने में सहायता करेगा।

मुहम्मद ने उस आदमी को ढूँढा और उसे अपनी इच्छा बतायी तो उसने उसे तुरन्त ही एक पता बताया जहॉ एक विधवा रहती थी जो बिल्कुल उसकी इच्छा के अनुसार थी। उसके बाद उसने एक पत्र लिखा जो उसने मुहम्मद को दिया जिसे वह एक इमाम[41] के पास ले जाता और जो उसका उस स्त्री से परिचय करवा देता।

इमाम ने वह पत्र पढ़ा और बोला — "यह मामला तो आसानी से तय किया जा सकता है अगर आप अल्लाह के तरीकों में बीच में न पड़ें नहीं तो फिर आप एक भटके हुए आदमी हैं।"

मुहम्मद ने हॉ में अपना सिर झुकाया। स्त्री का बादशाह से परिचय कराया गया और दोनों की शादी हो गयी। उसके नाद वे स्त्री के घर चले गये।

अगले दिन स्त्री ने अपने पति को 100 सोने की मुहरें दीं और उससे कहा कि वह जा कर उस पैसे से कोई दूकान खोल ले। पर ध्यान रखे कि सारी चीज़ें उनके खरीद के दाम पर ही बेचे।

[41] A kind of Pandit in Muslims

अपनी पत्नी की सलाह पर मुहम्मद ने उस पैसे से बाजार में एक दूकान खोली जिसमें उसने अपना सारा सामान उसी दाम पर बेचा जिस पर उसने उसे खरीदा था। वह अपना व्यापार इसी नियम के साथ रोज ब रोज हफ्ते से हफ्ता और सालों साल करता रहा।

एक दिन उसका सारा सामान खत्म हो गया और उसके पास और सामान खरीदने के लिये कोई पैसा नहीं बचा। उसने दुखी हो कर अपनी पत्नी से पूछा कि अब क्या किया जाये तो स्त्री ने एक आलमारी खोली और उसमें से 100 सोने की मुहरें निकाल कर उसे दीं और कहा — "ये लो और 100 सोने की मुहरें और इनसे भी पहले की तरह ही व्यापार करो।"

इस बार मुहम्मद बोला — "लेकिन प्रिये। इस तरह के व्यापार का मतलब क्या है। यह तो कोई व्यापार न हुआ। तुम्हारे पहले वाले 100 सोने की मुहरों से मैंने बिना किसी फायदे के व्यापार किया और सारा पैसा खो दिया।

अब तुम मुझे फिर से 100 सोने की मुहरें दे रही हो और उसी तरह से व्यापार करने के लिये कह रही हो। यह कैसे सम्भव है क्योंकि इस तरीके से व्यापार करने से तो हमारा यह सारा पैसा भी चला जायेगा।"

स्त्री बोली — "यह अल्लाह का मामला है हमें इसके बीच में नहीं पड़ना चाहिये।"

पर मुहम्मद ने तय कर रखा था कि वह इस मामले की तह तक पहुॅच कर ही रहेगा। उसने अपनी पत्नी को शान्ति से नहीं रहने दिया तो उसने खिड़की खोली और चिल्लायी — "ओ पड़ोसियों। मेरी सहायता करो। मेरा पति अल्लाह के मामलों में बीच में पड़ रहा है। कोई मेरी सहायता करो।"

तुरन्त ही बड़े ज़ोर का शोर मचा। सारे पड़ोसी अपनी अपनी डंडियॉ ले कर वहॉ भागे भागे आये जिससे वे मुहम्मद को पीटने लगे। यह देख कर मुहम्मद अपनी जान बचा कर शहर से बाहर भाग गया।

जब वह भाग रहा था तो एक बड़ी चिड़िया फिर से आयी और उसे उठा कर ले गयी और उसे वही खड़ा कर दिया जहॉ से उसे उसने कई साल पहले उठाया था – सीढ़ियों के पास।

उसने देखा कि उसकी मोमबत्ती अभी भी वहीं रखी हुई थी जहॉ उसने उसे रखी थी। किसी और चीज़ को भी किसी ने छुआ तक नहीं था सब वैसा का वैसा ही था जैसा कि वह वहॉ छोड़ कर गया था। उसने किताब उठायी जो उसके हाथ से जब छूट गयी थी जब चिड़िया ने उसे उठाया था और उसे होजा के पास ले गया।

होजा बोला — "अरे आपको तो बहुत देर हो गयी आप कहॉ रह गये थे?"

तब बादशाह ने अपनी कहानी होजा को सुनायी। होजा बोला — "अब आपको पता चला कि ज्योतिष विज्ञान क्या होता है।"

अब बादशाह ने होजा की बात पर ध्यान दिया उसका हाथ चूमा और फिर मेहनत से लिखना पढ़ना सीखने में मन लगाने लगा।

44 रंग रंगीले[42]

हम तीन भाई थे। हममें से दो तो बेवकूफ थे और तीसरे को कोई तमीज़ नहीं थी। एक दिन हम धनुष बनाने वाले के पास गये और उससे तीन धनुष खरीदे। उनमें से दो तो टूटे हुए थे और तीसरे की डोरी ही नहीं थी।

एक सूखे नाले में तीन बतखें तैर रही थीं जिनमें दो तो मरी हुई थीं और तीसरी में जीवन का कोई निशान ही नहीं था। हमने उसमें से एक को एक तीर से मारा और उसको हाथ में ले कर पहाड़ पर चढ़ते हुए फिर घाटी में उतरते हुए कौफ़ी पीते हुए तम्बाकू पीते हुए ट्यूलिप और हायसिन्थ के फूल चुनते हुए हम जौ की एक बाली जितनी दूर चले।

हम चलते रहे चलते रहे और फिर तीन घरों के पास आये जिनमें से दो घर तो खंडहर पड़े थे और तीसरे की नींव ही नहीं थी। वहॉ तीन आदमी पड़े हुए थे जिनमें दो तो मरे हुए थे और तीसरे में जीवन ही नहीं था।

हमने मरे हुए आदमियों से अपनी बतख पकाने के लिये एक बर्तन मॉगा तो उन्होंने हमें तीन आलमारियॉ दिखायीं जिनमें से दो तो टूटी हुई थीं और तीसरी में किवाड़ ही नहीं थे।

[42] Kunterbunt. Tale No 44

उनमें हमें तीन थालियॉ दिखायी दीं जिनमें से दो में सारे में छेद थे जबकि तीसरे की तली ही नहीं थी। तीसरी थाली में जिसकी तली नहीं थी उसमें हमने अपनी बतख पकायी।

हममें से एक बोला "मैंने काफी खा लिया।" दूसरा बोला "मुझे भूख नहीं है।" और मैंने कहा "बस और नहीं धन्यवाद।"

जिसने यह कहा था कि "मैंने काफी खा लिया।" उसने तो पूरी बतख ही खा ली थी। जिसने कहा था "मुझे भूख नहीं है।" उसने उसकी हड्डियॉ खायी थीं। मैं इस बात पर गुस्सा हो गया और तरबूज के खेत की ओर भाग गया।

मैं अपनी कमर की पेटी से एक चाकू निकाला और उससे एक तरबूज काटा। जहॉ मेरा चाकू था वहॉ मैं था। तभी मुझे एक कारवॉ जाता हुआ दिखायी दिया तो मैने उनसे पूछा कि मेरा चाकू कहॉ है। वे बोले — "चालीस साल से हम अपने खोये हुए **12** ऊँटों को ढूँढ रहे हैं। जब हम उन्हें नहीं ढूँढ सके तो तुम कैसे सोच सकते हो कि हम तुम्हारा चाकू ढूँढ देंगे।"

यह सुन कर मैं गुस्से में भर कर वहॉ से चला गया और एक पेड़ के पास आया जिसके पास एक टोकरी रखी हुई उसमें एक कत्ल किया गया आदमी रखा हुआ था।

जब मैं उसे देख रहा था तभी मैंने देखा कि **40** चोर मेरी ओर चले आ रहे हैं। सो मैं वहॉ से जल्दी से भाग निकला और वे मेरे पीछे पीछे।

भागते भागते जब तक मैं थक नहीं गया तो देखा कि मैं एक टूटे फूटे जामी के पास पहुँच गया हूँ। मैं उसके ऑगन में जा कर सुस्ताने के लिये बैठ गया। चोर मेरा पीछा करते करते आये और मुझे ऑगन में चारों ओर घुमाते रहे।

अन्त में निराश हो कर मैंने उनसे मैं उसकी मीनार पर चढ़ गया। उनमें से एक चोर ने अपना चाकू निकाला और मेरी ओर बढ़ा। मेरे गले से एक चीख निकली मेरी पकड़ छूट गयी और मैं मीनार से नीचे गिर पड़ा।

डर के मारे अचानक मेरी ऑख खुल गयी तो मैंने पाया कि मैं तो सपना देख रहा था।

Books on Turkish Folktales

Kunos, Ignacs
Turkish Fairy Tales and Folktales. Translated from the Hungarian version by R Nisbet Bain (in 1896). London : AH Bullen. 1901.
https://www.gutenberg.org/files/64807/64807-h/64807-h.htm

Kunos, Ignacz
Forty-four Turkish Fairy Tales. London : George Harper. Undated.
https://ia800702.us.archive.org/3/items/fortyfourturkish001862/fortyfourturkish001862.pdf

List of Forty-Four Turkish Fairy Tales

Part 1

1. The Creation
2. The Brother And Sister
3, Fear
4. The Three Orange Peris
5. The Rosebeauty
6. The Silent Princess
7. Kara Mustafa the Hero
8. The Wizard Dervish
9. The Fish-Peri
10. The Horse-dew And the Witch
11. The Simpleton
12. The Magic Turban, the Magic Whip And the Magic Carpet
13. Mahomet, The Bald-head
14. The Storm Fiend
15. The Laughing Apple And The Weeping Apple
16. The Crowperi
17. The Forty Princes and the Seven-headed Dragon
18. Kamertaj, The Moonhorse
19. The Bird of Sorrow
20. The Enchanted Pomegranete Branch And the Beauty
21. The Magic Hair-pins

Part 2

22. Patience-stone And Patience-knife
23. The Dragon-prince and the Stepmother
24. The Magic Mirror
25. The Imp of the Well
26. The Soothsayer
27. The Daughter of The Padishah of Kandahar
28. Shah Meram and Sultan Sade
29. The Wizard And His Pupil
30. The Padishah of The Thirty Peris
31. The Deceiver And The Thief
32. The Snakeperi and The Magic Mirror
33. Little Hyacinth's Kiosk
34. Prince Ahmed
35. The Liver

36. The Fortune Teller
37. Sister and Brother
38. Shah Jussuf
39. The Black Dragon And the Red Dragon
40. Madjun
41. The Forlorn Princess
42. The Beautiful Helwa Maiden
43. Astrology
44. Kunterbunt

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2023

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्ऩ। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. 1903.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2023

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2023